सकारात्मक पुष्टि स्पंदन - पुष्टि सृष्टि

VIBRANT PUSHTI

“ जय श्री कृष्ण “

" इमान " इमान का अर्थ सर्वोत्तम है

" इमान " है जो स्वतंत्र है

" इमान " है जो स्वायत्त है

" इमान " है जो सुनिश्चित है

" इमान " है जो सत्य है

" इमान " है जो अभिन्न हैं

" इमान " है जो निडर है

" इमान " है जो सार्थक है

" इमान " है जो परमार्थ है

" इमान " है जो स्व प्रमाण है

" इमान " है जो विश्वास है

" इमान " है जौ धर्म है

" इमान " है जो दर्शक है

" इमान " है जो अनन्य है

" इमान " है जो पवित्र है

" इमान " है जो निर्मल है

" इमान " है जो आनंद है

" इमान " है जो नि:आश्रय है

" इमान " है जो मूलाधार है

" इमान " है जो सर्वोच्च है

" इमान " है जो निष्कलंक है

" इमान " है जो वफादार हैं

" इमान " है जो एक वचनिय है

" इमान " है जो शुद्ध है

" इमान " है जो स्थिर है

" इमान " है जो नि:संशय है

" इमान " है जो अध्ययनी है

" इमान " है जो स्वाध्यायी है

" इमान " है जो नि: संदेह है

" इमान " है जो नि:हंकारी है

" इमान " है जो संस्कारी है

" इमान " है जो निर्मोही है

है स्व व्यक्तित्व मुझे चाहे कैसे भी युग - परिस्थिति - संजोग या काल में रख दें 🙏 मैं अपना इमान में अडग रहूं ऐसा आत्म ख़मीर मुझमें शिक्षित और दिक्षित करना 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक भक्त हररोज श्री प्रभु का दर्शन करने और श्री प्रभु के साथ कोई भी बातचीत करता रहता - गुनगुनाता रहता।
एक बार उनमें जिज्ञासा जागी और श्री प्रभु को कहने लगा - हे प्रभु! आप युगों से खड़े ही रहते हो - ऐसा क्यूं? 🙏
श्रीप्रभु ने मुस्कुराते रहे 😌
श्रीप्रभु! हम कहीं दशकों तक रहते है पर हम आप जैसे खड़े नहीं रह सकते और आप खड़े ही रहते हो 🙏
यह संज्ञा आपकी समझाइए 🙏
श्रीप्रभु मौन रहे 😳
वह भक्त सोचते ही रहा और संकल्प लिया कि 'यह घड़ी से मैं सदा खड़ा ही रहूंगा' 🙏 और वह जो भी क्रिया करता खड़े खड़े।
ऐसी एक दिन पूरा हुआ, दूसरे दिन सुबह वह दर्शन करने गया - खड़े खड़े दर्शन करता रहा और श्रीप्रभु का चहरा तकता रहा। श्रीप्रभु भी मौन 😳
दूसरे दिन की दूपेर में वह भक्त लड़खड़ाने लगा, धीरे धीरे वह क्षीण होता गया, पर वह सतत श्रीप्रभु के स्मरण में रहता था। शाम होने की तैयारी थी और वह शयन आरती दर्शन को श्रीप्रभु द्वार पहुंचा और वहीं ही गीर गया। हवेली में सब इकठ्ठे हो गए, सब उन्हें सहायता देने लगे।
यही समूह में श्रीप्रभु भी वेश धारण कर श्री प्रभु भी उन्हें सहारा देने लगा, जैसे श्रीप्रभु के अंग का स्पर्श उन्हें लगा तो वह हिम्मतवान और स्फूर्तिला हो गया। वह खड़ा हो कर श्रीप्रभु के दर्शन करने लगा, आज श्रीप्रभु का मुखड़ा सुंदर हास्य से छलकाता था। उन्होंने श्रीप्रभु को कहा - हे प्रभु! आज मैं आपके द्वार लड़खड़ा गया था पर कोई सहारा का ऐसा स्पर्श हुआ की मैं ताकतवर हो गया। हे प्रभु! मेरी समझ नहीं आता कि किसका स्पर्श था जो मैं स्वस्थ हो गया।
श्रीप्रभु हंसते रहे - हंसते रहे।
भक्त श्रीप्रभु को कहने लगा - हे प्रभु! पता नहीं पर मैं हिम्मत हार गया हूं 🙏
आप खड़े ही - खड़े रहते हो - क्यूंकि आप समर्थ हो, आप शक्तिवान हो - हम आपके आधारित है।
जैसे यह व्याक्य पूरा हुआ - तुरंत श्रीप्रभु अटहास्य करके श्रीप्रभु वह भक्त सामने खड़े हो गए, वह भक्त ने चरण स्पर्श किया और श्रीप्रभु के चरणों सेवा करने लगा। 🙏
श्रीप्रभु ने उनके सर पर हाथ रख कर उन्हें उठाया और गले लगाया 😌
जैसे वह स्पर्श हुआ तुरंत उन्हें वह स्पर्श की अनुभूति हुई - मन में सोचने लगा - अरे यह तो ऐसा ही स्पर्श है जब मैं लड़खड़ाते उठा एक नये उर्जा के साथ, उनके नैनों में से अश्रु धारा बहने लगी 😭 अरे! मेरे लिए श्रीप्रभु ने कष्ट उठाया! वह अचंभित और विस्मय रह गया।
श्रीप्रभु ने फिर से उन्हें उठाया और कहा - हे भक्त वत्सल! मैंने कोई कष्ट नहीं उठाया - मैंने कोई तुझे सहारा दिया है, यह सेवा तो तुम सब मिलकर मुझे हररोज इस तरह उठाते हो।
भक्त सोच में पड़ गया - अरे हम हररोज इस तरह श्री प्रभु को उठाते हैं! कैसे? हम सब तो दर्शन करके चले जाते है, कब श्री प्रभु को उठाया?
कैसी यह विडंबना! मैं कुछ समझ ही नहीं पाया।
श्रीप्रभु ने उन्हें उठाया और धैर्य से कहा - हे भक्त! तु मेरा प्रिय भक्त है, तेरा और यहां सब आते हर दर्शनार्थी की सेवा से मैं खड़ा रहता हूं बाकी मैं भी कहीं बार लड़खड़ा जाता हूं पर आप सभी मुझे संभाल लेते हो इसलिए ही सदा खड़ा रहता हूं। 🙏
आप सभी की तपश्चर्या का साक्षात्कार है।
ओहहहह! अदभुत 🙏 अनोखा और सत्य सैद्धांतिक 🙏
श्री अपने स्थान पर खड़े हो गए और सारे भक्तजनों आनंद अनुभूति से चले गए। 🙏 मैं भी श्रीप्रभु को बार-बार नमन करके - दंडवत प्रणाम करके हर्षोल्लास से चल पड़ा। 😊
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" पुष्टि मार्गिय सेवा प्रयोग "

श्री वल्लभाचार्यजी अपनी परिक्रमा में जो जो जीव उनके स्पर्श में आएं वह जीव को " ब्रह्म संबंध दिक्षा और पुष्टि मार्ग सैद्धांतिक शिक्षा मंत्र से दिक्षित कर उन्हें गृह सेवा सकारात्मक स्पंदन पुष्टि जीवन निधि शैली से जीवन निर्वाह करना " ऐसी आज्ञा करके आगे बढ़ते थे। ऐसी निधि से कहीं जीव उत्तरोत्तर अपना विश्वास, विकास और श्वासोच्छवास को विशुद्ध और पवित्रता की अनुभूति करते।

ऐसी अनुभूति से अनेकों अनेक जीव उनकी ओर आकर्षित होते और साथ साथ जो जीव को ब्रह्म संबंध दिक्षा से दिक्षित किया ऐसी निधि से सैद्धांतिक सत्य और भक्ति संस्कार से सिंचित करते। धीरे धीरे समाज के कहीं प्रकारों के जीवों यह जीवन शैली अपनाने लगे और स्व को योग्य आनंदित विश्वास विकास पाने लगे।

आज भी यही सकारात्मक स्पंदन पुष्टि निधि जीवन शैली जो जो जीव ने अपनाईं है उन्हें श्री वल्लभाचार्यजी के सानिध्य की अनुभूति होती है और जब भी वह जीव श्री वल्लभाचार्यजी के चित्र जी या विग्रह को दर्शन सेवा स्पर्श पाता है वह स्वयं श्री वल्लभाचार्यजी की पुष्टि संस्कार अनुभूति पाता है और स्व को विशुद्ध पवित्रता से सार्थक करता है।

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

વિચારીને કહું છું 🙏

વરસાદ આવી ગયો

વડોદરા તણાઈ ગયું

એક એક વડોદરા વાસી

વિશ્વાસ વિહીન થઇ ગયા

એક એક રહેવાસી

નેતાઓ થી દૂર થઇ ગયા

ન વિશ્વામિત્રી ને સમજી

ન અધિકારીઓને સમજ્યા

રોડ કામ લુટો લુટો

આકારણી કામ લુટો લુટો

દસ્તાવેજ કામ લુટો લુટો

સેવા કામગીરી લુટો લુટો

એક પ્રમાણિક અનેકો ભ્રષ્ટાચારી

કોર્પોરેટર રોડ પતિ થી કરોડપતિ

ધારાસભ્ય સ્કીમો થી અબજોપતિ

સંસદસભ્ય અવિશ્વાસ થી માલોતુજાર

ન હતા જીવવાના ઠેકાણા

આજે સર્વત્ર તે જ તેની મિલકત

જે ભારતીય જનતા પાર્ટી છે

એક એક વ્યવહાર ભ્રષ્ટાચાર

એક એક સંગત દૂરાચાર

કોઈ ડોક્ટર કોઈ એન્જિનિયર

કોઈ બિલ્ડર કોઈ લુખ્ખેદાર

અંધેરી નગરી ગંડુ રાજા

ઠેર ઠેર વિશ્વાસ નો અનાદર

બધા કરે તો હૂં નાં કરું

આ જ મૂલ સંસ્કાર

નેતા નેતા બાંટો બાંટો

તું લે તો હું કેમ રહું?

વેરો ભરે કોઈ

પેન્શન લુટે હર કોઈ!

આજે આપણે લુટીએ

કાલે આપણો વંશ લુટશે

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

यह अधिक बरसती बूंदें

क्या मेरे मन की नापाक इरादों की जुबान है!

यह अधिक बरसती बूंदें

क्या मेरे भ्रष्टाचारी कर्मों की कहानी है!

यह अधिक बरसती बूंदें

क्या मेरे दूराचारी रीति की निशानी है!

यह अधिक बरसती बूंदें

क्या मेरे समाजसेवी लुटो की गवाही है!

यह अधिक बरसती बूंदें

क्या मेरे वचनों की नहीं निभाने ठुकाई है!

यह अधिक बरसती बूंदें

क्या मेरे पास आई दास्तानों की दुहाई है!

यह अधिक बरसती बूंदें

क्या मेरे झूठे वादों की भरपाई है!

यह अधिक बरसती बूंदें

क्या उन निर्दोषों को फंसाने की सुनाई है!

यह अधिक बरसती बूंदें

क्या उन निराधारो के निसासा की अश्रु धारा है!

यह अधिक बरसती बूंदें

मेरे अपराधों की सज़ा फ़रमाई है!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" गणेश चतुर्थी " हम सब विदित है आज हमारे गृह - " श्री गणेश पधारे " 🙏

हमारे घर " श्री गणेश " इस लिए पधराते है

१. हम अवश्य इतने विवेकी है जिससे हर व्यक्ति सम्मानित रहे 🙏

२. हम अपने आपको इतने शिक्षित है जिससे हर व्यक्ति नियमबद्ध रहे 🙏

३. हमने अपने आपको इतने सामर्थ्यवान बनाया है जिससे हर व्यक्ति समर्थ हो 🙏

४. हम इतने कुशल है कि जिवन मे कभी कोई विघ्न आएं

५. हमने इतनी कुशाग्रता से जीवनशैली घडी है जिससे हर विषमता नष्ट हो 🙏

६. आनंद आनंद आनंद सर्वत्र आनंद - जहां जहां देखें - " श्री गणेश - जय गणेश " अर्थात हर व्यक्ति सुखी समृद्ध और संस्कारमय 🙏

न दारु न शराब, न अधुरा न भरमार, न जुगार न वैर, न अजंपा न अवैध।

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

आज पधारे श्री गणेश विवेका

आज पधारे श्री गणेश विधाता

आज पधारे श्री गणेश संकटमोचना

आज पधारे श्री गणेश सुख संपदा

आज पधारे श्री गणेश बुद्धि मना

आज पधारे श्री गणेश आनंद उमंगना

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" श्री गणेश पधराई " की शुभकामनाएं

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे गणेश! आप तो विवेकाचार्य हो 🙏

आप हमें ऐसा विवेक संस्कार सिंचन करे कि हम सत्य की ओर चले 🙏

कलयुग कलयुग कहते कहते हम सब एक ऐसी मानसिकता में डूबे जा रहे है जिससे हमारा आत्मा का सूरज डूबता जा रहा है 🙏 आज हर जीव एक घड़ी भी चैन से रह नहीं पाती है 🙏

हमारा मन तो पैसा

हमारा तन तो मिलकत

हमारा धन तो अंधा

हमारा जीवन तो खंधा

जो भी - जहां भी - जैसे भी - वैसे भी

केवल पैसा - मिलकत - अंधा - खंधा

आप हमारे यहां बिराजे है तो अवश्य हमें ऐसा विवेक संस्कार सिंचन करना की हम

पैसा के बदले योग्यता का आचरण करे 🙏

मिलकत के बदले स्व शिक्षण - रक्षण - लक्षण का धर्मत्व हो 🙏

अंधा के बदले तेजोमय निरपेक्ष - निस्वार्थ - नि:संशय और कुशल धन प्राप्त हो 🙏

खंधा के बदले वात्सल्य - भाईचारा - सेवाभावी आयोग हो 🙏

पता नहीं क्यूं किसीका लेते - लुटते - डराते - भरमाते रहते है?

निड़र - स्वछंद - प्रमाणिक और विश्वासमय जीवनशैली क्यूं नहीं घटती है!

आप श्री गणेश! जो गणों के पति आप अवश्य हमें योग्यता पाठवे 🙏

जय श्री गणेश 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे नेता! आप

कातर की चोरी करे

करे सूई का दान

उपर चढकर देखा करें

क्यूं न आया स्वर्ग से विमान

🌷🙏🌷

आप चाहें कितना लुट लो हमें

एक हाय लगेगी जब आत्म की

खांक हो जाएगी तुम्हारी रैन

🌷🙏🌷

नहीं समझना हमें बुजदिल

नहीं समझना हमें मूर्ख

नहीं समझाना हमें बेवकूफी

एक हाय तीर ऐसी लगेगी

खांक हो जाएगी सारी जीवनाई

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

" गणेश " गण + इश = गणेश

गण अर्थात गण जो चोक्कस जवाबदारी को शिस्तबद्ध नियमित कार्य करे वह समूह को चोक्कस गण कहते है।

हमारे ब्रह्मांड में ऐसे अनेकों प्रकार के शिस्तबद्ध गणों के समूह अपना नियमित संचालन करते रहते है 🙏

यह सभी गणों के मुख्य नायक को गणनायक, मुख्य पति को - गणपति और गणइश को गणेश कहते है।

गणनायक - गणपति - गणेश उनके हाथों में नियमित संचालन की न्यायिक दोर होती है - जो पूरे ब्रह्मांड को सर्वोत्तम सत्य आधारित संचालन करना है।

यह १० दिन जो हमारे घर पधारते है उनसे हमें यही शिक्षा पानी है की हमारा कौटुंबिक जीवन प्रेम और शिस्त संचालित हो जिससे सदा रिद्धि सिद्धि हमारे जीवन में बनी रहे 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राधा "
हर स्त्री स्वरूप मन भाए
हर स्त्री स्वरूप मन बसे
हर स्त्री स्वरूप मन चाहे
बस! यही है " राधा " स्मरण
हर स्त्री स्वरूप नैन कहे
हर स्त्री स्वरूप नैन झूके
हर स्त्री स्वरूप नैन तरसे
बस यही है " राधा " तरुण
हर स्त्री स्वरूप अधर पुकारें
हर स्त्री स्वरूप अधर थरथरे
हर स्त्री स्वरूप अधर चुंबने
बस! यही है " राधा " धरणे
हर स्त्री स्वरूप हृदय बिराजे
हर स्त्री स्वरूप हृदय श्रृंगारे
हर स्त्री स्वरूप हृदय आनंदे
बस! यही है " राधा " वरणे
हर स्त्री स्वरूप आत्मा एकात्मे
हर स्त्री स्वरूप आत्मा आकर्षे
हर स्त्री स्वरूप आत्मा पवित्रे
बस! यही है " राधा " सांवरे
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
कितना मधुर चरित्र
जो हर दिल को भाए
जो हर दिल को लुभाए
जो हर दिल को तड़पाए
" राधा " परमात्मा सर्वात्मा शरणात्मा अखंडात्मना:
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

“राधा"

स्मरण से

नैन मन तन धन जीवन और आत्मा मिलन हो जाएं

स्वर से

अक्षर सूर संगीत सरगम गूंज और पुकार तरंग हो जाएं

लिख से

र कार आकार निराकार एकाकार आधार साकार हो जाएं

स्पर्श से

स्पंदन दर्शन वंदन मगन कुंदन और प्रेम वरण हो जाएं

"राधा" आनंद मेरा प्राण मेरा विरह मेरा करण मेरा और शरण मेरा 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हां! मन
मन को पवित्र
मन को शुद्ध
मन को स्थिर
कौन रख्खे!
जो भक्त हो
जो प्रियतम हो
जो प्रेमी हो
वही ही मन को स्थिर रख्खे। 🙏
नंददास - कितने अनोखे अष्टसखा 👍
मीराबाई - कितनी अनोखी प्रेम अनन्यता! 👍
भीष्म - कितना अनोखा योद्धा 🙏
जो प्रेम से श्री कृष्ण को वचन तुड़ाया 🙏
वृंदावन जाउंगी सखी मैं तो उनकी हो जाउंगी
मेरा श्याम! मेरा गोविंद! मेरा गोपाल! मेरा गिरिधर!
वृंदावन मेरे मन को स्थिर करने
वृंदावन मेरे मन को लुटाने
वृंदावन मेरे मन को समझाने
वृंदावन मेरे मन को समर्पण ने
सखी मैं तो वृंदावन जाउंगी 🙏
अपना घर वृंदावन
अपना घर गोकुल
अपना घर गोवर्धन
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" श्री गणेश " विसर्जन

श्री - जीवन की योग्यता

श्री - जीवन की सत्यता

श्री - जीवन की उपयोगिता

श्री - जीवन की सार्थकता

श्री - जीवन की विद्यता

श्री - जीवन की उदेश्यता

श्री - जीवन की विशिष्टता

गणेश - गणों के ईश

जिन्होंने हमें १० दिन में सीखाया, ज्ञाता, विद्यता, जताया की जीवन कैसे जीना है!

१० दिन के बाद विसर्जन

तो श्री गणेश दस दिन हमारे घर - आंगन में रहे

तो हमें हर घड़ी, हर तास, हर दिन, हर माह और हर वर्ष हमें कैसे जीना -

१. साथ साथ

२. सेवा सेवा

३. उत्सव उत्सव

४. मनोरथ मनोरथ

५. समर्पण समर्पण

६. शरण शरण

जो ' श्री गणेश " ने समझाया

दस दिन के बाद विसर्जन

विसर्जन निश्चित है - इसलिए हर घड़ी, समय, काल, वर्ष, देश में कर्म से हमें सफलता पानी है

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

जीव जीवन जीना और मोक्ष

परिवर्तन

जीव जीवन जीना और मोक्ष

बार बार - बार बार

यही चक्र से मुक्ति - नहीं नहीं - नहीं नहीं

यह तो जीव की परिक्रमा है

चाहे वह बुद्ध हो - चाहे वह अवतार हो

चाहे वह राम हो - चाहे वह आचार्य हो

यह घटमाळ चक्र से कोई भी मुक्त नहीं हो सकता है - यही यह ब्रह्मांड की सत्यता है। 🙏

बुद्ध - बार बार होना है

अवतार - बार बार लेना है

राम - बार बार धरना है

आचार्य - बार बार जगाना है

पितृओ का यही मूल स्वरूप है

हमसे मिले - हमसे जुड़ें

हमसे एकात्म हुए - हमसे परमात्मा हुए

फिर गति - फिर चक्र - फिर परिवर्तन 🙏

इसलिए तो सूर्य है

इसलिए तो चंद्र है

इसलिए तो ग्रहों है

इसलिए तो नक्षत्रों है

इसलिए तो ओरा है

इसलिए तो युग है 🌷🙏🌷

हे जीव! हे आत्मा! अवश्य हमें अपने आपको इतना सुद्रढ - सुनिश्चित - सुशील - सुशिक्षित - सुसंस्कृत होना है जिससे हम सदा आनंद लुटते और लुटाते चले 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

विक्रम भाई एक स्नातक और साथ साथ एक उच्च स्तरीय बेंक एक्जीक्यूटिव थे। जैसे जैसे समय बीतता गया उनका रिटायरमेंट का दिन आ गया और वह अब घर बैठे अपने जीवन की पूंजी को संवारते संभालते अपना संकल्प आधारित जीवन बीताने लगे।

१. अपनी नित्य क्रिया के बाद हवेली दर्शन जाना

२. मित्र मंडल के साथ अपना अनुभव और ज्ञान भक्ति का विचार विमर्श करना

३. गौ सेवा, शिक्षण सेवा, समाज सेवा आदि में अपनी सुबह की क्रिया में मस्त रह कर - आनंद लुटा कर खुश खुश होते।

४. पुष्टि मार्गिय गृह सेवा में अपने आपको डूबोना और धन्य धन्य की अनुभूति पा कर एक धर्मात्मा चरित्र जागृत करना।

५. दूपेर में अपने कहीं निकटतम मित्रों, कुटुंबी जनों को साथ सेवा मदद करना।

६. शाम को फिर शयन आरती दर्शन करके अपने गृह सेवा की सामग्री आदि निपट कर अपने आपको श्री प्रभु मय स्मरण में निरुपित करना।

धन्य धन्य एक वैष्णव के चरित्र आधारित अपने आपको समर्पित करते करते जीवन आनंद उमंग में भरते - करते - रहते बीताते थे।

एक दिन एक एक परिस्थिति उनके सामने खड़ी हो गई - उन्हें तेज बुखार आया और वह अपनी कोई भी नित्य कर्म कर नहीं पाते थे, जिससे वह बैचेन हो गएं - न दर्शन - न सेवा - न मित्रों से मिलना और न श्री प्रभु स्मरण में निरुपित होना।

बैचेन बैचेन और बैचेन - उनका मन सेवा के बिना विचलित रहता, वह दु:खी दु:खी हो गएं। दु:ख में उन्होंने श्री यमुनाजी का स्मरण किया - हे धात्री मां! मैं तेरे सहारे! तो ऐसा क्यूं?

बस! इतनी याचना से ही उनके बुखार भरें शरीर में एक नव चेतना जागी और वह खड़े हो गए, तुरंत स्नानादि करके श्री प्रभु सेवा में बैठ गए - जैसे जैसे सेवा का क्रम निपटता गया उनका बुखार नष्ट हो गया, वह बिलकुल स्वस्थ हो गए। वह तुरंत हवेली श्री प्रभु के दर्शन को निकल पड़े। आज उनमें एक अनोखी चेतना जागी थी, वह बहुत आनंदित हो कर सबको 'जय श्री कृष्ण 'करते करते आनंद लुटा रहे थे।

इतने में एक मित्र ने कहा - अरे विक्रम! आज तो तेरा मुखड़ा तेज़ भरा - तु आनंद उमंग भरा, क्या कुछ हाथ लग गया?

विक्रम ने कहा - हां दोस्त! आज मेरे घर श्री यमुना महाराणी पधारी और मुझे कहा - विक्रम! तेरी सेवा से मैं धन्य हूं - सदा अपने आपको एक पुष्टि सेवक में निरुपित रखना 🙏

यार! मैं तो अचंभित रह गया और मैं बस उनकी आज्ञा में अपने आपको डूबा रहा हूं, जितना डूबता हूं उतना ही आनंद उभरता रहता है।

विक्रम! तु सच में धन्य हो गया। मेरा 'जय श्री कृष्ण 'स्वीकार करना और वह मित्र चल पड़ा।

बस! हर घड़ी, हर पल विक्रम आनंद आनंद और आनंद में डूबे है।

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

'हरे राम हरे राम हरे कृष्ण हरे कृष्ण '

अनोखा मंत्र श्री व्रज भक्तों ने पुकारा है

" राम राम - कृष्ण कृष्ण "

राम को पुकारा - राम

राम से मुझमें स्थिरता आएं

राम से मुझमें अखंडता आए

राम से मुझमें शिस्तता आएं

राम से मुझमें विवेकता आएं

कृष्ण से मुझमें विशिष्टता आएं

कृष्ण से मुझमें विविधता आएं

कृष्ण से मुझमें आकर्षकता आएं

कृष्ण से मुझमें प्रेमता आएं

कितना अदभुत जीवन सिद्धांत है हमारी संस्कृति का

कितना अनोखा संसार सिद्धांत है हमारी धरोहर का

कितना अतूट बंधन सिद्धांत है हमारे सनातन धर्म का

कितनी पवित्र एकात्मिय सिद्धांत है हमारी आत्मीयता का

" हरे राम हरे राम हरे कृष्ण हरे कृष्ण "

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक बार श्री प्रभु अकेले बैठे थे, न कोई आस न कोई पास, बस यूं ही अकेले अकेले। उनके चहरे पर मधुर हंसी के साथ वह आनंद विभोर में बैठे थे।

एक मन में एक विचार जागा - इतनी अनोखी ब्रह्मांड की रचना, इतनी मधुर सृष्टि, इतनी समांतर प्रकृति और उतने ही समांतर जीव सृष्टि जो कर्म के सिद्धांत से संचालित होती रहे।

मंद मंद हंसते हंसते कुछ स्वर वह बोलने लगे - कितना अदभुत संसार, जगत और जीवन! जो आनंद की अनुभूति में सदा बहता रहे!

वह चुप हो गए। वह मौन हो गए। वह स्थिर हो गए।

वह अपने पुरुषार्थ में लीन हो गए।

मित्र!

कुछ तो अवश्य संकेत है - दिशा निर्देशक है - कर्म मार्ग सूचक है - धर्म धारण शिक्षा है - जीवन विकसित विशेषक है।

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ये तो कहो कौन हो तुम?

तेरी याद आते ही मेरा मन तुझे ढूंढने लगता है

तो बांसुरी राग छेड़ने लगती है

तेरा स्मरण आते ही मेरी धड़कन गाने लगती है

मेरी पायलिया छम छम नाचती है

तेरा ख्याल आते ही मेरा दिल थिरक थिरक रुकता है

मेरे नैना बारिश जैसी बरसती है

कौन हो तुम!

कदम की डाली झुलनें लगी

पारिजात फूल झरने लगे

श्री यमुना की धारा उछलने लगी

श्री व्रज की रज उमड़ने लगी

ये तो कहो कौन हो तुम!

कान्हा हो!

मोहन हो!

माधव हो!

गोविंद हो!

राधा हो!

राधे हो!

श्याम हो!

श्यामा हो!

कहो कहो कौन हो तुम!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" एपोईन्टमेन्ट " " Appointment "
हम बिलकुल सही और सटीक और अच्छी तरह से जानते है - समझते हैं यह शब्द को 👍
" एपोईन्टमेन्ट " " Appointment "
का अर्थ है - निश्चित मुलाकात - निश्चित स्थायी मुलाकात - वैध मुलाकात - चोक्कस मुलाकात।
हमें पता है - जानते है कि हमें किसने " एपोईन्टमेन्ट Appointment " दी है और हम यह भी जानते है कि हमने किसे " एपोईन्टमेन्ट Appointment " दी है।
निभाईं तो लाभ लाभ
गवाई तो नुकसान नुकसान
हां! हम हर प्रकार की रीति - नीति और भीति समझते है। 🙏
हमारे संस्कार और हमारी संस्कृति और हमारी परंपरा आधारित हमने यह " एपोईन्टमेन्ट Appointment " किस किसको और किस किसने दि है!
प्रथम - श्री माता-पिता को
दूजी - श्री गुर आचार्य को
तिसरी - पति-पत्नी को
चौथी - पुत्री-पुत्र को
पांचवीं - श्री प्रभु को
अंतर आत्मा से प्रमाणिकता से कहना 🙏
हम कौन-सी " एपोईन्टमेन्ट Appointment " निभाते हैं?
हम " एपोईन्टमेन्ट Appointment "
१. मित्र की
२. बिजनेस या धंधा या नौकरी की
३. स्वार्थ की
४. अपने विचारों के तालमेल की
५. हमारे अपेक्षा की
यह "एपोईन्टमेन्ट Appointment" न निभाएं तो हम बर्बाद, हम कहीं के नहीं, हम कुछ भी नहीं है 🙏
ओहहहह!
जो प्राथमिक "एपोईन्टमेन्ट Appointment " जो बताईं वह न निभाएं तो - हम योग्य - हम सही - हम उच्च - हम वचनीय - हम शिक्षित - हम संस्कारी 👍
हम कितने आज्ञाकिंत व्यक्ति है! 🙏
हम संसार के कितने प्रतिष्ठित है! 🙏
हम दुनिया के कितने विश्वनीय है! 🙏
हां! 🌷🙏🌷
इसलिए तो हम कलयुग में है 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक बहुत बड़ा व्यापारी को एक व्यक्ति को नौकरी देनी है - उनको सैलरी पर माह ३ करोड़ रुपए।

जो व्यक्ति को नौकरी मिलेगी उनकी जवाबदारी

१. उन्हें केवल विचार ही करना है और जो विचार आएं उन्हीं के मुताबिक उन्हें दूसरों से काम करवाना।

२. जो व्यक्ति यह विचार ही करने की नौकरी करें उन्हें वह विचार मुताबिक काम नहीं करना।

वह व्यक्ति सदा विचार ही करते रहे और बाकी को विचार नहीं करना पर जो विचार धरा उसके मुताबिक काम ही करना, केवल काम करना।

जो काम करे उन्हें १०००० पर माह सैलरी।

अगर किसीको यह नौकरी चाहिए तो उन्हें यह इ-मेल पर अपनी रिज्यूम - pankajshah666@gmail.com पर भेजें 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जीते जीते
कौन कौन आए!
रहते रहते
कौन कौन आए!
चलते चलते
कौन कौन आए!
बढ़ते बढ़ते
कौन कौन आए!
ठहरते ठहरते
कौन कौन आए!
मिलते मिलते
कौन कौन आए!
बिछड़ते बिछड़ते
कौन कौन आए!
संसार भी निराला
जगत भी निराला
रंग बिखराते
कौन कौन आए!
धर्म भी न्यारा
कर्म भी न्यारा
संग जुड़ते
कौन कौन आए!
कौन हो तुम?
मेरे दिल में यूं उतरते गए
मेरे मन में यूं बसते गए
मेरे तन से यूं लिपटते गए
बांसुरी की धून पर
व्रजरज की धूली पर
यमुना की तरंग पर
प्रीत रस लुटाते
श्याम प्रेम डूबोते
राधा विरह जताते
कौन हो तुम
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

હે જાગને માનવા! અહંકાર નાગ નાથવા

તુજ વિણ જગતમાં કોણ નાથશે?

ચારે બાજુ અંધકાર છે

અભિમાન થી તુ ચૂર છે

મન વિચાર બુદ્ધિ તુજ વિણ કોણ છે?

જીવ જીવન શિક્ષણ વિજ્ઞાન

સંસ્કાર વિદ્યા જ્ઞાન સિંચન

તુજ વિણ સમાજમાં કુણ સ્થાપશે?

પૈસા મિલકત ધન દૌલત

ગાડી બંગલા માન સન્માન

જન્મ મરણ માં કોણ લઈ જશે?

વાત્સલ્ય પ્રેમ પરિપૂર્ણ થી

સત્ય નિત્ય નિયમ થી

આનંદ ઉમંગ જગાવી તુજ જાશે 🙏

હે જાગને માનવા! અહંકાર નાગ નાથવા

તુજ વિણ જગતમાં કોણ નાથશે!

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

आत्मविश्वास आत्मश्रद्धा आत्मीय सत्य से चिंतन करना है 🙏

यह धरती पर - भूमि पर मंदिर - हवेली की प्रेमभक्ति लक्षणा आध्यात्मिक सत्यता का स्पर्श अति ऊंचा और परमात्मा से जुड़ा है। 🙏 भक्त और भगवान - शरणागत और समर्पणता - प्रेम और प्रेमास्पद का एकात्म मिलन की पुरुषार्थता, पवित्रता और पूर्णता है 🙏

मध्य प्रदेश के एक मंदिर या हवेली की भक्त और भगवान के मिलन चरित्रता एक मूलभूत पुष्टि सिद्धांत है 🙏

बांके बिहारी जी का मंदिर एक ऐसी मिसाल है जो भक्ति का अनोखा संगम है 🙏

एक भक्त विरहनी जिसके पास न कोई घर, न कोई धन, न कोई सगा-संबंधी थे। वह अकेली, भूली भटकी गांव में भीख मांगती अपना जीवन गुज़ारती थी और सदा बांके बिहारी जी के मंदिर के प्रांगण में पड़ी रहती। न कोई पहेरवैश का भान, न कोई शरीर का ध्यान। बस अपनी धुनमें मस्त रहती थी।

एक दिन की बात है, गांव में एक उत्सव था और सब गांव वालें सब उत्सवमें आनंद उमंग से मना रहे थे, यहां वह स्त्री अकेली अटूली हवेली के प्रांगणमें खानें और पानीके लिए तरसती झझुमती थी।🙏

क्रमशः

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं और मेरे माता-पिता 🌷🙏🌷

न इसमें पैसा है

न इसमें मिलकत है

न इसमें धन दौलत है

न इसमें नाम का उपयोग है

न इसमें सम्मान का योग है

बस!

इनमें है केवल वात्सल्य 🌷

इनमें है केवल परिचारिका 🌷

इनमें है केवल संस्कार 🌷

इसमें है केवल शिक्षा 🌷

इसमें है केवल विद्या 🌷

इसमें है केवल दिक्षा 🌷

इसमें है केवल प्रदक्षिणा 🌷

इसमें है केवल विश्वास 🌷

इसमें है केवल निर्भयता 🌷

इसमें है केवल साक्षरता 🌷

इसमें है केवल साथ - हाथ - नाथ 🌷🙏🌷

हे संसार प्रेमी! यही ही सत्य बंधन है जीवन का 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

प्रभु भोग पा लो🙏
प्रभु भोग पा लो 🙏
हे प्रभु भोग पा लो 🙏
सेवा में श्री प्रभु को भोग धराते है और विनंती करते है
प्रभु भोग पा लो 🙏
थोड़ी देर बाद भोग पधरा कर लें लिया
समझे की श्री ठाकोरजी ने आरोगो लिया 🙏
ऐसा ही होता है और करते है 🙏
नहीं! अगर भोग से एक रज भार भी नहीं पाया और समझे श्री ठाकोरजी ने पा लिया या आरोग लिया 🙏
ऐसा हम समझ सकते है - यह सत्य है?
हम तो केवल भाव करते है - श्री ठाकोरजी भाव के भूखें है - ऐसी सामग्री और मोह मलाई के नहीं!
ओहहहह!
जब हम पधराकर वापस लेते है और स्व आरोगते है तो वह मोह मलाई नहीं है!
नहीं वह तो अधरामृत है - श्री ठाकुरजी का झुठन है - श्री ठाकोरजी का प्रसाद है 🙏
अरे ठाकोरजी आरोगे तो!
ऐसा हो ही नहीं सकता!
श्री ठाकोरजी तो केवल लीला करते है!
श्री ठाकुरजी कभी नहीं आरोग सकते
हम कितने युगों और वर्षों से जानते है
श्री ठाकुरजी नहीं ही आरोगते 🙏
तो भी हम ऐसी क्रिया और भाव करते रहते है 🙏
शायद इसीलिए हम ऐसे जीवन जी रहे है 🙏
अगर श्री ठाकुरजी आरोगे तो हमारा जीवन अलग ही होता!
सोच ले!
सत्य क्या? सैद्धांतिक क्या?
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

जन्म जीवन जगत

मां

पिता

धर्म

जन्म - मां

जीवन - पिता

जगत - धर्म

जो जन्म दे वह मां

जो संस्कार दे मां

जो संस्कृति दे मां

जो सत्य आचरण दे मां

जो संयम दे मां

जो विश्वास दे मां

जो समय दे मां

जो क्षमा दे मां

जो वात्सल्य दे मां

जो शरण दे मां

जो भक्ति दे मां

जो संकेत दे मां

जो श्रद्धा दे मां

जो तृप्ति दे मां

जो शिस्त दे पिता

जो रक्षण दे पिता

जो पुरुषार्थ दे पिता

जो द्रष्टि दे पिता

जो दिशा दे पिता

जो निर्भयता दे पिता

जो निर्णय दे पिता

जो विद्या दे पिता

जो हिम्मत दे पिता

जो द्रढता दे पिता

जो अडगता दे पिता

जो निडरता दे पिता

जो योग्यता दे पिता

जो ज्ञान दे पिता

जो संकल्प दे पिता

जो जागृतता दे पिता

जो कुल दे पिता
जो स्वावलंबी दे पिता
जो निष्ठा दे पिता
जो अधिकार दे पिता
जो नाम दे पिता
जो धर्म दे पिता

जो परिस्थिति दे जगत
जो अंधश्रद्धा दे जगत
जो मान्यता दे जगत
जो व्यवहार दे जगत
जो व्यवस्था दे जगत
जो वर्णता दे जगत
जो परतंत्रता दे जगत
जो आशय दे जगत
जो बंधन दे जगत
जो अहम दे जगत
जो आचार विचार दे जगत
जो अभिमान दे जगत
जो अहंकार दे जगत
जो संशय दे जगत
जो निष्ठुरता दे जगत
जो कलंक दे जगत
जो असमंजस दे जगत
जो अतृप्ति दे जगत
जो कर्म दे जगत
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
ऐसे तो कहीं अर्थ है संसार का
हां! जो स्वयं पा गया तो परमात्मा 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नैनों में गोविंद मुख पर गोपाल

सदा रहे आचरण में पवित्राचार

संसार सत् सार सार जीवन प्रेम धार धार

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

चाहे कहीं से कितने भी दु:ख आएं

चाहे कहीं से कितने भी रोग आएं

चाहे कहीं से कितने भी विडंबना आएं

चाहे कहीं से कितने भी अज्ञान आएं

मुख से सदा गोविंद उठें

मन से सदा गोपाल रटें

तन से सदा मोहन वटें

जीवन से सदा श्याम उड़े

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

घड़ी घड़ी गोविंद गाने लगी

छड़ी छड़ी गोपाल छूने लगी

लड़ी लड़ी मोहन सुहने लगी

पली पली श्याम होने लगी

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हे गोविंद! हे गोपाल! हे मोहन! हे श्याम!

श्याम पीया मोरी रंग दे विरहैया

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

काहे को दुनिया बनाई!
आकाश है
सागर है
हवा है
सूरज है
पर धरती क्यूं!
धरती पर पर्वत
पर्वत से नदी
नदी से पैड पौधे
पैड पौधे से जंगल
जंगल से पक्षी
पक्षी से पशु
पशु से मानव
मानव से मनुष्य
क्यूं!
मनुष्य से क्या क्या!
ऐसा क्यूं!
हर एक
एक दूसरे को काटें मारे आरोगे और जीवन
क्यूं!
हे प्रभु! क्या तेरे मन में आईं
और तु बार बार अवतरे
पता नहीं क्यूं!
प्रेम - कैसे समझें!
काहे को दुनिया बनाई!
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्या लेबनान, गाजा, सिरिया, इरान, इजरायल, पेलेस्टाइन, युक्रेन, रशिया और कहीं देशों के वासी अपनी श्रद्धा और विश्वास से सत्य को स्वीकार करते ही है, जो धर्म धारण किया हो उनमें सत्य और सिद्धांत तो अपनाते ही है - भाव भक्ति और सेवा उपासना प्रार्थना करते ही है। उनके रक्षण के लिए अपनी हिंदू सनातन संस्कृति और धर्म आधारित उन्हें भी सत्य का मार्गदर्शन मिलता ही है तब तो वह सभी अपना जीवन सुख संपत्ति और वैभव भरा जीते ही है 🙏

हमारी मान्यता आधारित

१. जैसा कर्म वैसा फल

२. जैसे विचार ऐसा आचार

३. जैसी वृत्ति ऐसी स्थिति

४. जैसा व्यवहार ऐसा रिश्ता

बार बार हम दोहराते है 🙏

आज जहां भी नज़र - ऐसा अनाचार

आज जहां भी स्वर - ऐसी ही पुकार

आज जहां भी हस्तक्षेप - ऐसा ही विक्षेप

आज जहां भी संबंध - ऐसा ही बंधन

हम बार बार कहते रहते है - कलयुग, कलयुग, कलयुग

हमसे ही द्रष्टि बने हमसे ही सृष्टि

हमसे ही कर्म बने हमसे ही धर्म

हमसे ही सत्य बने हमसे ही असत्य

हमसे ही जगत बने हमसे ही अवतार

सच! हम कैसे है सदाचार! 🌷🙏🌷

हम इतने स्वार्थी - मैं, मैं और बस मैं

तो तो अवश्य नष्ट स्व से ही होना है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

" ગરબો "

માં નો ગરબો

હિન્દુ સંસ્કૃતિ નમન છે. 🙏

જીવ જીવન અને ધર્મ સંસ્કૃતિ ની અદભૂત મિશાલ છે આ - ગરબો 🙏

માં - માં ની વ્યાખ્યા કે અર્થ કે મહાત્મ્ય કે ઉચ્ચતા તો સહુ જાણે અને સમજે છે.

પણ " માં " ની યોગ્યતા - ઉત્તમતા અને પદાર્પણ થવું એ જાણવું અને સમજવું પરમોત્તમ શિક્ષા અને દીક્ષા છે - સંસ્કાર છે. 🙏

૩૬૫ દિવસ નાં વર્ષ માં - નવ નવ દિવસ નવરાત્રી એ આપણી ધર્મ ધારણ સંસ્કાર ની આરાધના છે - તપશ્ચર્યા છે - પ્રાર્થના છે. 🙏

" માં " સંસાર માં સ્ત્રી પાત્ર ને આ કક્ષા - આ સાક્ષરતા - આ સંસ્કાર સિંચન થી ઉપાધિ નવાજવામાં આવી છે.

જીવનમાં સ્ત્રી પાત્ર મૂળ સંસ્કાર સંસ્કૃતિ સ્ત્રોત છે. એટલે તો

ધરતી માતા

નદી માતા

સ્ત્રી પાત્ર સર્વોત્તમ અને સર્વોચ્ચ હોય તો જન્મ જીવન મધુર જ હોય 👍

સ્વ માતા - સ્વ પત્ની - સ્વ દીકરી - સ્વ પુત્ર વધુ - સ્વ પૌત્રી કુટુંબ ની આરાધ્યા છે. દરેક કુટુંબમાં આ જ મૂલ સંસ્કાર છે. જેને આ નવરાત્રિ ધર્મ સંસ્કૃતિ મહોત્સવમાં ઉત્તમ શણગાર સજી ને " કુળ સંસ્કાર " આરાધના કરાવી કુટુંબ ને શુદ્ધ અને પવિત્ર કરવાનું અનુષ્ઠાન છે.

સ્વીકારીએ 🙏 અપનાવીએ 🙏 સ્વ યોગ્ય બનીએ 🙏

કદી કોઈ રાક્ષસ, નિશાચર, દુષ્ટ આપણામાં નહીં આવે અને કોઈ સ્ત્રી કુટુંબની સંસ્કાર લક્ષ્મણ રેખા નહીં ઓળંગે 🙏

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷 🙏 🌷

" गरीब " क्या व्याक्या है!

" गरीब " क्या व्याख्या है!

मैं कहीं जा रहा था

फूटपाथ पर कोई बैठा - गरीब हूं

रास्ते पर कोई लैटा - गरीब हूं

ठहरा - कोई पास आया और कहा - गरीब हूं

भाई! यह जरा उठाओगे - कहेगा - गरीब हूं

पैडल रिक्शा में बैठा - गरीब हूं

साईकिल वाला ने टक्कर मारी - गरीब हूं

बस में बैठा - साथ बैठा ने कहा - गरीब हूं

ऑटो रिक्शा में बैठा - क्या लोगे! साहब गरीब हूं

चौराहे पर पहुंचा - हाथ पसारे आया - गरीब हूं

टेक्सी में बैठा - स्टेशन ले चलो - साहब! इतना किराया! क्यूं - गरीब हूं

थोड़े आगे गाड़ी गलत चलती मोटरसाइकिल टकराईं - गरीब हूं

स्टेशन आया - भीख मंगा - गरीब हूं

सामान उतारता - पोलिश आई - आगे ले चलो - नो पार्किंग - अरे! क्या करे - गरीब का पेट भरना है - गरीब हूं

कुली सामान उठाया - साहब गरीब को मदद मिलेगी

ट्रेन में बैठा - ओहहहह - न जगह - हर तरफ - गरीब हूं

कोई गाना बजाता आया - गरीब हूं

कोई बिना टिकट यात्रा - गरीब हूं

पकोड़े बोलो पानी लो - गरीब हूं

सामान उठाके दौड़ा - पकड़ा - दो हाथ जोड़े - गरीब हूं

पुलिस आई - साहब! लाचार है - चोरी करता है - गरीब हूं

पुलिस कहे - हम खुद गरीब है

जहां जहां देखा - गरीब गरीब गरीब

जो कोई बोलें - गरीब गरीब गरीब

जो कोई करे - गरीब गरीब गरीब

सरकारी सेवाएं - गरीब गरीब गरीब

सरकारी शिक्षण - गरीब गरीब गरीब

सरकारी नौकरी - गरीब गरीब गरीब

सरकारी सहाय - गरीब गरीब गरीब

ओहहहह! चारों ओर - गरीब गरीब गरीब

हर व्यवहार - गरीब गरीब गरीब

हर व्यवस्था - गरीब गरीब गरीब

हर व्यक्ति - गरीब गरीब गरीब

यह कौन-सी बस्ती, समाज और रहेठाण में आ गया - गरीब गरीब गरीब

नेता - गरीब

स्नातक - गरीब

व्यापारी - गरीब

शिक्षक - गरीब

धर्म शास्त्री - गरीब

नीति नियम - गरीब

मैं सोचने लगा - मैं भी! 🌷🙏🌷

कैसा यहां का जीवन! मुझे इनके साथ ही जीना!

गरीब गरीब गरीब गरीब 🌷🙏🌷

हे इश्वर! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक नन्हा सा कुटुंब, अपनी मेहनत से अपना जीवन गुजारता - हंसते हंसाते पसार कर रहा था। एक दिन उनके घर एक बिटिया ने जन्म धरा, सब कुटुंबी जनों आनंद उमंग में उनका नाम रखा " क्रिष्णा "। हर कोई काम से आएं और उनसे खेले, ऐसे ऐसे दिन वर्ष बितते गएं। क्रिष्णा बड़ी होती चली और संस्कार शिक्षा पढ़ती चली।

जैसे जैसे वह बड़ी होती चली वैसे वैसे कुटुंब भी आर्थिक और सामाजिक नीति से सक्षम होता चला।

अपनी निष्ठा और ईमानदारी से जो कुटुंब काम कर रहा था उनमें कहीं तरह से व्यवसाय काम में प्रगति आने लगी। उनके पिता दिन-रात अपने व्यवसाय में डूबे रहते और पल पल क्रिष्णा के स्मरण से आनंद रहते। ऐसा ही काम में कभी रात को देर होती तो क्रिष्णा उनके पिता की यादों में आंखें नम करती सो जाती।

एक रात की बात है - पिता अपने काम में और क्रिष्णा अपनी नींद में सोई हुई थी। रात अपनी कालीमा को बिछाती खूब अंधेरा हो गया। पिता अपने काम निपटाके अपने घर पर चलने लगे, थोड़े आगे बढ़े और एक चिख सुनाई दी, पिता अपनी स्कूटर की गति बढ़ा कर वह दिशा की ओर दौड़े तो देखा एक नन्ही सी बिटिया को कुत्ते नोचने की कोशिश कर रहे थे। पिता तुरंत ही वह कुत्ते के उपर गाड़ी चढ़ा कर भगा रहे थे उनमें वह स्कूटर फिसला और वह गीर गएं। तुरंत वही कुत्ते ने उन पर आक्रमण किया तो उन्होंने अपने बाहुबल से और समझ से उन्हें भगाया और वह बिटिया को बचा लिया। बिटिया को उठाकर आसपास की बस्ती में पहुंचे तो उन्होंने चिल्ला कर सबको जगाया।

इनमें एक स्त्री पिता के पास दौड़कर आई और बोली - अरि! मेरी बिटिया! तु कैसे? तब तक सब बस्ती वाले पिता के निकट आ गएं और देखा तो पिता को कुत्ते ने काटा था और लहूं निगल रहा था। माता ने बिटिया को गोद में लिया और बस्ती वालों ने पिता की चिकित्सा की और स्कूटर पर बिठा कर उनके घर पहुंचे तो क्रिष्णा आंगन में बैठी पिताजी का इंतजार करती थी, जैसे स्कूटर आया वह दौड़कर रास्ते पर आ गई, बस्ती वालें भाई ने पिताजी को संभाल कर उतारा, जैसे क्रिष्णा पिताजी के पास पहुंची और लिपट कर बोली - पिताजी आपको ज्यादा चोंट तो नहीं आई ने!

पिताजी और वह भाई अचंभित हो गएं! क्रिष्णा ने कहा - पिताजी आपने हिम्मत दिखाकर वह कुत्ते को भगाया और नन्हीं सी बिटिया को बचाया। पिताजी! आप बहुत बहादुर हो। पिताजी! आपका दर्द मैं अभी दूर कर देती हूं। दौड़कर घर से जल की झारिजी भर कर लाई और पिताजी को जलपान करवाया और जल का शरीर पर छिटकाव किया। पिताजी का सारा दर्द नष्ट हो गया। पिताजी ने क्रिष्णा को अपनी गोद में उठा कर - दोनों गुनगुनाने लगे -

" नमामि यमुना महं सकलसिद्धि हेतुं मुद्दा "

मुरारी पद पंकज स्फूर दमन्द रेणूत्कटाम् "

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" रतन टाटा " 🌷🙏🌷
पिता ने स्नातक बना कर एक ही प्रोडक्ट की जिम्मेदारी सौंपी 👍

धैर्य, कुशलता और सच्ची प्रमाणिक मेहनत से सारे जग में वह प्रोडक्ट को अपनी ब्रांड से देश विदेश का गौरव हासिल किया।
एक हिन्दुस्थानी सिपाही - सेवक और चारित्र्यशिल व्यक्ति हम हिन्दुस्थानीओं को प्रेरणा देते बिदा हो रहा है
" हे वतन वासीयों!
एक एक घड़ी का उपयोग किए
एक एक कण का विनियोग किए
एक एक उत्पाद ऐसे बनाएं
जो एक एक जागतिक कहे
यह हमारा हिन्दुस्थानी उत्पाद है
जो हमारा ख़मीर है
जो हमारी गुणवत्ता है
जो हमारा विश्वास है
जो हमारी सिद्धि है
जहां जहां भी " टाटा " देखो
हिन्दुस्थान की पहचान है
एक एक हिन्दुस्थानी के ह्रदय में बसे
" रतन टाटा " हमारा आधुनिक आचार्य है
नमन करते है 🌷🙏🌷
श्रद्धा सुमन अर्पण करते है 🌷
हे रतन आत्मा! तु तो परमात्मा है
एक एक आत्मा से जुड़ा है
तु एक विश्वात्मा है 🌷🙏🌷
चाहे तेरा शरीर बिछड़े हम से
पर तु तो सदा दिल में बसा तेज़ है
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

अकेला अकेला बस सोचता रहा

" रतन टाटा " क्या थे?

कोई राजनीतिक नेता उन्हें समझ पाया?

कोई न्यायिक व्यक्ति उन्हें जान पाया?

कोई सामाजिक व्यक्ति उन्हें पहचान पाया?

कोई धार्मिक गुरु उन्हें विदित पाया?

कोई कौटुंबिक आगेवान उन्हें चारित्राय पाया?

कोई सामान्य जन उन्हें छू पाया?

हिन्दुस्थान का सूरज आज ढल गया 🙏

हे प्रभु! कल सुबह हम सारे हिन्दुस्थानी उनके नीति नियम और शिस्त से ऐसे जागे की हमारे हिन्दुस्थान के आंगन में एक परम आत्मा " रतन टाटा " का जन्म धरे 🌷🙏🌷

हे प्रभु! हमारी प्रार्थना स्वीकार करो 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितने व्यक्तित्व!
कितने निष्णांत!
कितने तवंगर!
कितने गरीब!
कितने मध्यम!
कितने मजबूर!
कितने बालक!
कितने युवक!
कितने उम्र लायक!
कितने बड़ी उम्र!
कितने विश्वासु!
कितने वफादार!
कितने कार्य लायक!
कितने अपंग!
कितने रोगी!
कितने योग्य!
कितने अभण!
कितने स्वस्थ!
कितने अधूरे!
कितने निष्कार्य!
कितने साथी!
कितने पराये!
कितने भूखे!
कितने लूटेरे!
कितने मूर्ख!
कितने धूर्त!
और कितने कितने कितने!
अकेले बैठकर सोचिए - मैं कौन?

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

करते हो कन्हैया

हां करते हो कुछ कन्हैया

करते हो तुम कन्हैया ऐसा

यह दास जाग रहा है

कृष्णा कृष्णा कृष्णा कृष्णा कृष्णा कृष्णा

कृष्णा कृष्णा कृष्णा कृष्णा कृष्णा कृष्णा

मेरे नैन जहां पहुंचे तेरा दर्श हो रहा है

मेरा स्वर जहां पहुंचे तेरा स्पर्श हो रहा है

जहां जहां भी पहुंचु तेरा रंग बिखर रहा है

करते हो तुम कन्हैया

हां करते हो कुछ कन्हैया

करते हो कन्हैया

यह दास झुम रहा है

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कितनी अनोखी संस्कृति है हमारे जीवन की 🙏

नित्य शुभ संबोधन - जय श्री कृष्ण 🌷🙏🌷

नित्य जो सामने पाये - जय श्री कृष्ण 🌷🙏🌷

नित्य जो मिले - जय श्री कृष्ण 🌷🙏🌷

नित्य जब आंगन छोड़े - जय श्री कृष्ण 🌷🙏🌷

नित्य कोई कार्य से जाएं - जय श्री कृष्ण 🌷🙏🌷

नित्य कोई कार्य सिधाएं - जय श्री कृष्ण 🌷🙏🌷

कभी कोई नियम बंधे - जय श्री कृष्ण 🌷🙏🌷

कभी कोई नियम छोड़े - जय श्री कृष्ण 🌷🙏🌷

कोई उत्सव उजारे - जय श्री कृष्ण 🌷🙏🌷

कोई प्रसंग उजाले - जय श्री कृष्ण 🌷🙏🌷

कोई सेवा न्योछावरे - जय श्री कृष्ण 🌷🙏🌷

कोई साथ जुड़े - जय श्री कृष्ण 🌷🙏🌷

कोई ज्ञान दीपावे - जय श्री कृष्ण 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

जय श्री कृष्ण - जय श्री कृष्ण 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरा इंतज़ार था - कहीं जन्मों से

तेरा इंतज़ार है - हर घड़ी में

तेरा इंतज़ार रहेगा - हर सांस से

राधा! यही है हमारा इंतज़ार

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

मैं रुठूंगी - हर घड़ी में

मैं रुठी रहूं - हर इंतज़ार में

मैं रुठूंगी - तेरे हर ख्याल में

मैं रुठी रहूं - तेरी हर धड़कन में

कान्हा! यही है हमारा रुठना

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

राधा! हर इंतज़ार तुझसे है

राधा! हर इंतज़ार निकट से है

राधा! हर इंतज़ार ख्वाबों से है

राधा! यही है हमारी प्रीत 🌷

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

कान्हा! रुठने की अदा तुझसे है

कान्हा! रुठने की आह विरह से है

कान्हा! रुठने की रीति दिल से है

कान्हा! यही है हमारी प्रीत 🌷

🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक छोटा बालक उम्र - ९ साल, वह स्कूल में पढ़ता और अपने मित्रो के साथ खेलता रहता।
एक बार उनकी ऐसी स्थिति आईं की उन्हें अपने भरण पोषण के लिए चोरी करनी पड़ी और ब्रेड चुराते पकड़ा गया। जो व्यक्ति ने उन्हें पकड़ा वह एक बहुत बड़ा बिजनेसमैन था, उन्होंने वह बालक को कहा - चोरी करने से अपना आत्मविश्वास गंवा देता है और वह कभी बड़ा बिजनेसमैन नहीं हो सकता है 👍
वह बालक वह समय इतना मजबूर था कि वह खाना न खाएं तो जान भी गंवा सकता था। उस समय वह चुपचाप वह ब्रेड खा गया और वहां से निकल गया।
दूसरे दिन सुबह वह वही बिजनेसमैन की फेकटरी के दरवाजे पर खड़ा हो कर इंतज़ार करने लगा।
थोड़ी देर में एक कार आईं उसमें से वह बिजनेसमैन उतरा की तुरंत वह बालक दौड़ा और कहने लगा - सर! गुड़ मोर्नींग! इतने में तो बहुत सारे कर्मचारी और अधिकारी इकठ्ठे हो गएं और बालक को दूर करने लगें पर बालक निड़र और दट्ट से खड़ा रहा और कहा - सर! यह लो आपके ब्रेड के पैसे!
आपने जो कहा था कि - " चोरी करने से अपना आत्मविश्वास गंवा देता है और वह कभी बड़ा बिजनेसमैन नहीं हो सकता है " 👍
आपने मेरा आत्मसम्मान गंवाया है - जो मैं कभी भी बर्दाश्त नहीं कर सकता, मैंने सारी रात महेनत मजूरी करके यह पैसा कमाया है - जो आपको लेना है।
बिजनेसमैन बोले - मैं यह पैसे नहीं ले सकता हूं। वह ब्रेड मैंने तुम्हें दान कर दी थी।
बालक ने कहा - ऐसा कैसे हो सकता है? मैंने कोई याचना या कोई गुहार नहीं लगाईं तो मैं दान कैसे ले सकता हूं? मैं एक तंदुरुस्त बालक हूं तो कोई काम करके अवश्य मेरी हर कोई जरुरीयात पूरी कर सकता हूं। 👍
कल तो मैं इतना मजबूर और असमर्थ था कि मैं कुछ कर सकू इसलिए चोरी किया और आपने पकड़ लिया।
बिजनेसमैन ने कहा - बेटा! ऐसा होता रहता है, अब तुम जाओ मुझे बहुत काम करना है, मेरा समय किंमती है, और वह चलने लगा, तब ही बालक ने कहा - ठहरो! आपको यह पैसे लेने पड़ेंगे ही नहीं तो मैं अपना आत्मविश्वास और आत्मसम्मान वापस नहीं पा सकता हूं। 🙏
आसपास के लोगों के साथ वह बिजनेसमैन चकित सा रह गया।
बिजनेसमैन ने कहा - बेटा! मुझे तुम पर गर्व है, तुम जैसे बालक हमारे देश में है तो हमारा देश अपना सर गर्व से उंचा रहेगा 👍 वह बिजनेसमैन ने वह बालक के हाथ से पैसा लिया और उन्हें चूमकर कहा - बेटा! आज जो मैं हूं वह कल तुमसा ही था, मेरे साथ ऐसे कहीं बालकों थे उन्हें मैंने धीरे धीरे एक एक बालक को साथ दे कर आज दुनिया के सारे देशों में हमारा देश का नाम रोशन कर दिया है।
🌷🙏🌷 आप कहो वह देश का नाम?
जो सही नाम बताएगा उन्हें एक सुंदर सी मनपसंद गिफ्ट 🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ઇજિપ્ત - ગ્રીસ અને ભારત એવા દેશો છે જે સત્ય અને વિશ્વાસની વાસ્તવિકતા સાથે જીવનની સંસ્કૃતિ બનાવી રહ્યા હતા.

પ્રાચીન ઇજિપ્ત, ગ્રીસ અને ભારતમાં સ્ત્રીઓને જીવન અને શાણપણના સ્ત્રોત તરીકે ગણવામાં આવતી અને પુરુષો કરતાં શ્રેષ્ઠ અને વધુ પવિત્ર માનવામાં આવતી હતી. એવું માનવામાં આવતું હતું કે એક માણસ કે જેણે મહાન જ્ઞાન, આધ્યાત્મિકતા અને શક્તિ પ્રાપ્ત કરી છે તે પોતાનો શ્રેષ્ઠતા નો અધિકાર મેળવી શકે છે, જે સ્ત્રીની સમાન સ્તરની તેની પ્રાપ્તિનું પ્રતીક છે.

સ્ત્રીને તેના પુરૂષ માટે શક્તિ અને રક્ષણના સ્ત્રોત તરીકે જોવામાં આવતું હતું, એક કહેવત છે જે આજે પણ પ્રચલિત છે - 'કે દરેક સફળ પુરુષની પાછળ એક મજબૂત સ્ત્રી તેનો સાથ છે.'

પણ આજે તે દોષિત ઠેરવવા લાગ્યું છે 🙏

સાચું કહું તો - આજે આ વિશ્વાસપાત્ર સંબંધ પત્ની અને પતિ અથવા સ્ત્રીઓ અને પુરુષો વચ્ચે બગડ્યો છે કારણ કે તેણીની દંતકથા અને વાસ્તવિકતામાં પુરૂષો કરતાં વધુ સંજ્ઞાની છે અને દરેક ક્ષણે તેણીની શ્રેષ્ઠતા સાબિત કરવા જતા સુંદર અને ઉત્કૃષ્ટ જીવનને તોડી નાખે છે.

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

નિષ્કર્ષ - પુરુષો સ્ત્રીઓ પર ખૂબ જ નિર્ભર બની ગયા છે. આ માનવ જીવન માટે જોખમી છે.

"વાઇબ્રન્ટ પુષ્ટિ"

"જય શ્રી કૃષ્ણ" 🌷🙏🌷

खुली छत के दीपक
बहती नदी के दीपक
कब के बुझ दिये होते
हां! कोई भी और कभी भी एक हवा का झोंका आएं और दीपक बुझ जाए
पर वह दीपक अपनी आखरी तेल की बूंद तक प्रज्वलित होता है
क्यूं?
तु साथ हो जो मेरे
मेरे आत्मा का दीपक कैसे बुझें!
तुम्हारे साथ का एहसास जो मुझमें जगा है
तो वह आत्मीय दीपक कैसे बुझें!
हे कान्हा! एक बार तु यह नैनन में बस गया!
अब तो यह नैनन से मैं तुझे कैसे जाने दूं!
हे कान्हा! एक बार मैंने तेरे नाम को छू लिया!
अब तो यह अधर से प्रेम रस को कैसे मिटाऊं!

बस गया तो बस गया 🙏
छू लिया तो छू लिया 🌷

अब कैसी भी आंधी आएं या तुफां आएं
बस तेरा साथ!
मैं तेरा दास हो गया 🙏
अगर तु कितना भी आडंबर दे 🙏
अगर तु कितना भी अहंकार दे 🙏
यह तेरा दास! बस तेरा दास ही रहेगा 🙏
कान्हा! हे कान्हा! 🌷
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

પ્રકૃતિ - સૃષ્ટિ અને બ્રહ્માંડ માં અનેક સમય આધારિત પરિવર્તનો થાય છે જેને વૈજ્ઞાનિક, ધાર્મિક અને આધ્યાત્મિક પરિણામ નાં માધ્યમ થી ઘણાં ગણિતજ્ઞ ધારણાઓ નક્કી કરવામાં આવી. આ ધારણાઓ નાં માધ્યમ થી અનેકો સિદ્ધાંતો રચાયા અને આ રચનાઓ થી જ માનવ મન, જીવન અને જીવનશૈલી ઓ નો ઉદભવ થયો. જે યુગ, કાળ, સદીઓ અને દાયકાઓથી એક બીજાની સમજો થી ચાલ્યા જ કરે છે, જેમાં સૂર્ય, ચંદ્ર, પૃથ્વી મૂળ પાયા નાં તત્વો છે.

આ તત્વો ને આપણે આપણાં પ્રાણ, મન, શરીર, આત્મા અને આધ્યાત્મિકતા થી સચેતન કરે તો અવશ્ય માનસિક, શારીરિક અને જાગતિક પરિબળો અને પરિવર્તનોથી શાંતિ, આનંદ, સુખ અને યોગ્યતા મળે છે.

આજે ગ્રહણ છે, આ ગ્રહણ કાળમાં જો આપણે સ્વ આ યોગ્યતા ને પામવા આપણે આપણાં જ પ્રાણ, શરીર, મન અને આત્માને કેવળ સત્યતા માટે આ મૂળ તત્વો ને નિરપેક્ષ ભાવથી પ્રાર્થના કરીએ તો અવશ્ય આ મૂળ તત્વો આપણને ઉત્તમતા જ પાઠવે છે. 🙏

વિચારો 🌷🙏🌷

" વાયબ્રન્ટ પુષ્ટિ "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

राधा! है विसर्जन कहीं तेरी यादों का

जो तुझसे मैं दूर हो जाऊं 🙏

राधा! है सर्जन कहीं तेरे प्रेम का

जो कहीं ओर में मैं पाऊं 🙏

राधा! है परिजन कहीं तेरे स्पंदन का

जो कहीं तरंग में मैं स्पर्शाऊं 🙏

राधा! है गूंजन कहीं तेरी पुकार का

जो कहीं रव में मैं समाऊं 🙏

चाहे मैं तुमसे कहीं भी हूं

पर मैं तुझमें हूं 🌷

राधा! राधा! राधा! राधा! 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" बेटी "

एक मासूम और मोहक जीवात्मा 🙏

छम छम छम छम बड़ी होती है 🙏

लटक मटक युवा होती है 🙏

हर मन से उनका स्पर्श 🙏

हर तन से उनकी सेवा 🙏

हर धन से उनकी न्योछावर 🙏

हर जीवन से उनकी याद 🙏

" मां " पुकारें तो कुछ होता है 🙏

" पापा " पुकारें तो नयन ढूंढ़ती है 🙏

" भैया " पुकारें तो उर्जा उठती है 🙏

कितने वर्ष हमारी! 🙏

चली चली और चली 🙏

कभी न मुड़ी 🙏

क्यूं? ऐसा क्या? ऐसा कैसे?

पता नहीं क्या है रिवाज 🙏

पता नहीं क्या है समाज 🙏

पति - पुत्र - पुत्री 🙏 अवश्य

पर

कोई निरपेक्षता होनी चाहिए 🙏

धर्म - अधर्म - काम - वासना

हमने ही रचें - घड़े

तो

हमें सत्य भी रचना चाहिए 🙏

हमें पवित्रता घडनी चाहिए 🙏

अंश है तो परमहंस होना चाहिए 🙏

अंग है तो परमानंद होना चाहिए 🙏

आत्मा से परमात्मा होना चाहिए 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

निडर होकर ऐसी व्यवस्था रचें

तो अवश्य " बेटी " सुरक्षित 🙏

मैं तैयार हूं 👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" नैतिकता "

सुना है यह शब्द

लिखा है यह शब्द

कहा है यह शब्द

पर

समझा है किसीने?

अगर जो देश की नागरिकता को यह शब्द समझ आए वह देश कभी

- अविकसित नहीं होता और उनके प्रमुख नागरिक बार बार यह नहीं कहता - मुझे विकास करना है 🌷

- अविश्वसनीय नहीं होता और उनके प्रमुख नागरिकों बार बार झझुमते रहते अपनी योग्यता प्रमाणित करने 🙏

- भ्रष्टाचार नहीं होता और उनके प्रमुख नागरिकों बार बार न्यायायिक कठेरे में खड़े नहीं होते 🙏

- गरीबी नहीं होती जो बार बार विदेशों में जाकर धन कमाते 🙏

- अंधश्रद्धा भरें नहीं होते जो हर क्षण अज्ञानी धर्म धूरंधरो के साथ नहीं निभाते 🙏

- जो नागरिकों तर्क में डूबे डूबे नहीं होते जो बार स्व को सत्यवादी घोषित नहीं करते

" नैतिकता " इतना अनोखा और गर्विला निरपेक्ष संबंध नहीं होता 🙏

" नैतिकता " से ही अपना आत्मविश्वास और आत्मसम्मान और आनंद प्राप्त होता है 🙏

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" बालक "

कितनी उत्तम कक्षा!

हां! मैं भी बालक था 🌷

मुझे आज याद आता है मेरे माता-पिता का वात्सल्य 😘

मुझे आज एहसास होता है कि मेरे जीवन का सर्वोत्तम समय - तो मेरी बाल्यावस्था 🌷

यह बाल्यावस्था सदा आनंद उमंग और उल्लास से भरी 😀

हां! श्री कृष्ण ने ऐसा जीया की आज भी हम यही बाल्यावस्था की सेवा से ही हम हमारी हर अवस्था को आनंददायक करने की योग्यता समझते रहते है 🙏

हमारी हिंदू संस्कृति में सनातन धर्म की नींव हमारे मूल आचार्यों ने 'श्री कृष्ण बाल्यावस्था 'को सर्वाधिक महत्व दिया 🙏

क्यूंकि हमारा जीवन उत्कृष्ट और आनंदमय हो 🌷

नन्हा सा - छोटा-सा - मयूरपंख धारी श्री कृष्ण को हर घर घर में बसाया 🙏

यह बसाने का सामर्थ्य हमें पाना है -

वात्सल्य से

निःस्वार्थ से

निरपेक्ष से

निःसंदेह से

नि:हंकार से

यही सत्य है 🌷 यही हमारी धरोहर है 🙏

पर हम गंवा दिए हमारी अर्थोपार्जी तितिक्षा से 🚶

पर हम गंवा बैठे हमारी निष्ठुर समाज व्यवस्था से 🙃

हमारे माता-पिता ने हमें क्या सिखाया!

धन दौलत

गाड़ी बंगला

अमीरी - पैसा दार

बस! यही ही प्रमाण है हमारी प्रतिति का ▯

यही ही जीवन का मूल्य है

बस इकठ्ठे करते जाओ और दूसरे से बड़े होते जाओ 🙏

बालक - बचपन गंवा दिया 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" अमृत " यह शब्द हर कोई ने अवश्य सुना है 🙏

" अमृत " यह किसीको पता है कि यह क्या है और कहां से वह उदभव होता है?

बचपन में सुना - माता-पिता से

बड़ा हो कर सुना - शाळा - विद्यालय या शिक्षक से

और थोड़ा बड़ा हुआ तो सुना मित्र या कोई रिश्तेदार या कोई पुस्तक से

युवान हुआ तो सुना साथी या धर्मशाला या कोई मोटिवेशनल प्रवचन से

पर आजतक वह अमृत को समझ नहीं पाया कि - अमृत क्या है?

शायद आप जानते हो तो अवश्य हमें बताएं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हां! अवश्य स्व सभानता से जानता हूं

मैं जो लिख रहा हूं

केवल मेरी जागृतता के लिए 🙏

केवल मेरी अहंकारीता तोड़ने के लिए 🙏

केवल मेरा संशय मिटाने के लिए 🙏

केवल मेरा आत्मचिंतन को प्रज्ज्वलित करने 🙏

केवल मेरा आत्मविश्वास संवर्धन करने 🙏

केवल मेरी अवस्था निरोगी करने 🙏

केवल मेरी अज्ञानता दूर करने 🙏

केवल मेरा आंतरिक अंधकार मिटाने 🙏

केवल स्व को पहचानने 🙏

केवल स्व का आलस्य मिटाने 🙏

केवल अपने आपको उर्जावान बनाने 🙏

केवल अपने आपको शुद्ध करने 🙏

केवल मेरी वासना मिटाने 🙏

केवल स्व समद्रष्टि रखने 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हे संसार के साथी आपसे तो यह समझता हूं 🙏

हे जगत के वासी आपसे तो यह सीखता हूं 🙏

सत्य की उर्जा मुझमें सदा प्रज्जवलित हो कर मैं सत्य में समाऊं 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री राम " 🌷🙏🌷

" धर्म "
मंदिर जाना 🙏
कथा सुनना 🙏
परिक्रमा करनी 🙏
पूजा करना 🙏
अर्चना करनी 🙏
भजन गाना 🙏
अपना आत्मविश्वास लिखना 🙏 जो स्वयं से निकलता है
अपनी अनुभूति लिखनी 🙏 जो स्वयं से निकलती है
अपना अनुभव बताना 🙏 जो स्वयं को असर होती है
मीरा चरित्र जांच लो
कबीर चरित्र जांच लो
राम चरित्र जांच लो
कृष्ण चरित्र जांच लो
बुद्ध चरित्र जांच लो
वैज्ञानिक चरित्र जांच लो
भक्त चरित्र जांच लो
हम सामान्य और हम स्व चरित्र जांच ने के बदले औरों का चरित्र जांचते जांचते स्व को भुल कर बस औरों में डूबते डूबते स्व को नष्ट करके 🙏 अपने आपको बड़ा ज्ञानी, बुद्धिमान और सेवाभावी समझते है 🙏
वैज्ञानिक और सत्य सिद्धांत है
" जैसे स्व ऐसा समय, क्रिया, जीवन, व्यवहार और आचरण "
कलयुग ही रहेगा - रहाएंगे - रहते रहते ही रहेंगे 🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
धरती, जल, हवा, प्रकाश और आकाश तो क्या! हमें तो रोग ही नष्ट कर देंगे 🙏
हमें तो डायाबिटिस, केन्सर, वाइरस और कहीं असाध्य रोग ही क्षिण क्षिण कर खा जायेंगे - पशु की तरह 🙏
हम आज यही देखकर कितने खुश रहते है 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

द्वारपाल खड़े करें
द्वार द्वार बंद रखें
चप्पे चप्पे नजर रखें
द्वार द्वार तारामंडल बंधें
तो भी तु नज़र आइयेगा
नज़र आइयेगा नज़र आइयेगा
हजी हमसे छूपकर कहां जाइयेगा
जहां जाइएगा हमें पाइयेगा
हजी हमसे बचकर! 🙏

नैनों में नजरबंद है
मन के द्वार पर खड़े हों
झुकते पलक में समाएं हो
खुले नैनों की हर नज़र में हो
जरा हटकर दिखाओ
जरा छूपकर बताओं
हजी हमसे बचकर निकल नहीं पाओगे
निकट ही रहोगे
साथ ही रहोगे
हे नाथद्वारा के श्रीनाथ 🙏

कितनी भीड़ लगा दें
कितने भीतरिया लर दें
लथड बथड गिरत दौडत
सामने आएंगे आमने ठहरेंगे
हटकर दिखाना
दूर जाकें दिखाना
हजी हमसे लठ्ठ कर जा नहीं पाओगे
सामने ही होंगे
सामने ही पाओगे
हे नाथद्वारा के श्रीनाथ 🙏
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे नाथ!

यह नैनन की कोर से जो बहती बूंदें है

तेरे दर्शन से उठती विरह अंजली है 🙏

यह अपलक नैनन की नजर को मूंदती पलक है

तेरे दीदार से झुकती विश्वास प्रणाम है 🙏

यह नैनन से नैनन तेरे मेरे एक होते है

तेरे दर्शन होते ही नैनन न पहुंचे और कहीं 🙏

किससे नजर मिलाऊं तुझे देखने के बाद 🙏

हे श्री नाथ! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आंखों की योग्यता

रुप से होती है तो हमारा चरित्र कैसा!

आंखों की उंचाई

आभूषणों से होती है तो हमारा मन कैसा!

आंखों की सत्यता

कपड़ों से होती है तो हमारा सत्य कैसा!

मेरे जमाने के मित्रों!

हमने जब जन्म लिया था तब न कोई परदा था

जैसे जैसे बड़े होते गया तो परदा ही परदा 🙏

तो जब आंखें बंद होगी तो परदा हटाऊं कैसे?

इसका अर्थ यह हुआ कि मुझे यह ज़माने से छुटकारा कभी नहीं मिलेगा 🙏

सोच लो! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" मीरा " हर कोई यह नाम और चरित्र से वाकेफ है 🙏

" मीरा " जो नाम और चरित्र से वाकेफ है तो वह व्यक्ति - वह कुटुंब - वह समाज भी यह नाम और चरित्र से अति जुड़ा हुआ होगा 🙏

" मीरा " इतना पवित्र, भक्ति मता और सेवा के साथ उत्तम स्त्री चारित्र्य का भी अनोखा पुरुषार्थ है 🙏

यही " मीरा " चरित्र को हम अपने मन को और समाज को प्रमाणित करने अपना नाम रख देते है पर काम - विचार से असमर्थ और अति अगर्तक चरित्र बना देते है 🙏 जिससे नाम और चरित्र की गरिमा को ऐसे संस्कार में ढकेलते है कि हम और हमारा व्यवहार कैसा! 🙏

हम हमारी माता, बहन, पत्नी, बिटिया, पुत्रवधू और पौत्री को जब अतृप्त नजर से देखा बस इसी क्षण समाज भी यही नज़र से देखेगा और व्यभिचार की धारा बहना शुरू 🙏

रावण को हमारे में जन्म दे दिया - जहां जहां भी देखो तो रावण ही रावण 🙏 राम का नाम कैसे ले सके और राम को पैदा कर सके?

मैं ही रावण! 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं नशे में चूर
तेरे लहराते मयूरपंख से
मेरे तन में आग लगाएं

मैं नशे में चूर
तेरे वाकुंडि लटों से
मेरे अंग पाश बांधे

मैं नशे में चूर
तेरे मतवाले नैनों से
मेरी नज़र ओर खींचें

मैं नशे में चूर
तेरे मोहक मुखड़े से
मेरे मन मोह जगाएं

मैं नशे में चूर
तेरे कमल अधर से
मेरे प्रेमामृत रस लुटाएं

तु कहे!
एक भी कदम चलना मुश्किल
मैं नशे में चूर

हे जमाने के जोगीओं!
मुझको यारों माफ़ करना 🙏
मैं नशे में चूर हूं
मेरे प्रियतम कृष्ण से 🌷
मेरे प्रिये कान्हा से 🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राधा " सत्य है कि उन्हीं के साथ केवल " कृष्ण " ही जुड़ सकते है 🌷

" मीरा " सत्य है कि उन्हीं के साथ केवल " श्री कृष्ण " ही जुड़ सकते है 🌷

क्यूंकि " राधा " कृष्ण की प्रेयसी थी 🌷

क्यूंकि " मीरा " श्री कृष्ण की दासी थी 🌷

क्यूंकि " राधा " कृष्ण की आराध्या थी 🌷

क्यूंकि " मीरा " श्री कृष्ण की चाकर थी 🌷

क्यूंकि " राधा " कृष्ण की आह्लादायिनी थी 🌷

क्यूंकि " मीरा " श्री कृष्ण की रागिनी थी 🌷

क्यूंकि " राधा " कृष्ण की पूर्णता थी 🌷

क्यूंकि " मीरा " श्री कृष्ण की भक्ति वर्धिनी थी 🌷

क्यूंकि " राधा " कृष्ण की सर्वथा थी 🌷

क्यूंकि " मीरा " श्री कृष्ण की अभ्यर्थना थी 🌷

" राधा " 🌷

" मीरा " 🌷 🌷 - 🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे भारत!

तु कितना बदला!

१९४७ से स्वतंत्र

१९५६ से प्रजासत्ताक

२०१४ से बिना कोंग्रेस

२०२४ से राम सेवक

२०२४ से केवल विकास विकास और विकास 👍

ऐसा परिवर्तन! ऐसा परिवर्तन कर दो

न भ्रष्टाचार हो न किसीको लुटे हो

न धूर्तता हो न किसीको तोड़े हो

सेवा करे उन्हें जीता ओ

न्याय करे उन्हें साथ दो

जो हमें विश्वास दे

हम समाज को समृद्ध करे

जो हमें पवित्र बनाएं

वह वर्तुल को " वोट " दो

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

जय भारत! जय भारतीय! 🌷🙏🌷

एक " वोट " सत्यता हमारी 👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कमाल का जीवन है!
छोटे छोटे छोटे छोटे!
नन्हें नन्हें नन्हें नन्हें!
बचपन बचपन बचपन बचपन!
विद्यार्थी विद्यार्थी विद्यार्थी विद्यार्थी!
युवक युवक युवक युवक!

सच! कितना अनोखा
सच! कितना रंगीन
सच! कितना स्वतंत्र
सच! कितना उन्माद
सच! कितना उमंग
सच! कितना उम्मीद
सच! कितना अल्लड

लग्न 🌷

एक बंधन
एक साथ
एक एकरार
एक वचन

बस!
संसार - संबंध - समाज
बस!
व्यवसाय - व्यवहार - व्यवस्था
बस!
फ़र्ज़ - क़र्ज़ - दर्ज़
बस!
उपाधि - व्याधि - आधि
बस!
आस्था - व्यथा - कथा
आख़री सांस तक बस 🙏

सच! जिया नहीं जीवन
सच! एक चक्र
सच! एक तर्क 🙏🌷🙏🌷🙏🌷
मुझे माफ़ करना मेरे साथी 🙏
मुझे माफ़ करना मेरे वंशज 🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
यह क्षण - घड़ी - काल से आप सभी मुझसे मुक्त 🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सुबह से सोच रहा था कि क्या लिखें 🌷
गाड़ी चलाते - किसी से बात करते - कोई टी वी देखते - या किसी से बात करते कोई एक ख्याल घूमता रहता है कि - ऐसा क्या है कि कोई विश्वास से, योग्यता से या बिलकुल सही अर्थों से क्यूं नहीं रह पाते है?
सोचता सोचता और सोचता एक सामाजिक चारित्र्य पर वह विचार अटका! रुका! थंभा! ठहरा!
और वह चारित्र्य है - 'शिक्षक' 🌷🙏🌷
सच में हम क्या? क्यूं?
' शिक्षक ' बहुत सोचा 🙏
आज के समाज में शिक्षक कौन?
कितनी गंभीर और गहरी सोच!
शाय़द मेरे माता-पिता शिक्षक! नहीं
शाय़द मेरे संबंधी शिक्षक?
शाय़द मेरे कुटुंबी शिक्षक?
अरे हो तो भी निक्ठठु!
अरे हो तो भी मंदिर या बगीचे में बैठने की आदत जो केवल बतंगड़ करना 🌷
बड़ी बड़ी बातें से अपना जीवन समाप्त करना 🌷
मैं सोचता रहा - सोचता रहा कि पेन्शन के लिए यह काम!
आराम और अनेक सुविधाएं से भरपूर यह काम!
बार बार उनके मुंह से यही सुनना
आजकल के बच्चे निक्कमें !
माता-पिता, कुटुंब उन्हें संभालती ही नहीं है 🙏
शिक्षक कैसे? और क्यूं?
सोचता हूं - सोचता हूं! 🌷🙏🌷
आप भी सोचिए 🙏
क्या करें?
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" रा.....धे " " रा.....धे "

कुछ होता है नैनन में

" रा.....धे " " रा.....धे "

कुछ होता है धड़कन में

" रा.....धे " " रा.....धे "

कुछ होता है मनन में

" रा.....धे " " रा.....धे "

कुछ होता है नमन में

" रा.....धे " " रा.....धे "

कुछ होता है शरणं में

" रा.....धे " " रा.....धे "

" रा.....धे " " रा.....धे "

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री राधे " 🌷🙏🌷

राधे राधे बोल अंतर के पट खोल

राधे राधे बोल मन को कर अनमोल

राधे राधे बोल नैन में बसा अमोल

राधे राधे बोल सांसों को कर प्रेमल

राधे राधे बोल अधर पर बसे बंसीलाल

राधे राधे बोल गलें पहन कंठी माल

राधे राधे बोल अंग ओढ़े प्रीत आंचल

राधे राधे बोल हस्त लिखें अक्षर अचल

राधे राधे बोल घड़ी घड़ी प्रेम में घोल

राधे राधे बोल जीवन न अन्य बोल

राधे राधे बोल तु ही एक श्री व्रजमोल

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

બેટા! 🌷🙏🌷

આ ધરતી કેટલાં યુગોથી ઘૂમ્યા જ કરે છે

તેમાં ઘણું પરિવર્તન આવે છે 👍

આપણે પણ સમય અને સ્વ માનસિક પરિસ્થિતિ થી

આપણાં માં પણ ઘણું પરિવર્તન આવે છે 👍

આપણે જે ભૂમિ પર જન્મ ધર્યો

આપણે જે ભૂમિ નાં સંસ્કાર પામ્યા

એટલે ઘણાં એવાં વિચારો - એવી સ્થિતિ અને એવા પરિબળો

જે આપણાં માં અજબ ગજબ પરિવર્તન લાવે છે 🙏

આજે તમે યુવાન છો એટલે તમે તમારા વિચારો પ્રમાણે અમને જીવવાની વાત કરો છો 👍

જ્યારે તમે બાળકો હતા ત્યારે અમે તમને જીવવાની કળા શીખવતાં હતા 🙏

હવે તમે તમારા બાળકો ને તે તમે શીખવાડશો 👍

કેવું ચક્ર! 👍

આ ચક્ર માં હું મારો વિચાર કહું છું 🙏

જે કરો - સત્ય સિદ્ધાંત આધારિત કરો 👍

જે કહો - સ્વ જાગૃત સત્ય સિદ્ધાંત આધારિત કહો 👍

લાગણી નહીં - મજબૂરી નહીં કે પરાવલંબી નહીં 🙏

ઉંમર - પ્રકૃતિ - શારીરિક માનસિક અને સામાજિક પરિબળો કરતા સત્ય સિદ્ધાંત આધારિત કહો અને કરવાથી

ચોક્કસ પ્રેમ - સુખ અને આનંદ જ જન્મે છે 🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" વાયબ્રન્ટ પુષ્ટિ "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

मैं खड़ा था उनके सामने
टगर टगर वह निहारें मुझे
टगर टगर मैं देखुं उन्हें
कभी मेरे नयन नीचे
कभी मेरे नयन उपर
कभी मेरे नयन दाएं
तो कभी मेरे नयन बाएं
कभी मेरे नयन स्थीर
तो कभी हमारे नयन मिलन
साथ साथ में मन दौड़े
कभी उधर तो कभी इधर
कभी इधर-उधर
तो कभी कहां कहां
कभी स्थीर
कभी अटक अटक
कभी मटक मटक
ओहहहह! कितनी देर तक ऐसे ही रहे
तब मन जागा - अरे! मैं तो सामने खड़ा हूं
मेरे परब्रह्म 🙏 मेरे प्रिये 🌷 मेरे प्रियतम ❤️
तब नयन एक हुए
बस एक नजर एक नयन
वह मुझमें मैं उनका
एक एक और एक
न पलकें झुकें न पलकें फिरें
बस एक नयन एक अयन
एक ओर एक दोर
हम दोनों एक तोर
उनके नयन उनके पलक
उनके मन उनके तन
बस केवल मुझमें
मैं मौन वह अहो मन
मैं अचल वह निश्चल
🌷🙏🌷🙏🌷
ऐसे समाये मेरे अंतर
न रहा बिच में अंतर
हे श्री नाथ प्रभु!
तुम्हें मेरा नमन 🙏
तुम्हें मेरा प्रणाम 🙏
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वल्लभ " आप सभी को हमारे परम प्रिय आचार्य श्री वल्लभाचार्यजी के प्राकट्य दिन की बधाई 🌷🙏🌷

" वल्लभ "

नाम उच्चारे आनंद उर्मि मन तन जागत

नाम स्मरणे प्रेम उर्जा अखलित प्रक्टत

नाम सुनाएं ब्रह्म परब्रह्म प्राण प्रजवल्लत

नाम लिखाएं एक स्थिर जीवन जीवत

हे आचार्य! आपको दंडवत प्रणाम 🙏

आपका चरित्र पावन पवित्र

एक एक क्षण साथ सोहाय

एक एक विचार पुरुषार्थाय

एक एक कर्म भक्ति निरुपाय

हे मानव उद्धारक! आपको हृदयस्थ प्रणाम 🙏

हर कदम पर श्री प्रभु पमाय 🙏

हर धरम पर श्री प्रभु साक्षाताय 🙏

हर सोच पर श्री प्रभु समर्पाय 🙏

आपका जीवन सिद्धांत ही हमारी आराधना

आपका षोडश् रचना ही हमारी उपासना

हर एक सांस आपकी सेवा 🙏

यही हमारा जीवन यथार्थता 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हर सांस से आकाश में उर्जा भरु

हर नज़र से जगत में रंग बिखरु

हर कदम से धरती में सिंचन करुं

हर धर्म से सूर्य में किरण प्रसारु

हर पुरुषार्थ बिंदु से सागर मधुर बनाऊं

हर स्वर से वायु में संगीत लहराऊं

हे मेरे काया की वीणा तु मुझमें समय का रंग चढ़ाएं 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" माधव " " माधव "

जो भक्त के लिए दौड़ कर आएं 🌷

जो दास के लिए द्रवित हो आएं 🌷

" माधव " " माधव "

जो सदा तत्पर रहे भक्त से मिलने 🌷

जो सदा त्वरित हो दास के लिए 🌷

" माधव " " माधव "

जो न काल भूलें न समय भूलें 🌷

जो न हाल सोचें न मोल न तोलें 🌷

" माधव " " माधव "

" माधव " " माधव "

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

तेरे चरणों में तेरे शरणं में 🙏

" माधव " " माधव "

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे मन से मैं कर रहा हूं

मेरा नाम हो रहा है

जगत के कितने मन

हर कोई का नाम हो रहा है

यही ही हर काल में

किसी कोई का नाम हो रहा है

कितनी सदियां बीत गई

वही पुराना नाम गा रहे है

आज का कोई नाम नहीं हो रहा है

कैसे मनचले कैसे कर्म निधान हम

न कुछ पाते न कुछ और ध्याते

करते रहते यूं बातें करते रहते यूं म्हाते

यही हमारा जीवन यही हमारी उपाधि

युग युग से गाते कलयुग है यह भाते

खुद ने बनाया कलयुग अंधते अंधते

खुद में न रहा विश्वास धूर्तते धूर्तते

पल पल गाते रहते है बिना कुछ उठते

" आपकी दुआ से सब काम हो रहा है

करते हो तुम कन्हैया मेरा नाम हो रहा है "

कैसे अंधे कैसे बंदे कैसे धंधे कैसे वंदे

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरे दिल को चुराकर श्याम कहां गए

मेरे प्रेम को बसाकर श्याम कहां गए

मेरे अंग को छूकर श्याम कहां गए

श्याम कहां गए? श्याम कहां छुपे?

श्याम तुम मन में बसकर तुम कहां जाओ

श्याम तुम दिल में जागकर तुम कहां जाओ

श्याम तुम प्रेम में घोलकर तुम कहां जाओ

श्याम तुम अंग में अमृतकर तुम कहां जाओ

श्याम यह मन एक ही तेरा

श्याम यह दिल एक ही तेरा

श्याम यह प्रेम एक ही तेरा

श्याम यह अंग एक ही तेरा

तु मेरा तु मेरा तु मेरा श्याम तु मेरा

श्याम तुम कहीं न जाओ

श्याम तुम कहीं न जा पाओ

श्याम तुम कहीं न जा सको

मैं तेरी तु मेरा ना हं

तु मेरा हां तु मेरा तु मेरा

यही है तेरा जिअरा 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे राधा रानी! तुम हम प्राण प्यारी! 🌷

तुम दर्श नित नित पाएं जुहारी! 🌷

तुम्हें बरसाना ढूंढयो ढूंढें राधा कुंड 🙏

वृंदावन ढूंढयो ढूंढें तटिया स्थान 🙏

मिली तु मुझे प्रेम मंदिर बांके बिहारी 🌷

मिली तु मुझे व्रजरज निधिवन धारी 🌷

अलग अनोखे अखंड राधा दुलारी 🌷

तुम संग प्रेम रत्न धन पायो बिहारी 🌷

तुम संग प्रेम रत्न धन पायो बिहारी 🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" जय श्री राधे " 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राधा "

एक मित्र है उन्होंने कहा यह " राधा " नाम लिखते तुम्हारे हाथ क्यूं कांपते हैं?

मैंने कहा " राधा " क्या है और कौन है? वह समझते समझते यह उम्र पर पहुंचा, पर जितना अपने में उतारता हुं उतना गहरा मैं अपने आपको टटोलता हूं।

" राधा " को टटोलना एक ऐसी आशिक़ी हो गई है कि ' तित नजर जाएं केवल " राधा " ही टटोलता हूं ' 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏

" राधा " " राधा " का मनन और लेखन में प्रेम असर जागती है जो मुझे कंपन अर्थात ऐसा स्पंदन जगाता है जो मेरी रुह से एक आग उठती है। यह आग की जलन मुझे अपने आपको मिटाकर “राधा" के शरण पहुंचातीं है। 🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज का जनरेशन 🙏
मेरा बेटा! मेरी बेटी! 🌷 🌷
हां! मेरा बेटा 👍 मेरी बेटी 👍
जैसे जैसे समय बहता गया
अपने मन को अपने आप की योग्यता मुजब परिवर्तित करता जा रहा है 🙏
हर कोई स्वार्थ भरें 👍
हर कोई अपेक्षा भरें 👍
हर कोई संस्कार भरें 👍
हर कोई अपने आपको श्रेष्ठ भरें 👍
कौन किसे क्या कहें!
ऐसा तो ऐसा - वैसा तो वैसा 🙏
बस यूं ही जीवन की धारा में बहते चलें 👍
कौन ज्ञानी! कौन अज्ञानी! हर कोई अपनी परिस्थितियों में चलता रहें 🙏
हर कोई अपने आप से सही 👍
समझते हुए भी न रोकें - टोंके - कहें 🙏
क्यूंकि सब होशियार 👍 हर शिक्षित 👍
हर सबसे समझदार 👍 हर सबसे निर्णायक 👍
द्रष्टि वृत्ति समांतर 🙏 हर कोई सलाहकार 🙏
🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷
" Too many Advisors, time motivation is a true synopsis. " 👍
बस चलते चलो - बस बहते चलो - आंखें झुकाएं - अधर चिपकाएं - मन रुकाएं 🙏
विडंबना 🙏 नहीं पता
विश्वास 🌷 नहीं पता
धर्म 🙏 नहीं पता
सत्यवादी हो कर जीते चलों 🙏
🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷 🙏 🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷 🙏 🌷

अकेले अकेले और अकेले 🙏
क्यूं?
गज़ब का जीवन!
जन्म पाया और एक छत के नीचे मिले
माता-पिता 🙏
भाई-बहन 🙏
दादा-दादी 🙏
चाचा-चाची 🙏
समाज 🙏
जैसे बड़े होते गया और प्राथमिक विद्यालय पहुंचे - हर कोई छूटने लगा 🙏
नया संबंध - शिक्षक - साथी विद्यार्थी - साथी समाज 🙏
जुड़ता चला जुड़ता गया
जुटता चला जुटाता गया
बस जीवन दौड़ना शुरू 🏃
सिखता गया - सिखाता गया
जीवन की आगमनता - विसर्जनता
अनेकों मिलें एक खोया
अनेकों खोजा एक बिछड़ा
मिलना खोना झेलना बिछड़ना
चलता रहा चलता गया
बस चलता गया 🚶
एक से अनेक - अनेकों से एक
एक उम्र पर सामाजिक धारा से ठहरा दिया या गया
बस! ठहर गया - रुक गया 🙏
कुछ भी करें - ठहरा दिया - ठहरा गया 🙏
बस! रुक गया 🙏
न चल सका - न बढ़ सका 🙏
रुका गया - रोका गया - थक गया 🙏
एक जगह बैठ गया 🙏 न खड़ा हो सका🙏
साथ गया - समाज गया 🙏
अकेला अकेला होता गया 🙏
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मूर्ख की नज़र अंधश्रद्धा भरें धर्म पर होती है

और

अपने आपको पहचान वाले की नज़र ज्ञान पर होती है 🌷🙏🌷

अति गहराई से टटोलो

संत तुलसीदास ज्ञानी थे भक्त थे

नरसिंह मेहता ज्ञानी थे भक्त थे

मीराबाई ज्ञानी थी भक्त थीं

कोई भी चरित्र जांच लें

ज्ञानी थे भक्त थे

संत कबीर

🌷🙏🌷

जो अंधश्रद्धा को अपने में पुराएं वह तो अज्ञानी और अधर्मी है 🙏

अनगिनत मनुष्य को फंसा कर अपना धंधा करता है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कैसी सत्यता है 🙏

मानव बिके धन दौलत मिलें 🙏

धर्म बिके सेवा मिलें 🙏

सत्य बिके मिलकत मिलें 🙏

इमान बिके प्रतिष्ठा मिलें 🙏

विश्वास बिके अंधश्रद्धा मिलें 🙏

हम कितने खुदगर्ज है कि हम क्या क्या पाते है 🙏

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह नैना - केवल योग्य देखने के लिए 🙏

यह कर्ण - केवल योग्य सुनने के लिए 🙏

यह नाक - केवल योग्य प्राणवायु के लिए 🙏

यह अधर - केवल योग्य कहने के लिए 🙏

यह मन - केवल योग्य दौड़ने के लिए 🙏

यह तन - केवल योग्य क्रिया करने के लिए 🙏

यह दांत - केवल योग्य चबाने के लिए 🙏

यह हाथ - केवल योग्य साथ के लिए 🙏

यह पैर - केवल योग्य कदम बढ़ाने के लिए 🙏

हां! अनोखा अदभुत और उच्चता के लिए 🙏

हां! अवश्य 👍

जिन्होंने ने किया उपयोग - उपभोग 🙏

उन्होंने आनंद, सुख और धर्म पाया 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

छूटते है तीर ऐसी नज़र कमान से
जो काष्ठ पाषाण पीगल जाएं 🙏

छूटते है तीर ऐसी नज़र कमान से
जो प्रेम विनंती शरणा जाएं 🙏

छूटते है तीर ऐसी नज़र कमान से
जो अंग अगन लग जाएं 🙏

छूटते ही तीर ऐसी नज़र कमान से
जो मेरा रंग तेरा हो जाएं 🙏

छूटते ही तीर ऐसी नज़र कमान से
जो विश्वास का सागर उमड़ जाएं 🙏

छूटते ही तीर ऐसी नज़र कमान से
जो वातावरण में पवित्रता महक जाएं 🙏

छूटते ही तीर ऐसी नज़र कमान से
जो आत्म मिलन दीपक प्रक्ट जाएं 🙏

छूटते ही तीर ऐसी नज़र कमान से
जो समर्पण फूल माला पहनाया जाएं 🙏

छूटते ही तीर ऐसी नज़र कमान से
" मैं " तुझमें समा जाएं 🙏

हे चित्त चोर कान्हा!
तु मेरा - मैं तेरा बस! यही अनुभव हो जाएं 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सूरज चले - चलता रहा

पृथ्वी चले - चलता रहा

चंद्र चले - चलता रहा

वायु चले - चलता रहा

जल चले - चलता रहा

समय चले - चलता रहा

चलता रहा - चलता रहा - चलता रहा

एक जन्म - जन्मों जन्म - चलता रहा

एक वंशज - वंशज वंशजों - चलता रहा

कहीं ओर - कहीं ओर - कहीं ओर

केवल एक अनुभूति पाईं

है भगवान! हर प्रभु! है इश्वर!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" पुष्टि मार्ग हृदय "

सोचा सोचता जाग उठा एक आत्मा

" पुष्टि मार्ग हृदय "

धैर्य से - विश्वास से और योग्यता से तय करे

मेरा हृदय - " पुष्टि मार्ग हृदय " है?

यह जिज्ञासा और सकारात्मक हेतु अर्थ है 🙏

आजकल कुछ ऐसा लिख देते है - जो अनुभूति आधारित है तो भी नकारात्मक द्रष्टि और वृत्ति से अधिक संभवित कर देते है 🙏

सत्संग को निडर और तटस्थता से सत्य सिद्धांत से निहारना चाहिए 🙏

" पुष्टि मार्ग हृदय " कितना अनोखा और अखंड सिमाचिन्ह है जो हमने श्री नरसिंह मेहता चरित्र में से अंशित पाया 🙏

श्री मीरा के चरित्र में से समर्पण पाया 🙏

श्री सूरदास के चरित्र में से द्रष्टि कोण से पाया 🙏

श्री कुंभनदास के चरित्र से स्पर्श पाया🙏

कितना अनोखा 🌷

कितना ज्ञानवर्धक 🌷

कितना जीवन दर्शक 🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

એક મહારાજ જે સદા તેમને દ્વારે જે આવે તેની પાસે ભેંટ લે 🌷 અચૂક ભેટ લેવાની જ 👍 કોઈ ને કોઈ પ્રકારે ભેંટ લેવી જ🙏

એક મંગળ પ્રભાતે શ્રી પ્રભુ એ તેમને સંકેત માં એવું કહ્યું - મહારાજ! આપ સદા ભેંટ લો છો જ - આ ભેંટ ની તુલ્યતા માં તમે તે મનોરથીને કંઈક આપો છો?

મહારાજ બોલ્યા - પ્રભુ આપનું આપેલું મને આપે છે એટલે સિદ્ધાંત આધારિત મારાથી કંઈક પણ નાં અપાય 🙏

શ્રી પ્રભુ મલકાતાં મુખે કહેવા લાગ્યા - મહારાજ! મારું જ આપેલું મને આપે છે તો તમે એનો સંગ્રહ કરી તેનો ઉપયોગ ક્યાં કરો છો?

અરે પ્રભુ! આપ સર્વ થી વિદિત છો, હું તેનો ઉપયોગ ક્યાં ક્યાં કરું છું તે આપ નજર સમક્ષ જ છે. 🙏

શ્રી પ્રભુ બોલ્યા - મહારાજ! આ તમારો શ્રેષ્ઠ પહેરવેશ, અંગ અંગ શૃંગાર, અંગ અંગ કાયાની સજાવટ, સોના ચાંદી અને હીરા જડિત ઘરેણાં અને માથે પાઘ પહેરી ક્યાં ક્યાં જાઓ છો - ફરો છો અને ચરણ ભેંટો સ્વીકારી સ્વ નામનું પર ચરિત્ર ભ્રમણ કરી બધું એકઠું મારા નામનું કર્યા કરો છો?

મહારાજ કહે - પ્રભુ આપનું અપમાન નાં થાય એટલે આ સેવક તમારા નામનું રટણ કરતાં સૌને આનંદિત રાખું છું.

ભગવાન બોલ્યા - તો આ એકઠું કરવા કરતાં સમાજ ઉપયોગી કાર્યો માં વાપરો.

મહારાજ કહે - અરે પ્રભુ! એ તો આપે જોવાનું કારણકે એ તમારી જવાબદારી છે. મારી જવાબદારી તો આ ધન, માન અને સન્માન ને માણી આપના આ વૈભવ ને વધારવાનું. 🙏

શ્રી પ્રભુ ખળભળાટ હંસી પડ્યા અને બોલ્યા - બેટા! તો હું જ હવે એનો રસ્તો કરું છું.

મહારાજ કહે - ચોક્કસ 👍

શ્રી પ્રભુ વિચારવા લાગ્યા શું રસ્તો કરું?

આપ કહો - શ્રી પ્રભુ ક્યા ક્યા રસ્તા કરશે? 🌷 🙏 🌷

ક્રમશઃ

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷 🙏 🌷

જે કટોરીનો ભોગ શ્રી ઠાકુરજી માટે સામગ્રી તરીકે આવી 🙏

જે એક રુપિયા શ્રી ઠાકુરજી માટે સેવા રુપ આવ્યો 🙏

જે ભેંટ શ્રી ઠાકુરજી માટે વ્યવહાર - નિર્વાહ માટે ધર્યો 🙏

શું આ સામગ્રી - દ્રવ્ય - વ્યવહાર નો ઉપભોગ કોઈ વ્યક્તિ સ્વ નિર્વાહ વ્યાપારીકરણ કરે તે વ્યક્તિ ને પુષ્ટિમાર્ગ અનુયાયી કે સેવક કે અધિકારી કહેવાય?

શ્રી વલ્લભાચાર્ય ચરિત્ર સ્વ નિર્વાહ - સ્વ વ્યવહાર - સ્વ જીવન શિક્ષણ, સ્વ જીવન વ્યવહાર સમાજ ઉત્થાન પ્રવૃત્તિઓ થી નિર્ભર થતી હતી.

એટલે જ સ્વ અર્થોપાર્જન નો પ્રાથમિક ભાગ - શ્રી ઠાકોરજી સેવા અર્થ - બાકીનો ભાગ સ્વ જીવન નિર્વાહ અર્થ છે.

એટલે કોઈ કોઈનું વારસદાર નહીં - સ્વ સ્વ પુરુષાર્થ થી નિર્માણ કરે અને તે ઉત્તમ સમાજ ઉત્થાન પ્રવૃત્તિઓ માટે સમર્પિત કરે 🙏

ન કોઈ હક્ક ધારક - હક્ક પાલક - હક્ક માલિક 🙏

પ્રથમ સિદ્ધાંત પુષ્ટિમાર્ગ નો 🙏

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

मेरे आस-पास अपने आप उगते हुए पौधों को देखा 🙏

मेरे आस-पास अपने आप बरसते हुए बरसात को देखा 🙏

मेरे आस-पास अपने आप तुटते हुए जमीन को देखा 🙏

मेरे आस-पास अपने आप जन्मते कीटक और मच्छरों को देखा 🙏

मेरे आस-पास अपने आप उड़ते हुए धूल रज देखी 🙏

मेरे आस-पास अपने आप महकती महक देखी 🙏

मेरे आस-पास अपने आप गूंजती आवाज सुनी 🙏

ऐसा क्यूं? कभी सोचा है? कभी जाना है?

यह अचानक! यह अनायास! यह अपने आप!

नहीं होता है 🙏

कुछ तो है! अवश्य है 🙏

बचपन से लेकर हम यह उम्र तक पहुंचें अवश्य कुछ न कुछ तो अचानक! अनायास! अपने आप की अनुभूति पाई ही है 🙏

जैसे अपने " मां " के चरण छूते

जैसे अपने " पिता " की उंगली पकड़े

जैसे अपने " भाई " को गले लगाते

जैसे अपनी " बहन " का आंचल छूते

जैसे अपने " गुरु " का दर्शन करते

जैसे अपने " मित्र " से बात कहते

क्या? 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे श्री नाथ!

एक बात कहूं? हां कहो 🌷

कभी कभी मुझे इतना डर लगता है कि तुम मुझे भूल न जाओ!

ओहहहह! ऐसा क्यूं?

नहीं पता - पर बहुत डर लगता है 😪

दिल बैठ जाता है - मन गुमसुम हो जाता है - और कुछ अच्छा नहीं लगता!

तो मैं क्या करूं?

तुम कुछ ऐसा करो जो मैं सदा तुमसे दूर न हो और तुम मुझसे कभी दूर न हो।

एक बात पूछूं?

पूछों!

तुमने किसी से प्रेम किया है?

हां!

किससे?

मैं नहीं जानता!

नहीं नहीं! जो है वह कहो

नहीं! मैंने यह पल तक कोई जगत या संसारिक से प्रेम नहीं किया 🙏

मैं तो केवल तुम्हें ही जानता हूं 🌷

ओहहहह! पर तुम तो जानते हो कि मैं तो कहींओ से और कितनों से प्रेम करता हूं 🌷 मैं कैसे किसीको प्रेम नहीं करु? हर कोई मुझे प्रेम करें या न करें, मैं तो तुम्हें भी चाहता हूं और हर कोई को 🌷

हां! बस इसलिए मुझे डर लगता है 😪

तुम्हें मुझ पर विश्वास है? मैं तुम्हारा हूं?

बिलकुल!

तो फिर डरना क्यूं?

डर मुझे तुमसे बिछड़ने का

डर तुम मुझसे बिछड़ जाओ!

ओहहहह! अब मुझे असर हो रही है तुम्हारे प्रेम कि।

क्रमश:

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" પુષ્ટિમાર્ગ " અલૌકિક અને સૈદ્ધાંતિક આલેખ 🙏

એક સમયે ગિરિરાજજી ઉપર શ્રી વલ્લભાચાર્યજી શ્રી શ્રીનાથજી ની સેવા કરતા હતા તે સમય ની ઘટના છે. 🙏

શ્રી વલ્લભાચાર્યજી નિત્ય સેવા અર્ચન સમર્પણ કરતા અને શ્રી શ્રીનાથજી ને આનંદ આપતા અને વૈષ્ણવો ને આનંદ કરાવતા.

સમય સમયનું કામ કરે અને શ્રી વલ્લભાચાર્યજી જગતનાં જીવોને જગાડવા પુષ્ટિમાર્ગ નું આયોજન કરે.

એક દિવસ આપે શયન આરતી કરી - ભોગ પ્રસાદ સિદ્ધ કરી શ્રી શ્રીનાથજી ને ચરણ સ્પર્શ નમન કરી પોઢાડી ને સ્વ સંધ્યા વંદન કરી સ્વ પ્રસાદ સિદ્ધ કરી સત્સંગ સિંચન કર્યું. સર્વે વૈષ્ણવો પોત પોતાના નિવાસસ્થાને પહોંચ્યા અને શ્રી વલ્લભાચાર્યજી શૈયા આસન પાથરી શ્રી પ્રભુ સ્મરણમાં સુવાનો પ્રયત્ન કરતા હતા. ત્યાં અચાનક તેમને સંકેત થયો કે આવતીકાલે મંગળ ભોગ ની સામગ્રી, રાજભોગ ની સામગ્રી પ્રમાણસર છે કે!

એટલે આપશ્રી કોઠારમાં ગયા અને જોયું તો અચંબિત થઈ ગયા! ઓહહહ! કોઈ સામગ્રી ન હતી. ન દૂધ, ન મિસરી, ન ફળ કે ન સુકો મેવો 🙏

તરત જ આપશ્રી રાત્રીનાં ચંદ્ર નાં અજવાળે અજવાળે શ્રી યમુનાજીનાં તટ પર આવીને તેની આસપાસ ઉગતી વનસ્પતિમાંથી કંદમૂળો અને શાકભાજી ચૂંટીને પોતાના નિવાસસ્થાને આવી - ભોગ સામગ્રી તૈયાર કરી. ત્યારબાદ મંગળ પ્રભાત ની પ્રાકટ્ય માં જે ગાય ગિરિરાજજી પર આવીને ભાંભરી તે સ્વર તરફ ઝડપથી પહોંચી ને દૂધ ની કટોરી ભરી તમામ વ્યવસ્થા કરી, પોતે સ્નાન શુદ્ધિ કરી અપરસ કરી શ્રી શ્રીનાથજી ને જગાડ્યા 🙏

શ્રી શ્રીનાથજી નાં મધુર સ્મિત થી તેઓ આનંદિત આનંદિત થઈ ગયા. ત્યાં જ અષ્ટ સખાઓ અને વૈષ્ણવો નો પગરવે આપશ્રી ને શ્રી શ્રીનાથજી દર્શન નાં સમય ની ટહેલ આપી. આપશ્રી એ શ્રી શ્રીનાથજી ને સ્વ સન્મુખ ધરી મંગળ ભોગની ટહેલ કરી. સહું સખાઓ અને વૈષ્ણવો મંગળ દર્શન આરતી માટે ઉત્સુક થયા અને ટકોરો થયો. ટેરો ખૂલ્યો 🙏 સહું અપલક દ્રષ્ટિ થી દર્શન કરતા કરતા આનંદ ઊર્મિલ પામવા માંડ્યા 🌷

હે વલ્લભ! આપને શત્ શત્ પ્રણામ 🙏

પુષ્ટિમાર્ગ સેવાનો અખંડ, અલૌકિક, અનોખો, અદભૂત અને શરણાગત સિદ્ધાંત 🙏

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

प्रेम दीवानी हूं मैं

मन की महारानी हूं मैं

सांस पर कान्हा कान्हा लिखूं

वह उच्छ्वास पर राधा

मेरी हर धड़कन उनसे चले

ऐसी हमारी प्रीत धारा 🌷

साथ साथ की स्वामिनी हूं

दास दास की दासी 🙏

प्रेम की डोरी ऐसी बंधि

श्याम रंग रंग रंगाई ❤️

कदम कदम उनसे चले

ऐसी हमारी प्रीत सगाई

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कहते कहते किनको कहें
यह नहीं वो
ऐसा नहीं ऐसा
वो नहीं वो
नहीं नहीं वो
नहीं नहीं यह
नहीं नहीं ऐसा
किसीको नहीं 🙏
कह दिया तो
ऐसा ऐसा था
ऐसा ऐसा है
ऐसा ऐसा हो सकता है - इसलिए 🙏
मैं जानता हूं 👍
मुझे पता है - तो भी
बस! थोड़ा ऐसा!

तुम आंखें खूली रख्खो तो ऐसा
तुम देखो तो ऐसा
यार!
बंध रक्खे तो - सदा के लिए 🙏
बंध रक्खे तो - तुमने मुझे क्यूं नहीं टोका?
बंध रक्खे तो - हां! तुम ऐसे ही हो

कितना मजबूत ज़माना!
कितना मजबूर ज़माना! 🙏

यही है जीवन का उजियारा 👍
यही ही है जीवन का अंधेरा 🙏
जिससे गुज़ारे हम जीवन सारा बसेरा 🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

હે નાથ! હાથ જોડી ક્ષમા માંગુ 🙏

તમે શરણ શરણ કછુ માંગ્યું

મમ પ્રિય જન ગણી અતિ આપ્યું 🙏

હે કૃપાળુ પરમાત્મા! કોડી થી કોડી

હું શરણાર્થી! કછુ ન ધરી શક્યો 🙏

એક એક દ્રષ્ટિ એક એક પુષ્ટિ

એક એક વૃષ્ટિ ન આપી શક્યો 🙏

હે કોડ કોડ પુરનારા! મમ માફ કરજો

આવું તમ દ્વાર વારંવાર કછુ યાચવા 🙏

નહીં ધરમ નહીં કરમ નહીં શરમ માં

ક્ષણ ક્ષણ રહ્યો ભરમમાં સર્વે સર્વા હું તણું

હે નાથ! સ્વાર્થ પદાર્થ યથાર્થ માયા માં

નવ જાણ્યું તમ સામર્થ્યતા 🙏

શરણ રાખ સ્મરણ આપ વરણ સાથ

ચરણ ચરણ શરણાગત શિશ નમાવવા દે 🙏

હે નાથ! હે વલ્લભ! હે ગિરિરાજ! 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

हे कान्हा!

तुझको देखुं

देखुं जिधर

फिर भी मुझको लगता है डर

तुम्हें झुलें में निहालुं

तुम्हें आंगन में निहालुं

तुम्हें द्वार पर निहालुं

धड़के दिल रह रह कर 🌷

फिर भी मुझको लगता है डर

तु बसा ऐसे नयन में

तु बसा ऐसे सांसों में

तु बसा ऐसे स्वरों में

तु बसा ऐसे लहरों में

तु सदा मेरे अंदर है

तु सदा मेरे साथ है

फिर क्यूं मुझको लगता है डर

कोई तो बताओं 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

🌷 🙏 🌷 Please forgive me 🙏

World renowned 🙏

Why are Indians not trustworthy?

Your response may be good great enhancement to every Indian. 🙏

" पुष्टि मार्ग " में

श्री श्रीनाथजी का स्वरुप क्या है?

श्री वल्लभाचार्यजी का स्वरुप क्या है?

श्री यमुनाजी का स्वरुप क्या है?

यह प्राथमिक स्पर्श अति आवश्यक है 🙏

किताबें - आज के गोस्वामी के प्रवचनों और जो हवेली दर्शन और प्रदर्शन तो व्यापारिकरण की मायाजाल है 🙏

अगर सच में अपने जीवन में पुष्टि योग्यता पानी है - सांसारिक सुख और शांति पानी है - जीवन की मूलत्वता जाननी है तो प्राथमिक जो हमारा जन्म जो कुटुंब में हुआ उनका मूलत्व जानिए 🙏

जो सामाजिक धर्म से बंधे है वह तथ्य जानिए 🙏

हमारा जन्म हुआ है उनकी सामार्थ्यता, यथार्थता, योग्यता जानिए 🙏

तो जन्म जीवन का सत्य समझ आएगा 🙏

यह ही मूल प्रारंभिकता है 👍

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

Dear President;

Bhartiya Janta Party

Delhi

Mr. J P Naddaji

Kindly draw your attention that above-mentioned film from Bollywood produce by Mr. Amir Khan.

My humble request to verify and take a decision to stop to realise.

This movie is directly blamed on Hindu society as well as worship of Pushti Marg.

If you are unable to take an action, we are going to fight for not showing on any media.

I am from Vadodara and Vadodara is a centre of Pushti Marg. Many of the devotees are requested you to stop for realise.

We wish to hear our request and take an action for non-realise.

Thank you.

Pankaj Shah

Vibrant Pushti

Mobile: 9327297507

मेरा एक दोस्त है 👍

जो सदा मेरे दिल में जागता रहता

एक दिन मैं अपनी गाड़ी में बैठ कर एक फेक्ट्री में बिजनेस डील करने जा रहा था

रास्ते में एक साइकिल सवार भी वो ही रास्ता से जा रहा था

मैंने उन्हें होर्न लगा कर साइड में जाने का इशारा किया और वह साइड पर चलाता गिरता गिरता बच गया

मैं उनसे आगे निकला और पिछे मिरर से देखा तो वह उतर कर चल कर आगे बढ़ रहा था

मैं हंस पड़ा और आगे निकल पड़ा।

थोड़े आगे एक चौराहे सिग्नल पर मैं रुका, आसपास देख रहा था इतने में वह साइकिल सवार को देखा

वह परसेवा से रेबझेब था

मैंने उनकी ओर देखा तो मुझे लगा अरे यह तो कोई जाना पहचाना सा लगता है

इतने में सिग्नल खुल गया और मैं आगे बढ़ गया

थोड़ी देर में मुझे जहां पहुंचना था वहां पहुंच गया और गेट किपर से विजिटर पास ले के रिसेप्शन पर पहुंचा।

रिसेप्शनिस्ट ने मुझे विजिटर रुम में बिठाया और कहा - आप जिसे मिलने चाहते है वह सर अभी आएंगे, आप जो मिलने का टाइम से जल्दी आएं हो इसलिए थोड़ा वैइट करना होगा। आपके लिए कोई ड्रिंक या चाय भेजती हूं।

मैंने थेंक्स बोला और मैं बैठ गया और विजिटर रुम को देखने लगा - कहीं और कंपनी की प्रोफाइल थी, कहीं और कंपनी के एचिवमेन्ट के फोटोग्राफ्स थे।

मुझे देखने में बहुत मज़ा आया, इतने में वह रिसिप्टनिस्ट ने मुझे कहा - सर! आइए! आपको जिस सर से मिलना है वह आपको मिलने के लिए बैठे है।

जैसे जैसे मैं आगे बढ़ता गया और चारों ओर देखता गया तो लगा वाह! मैं अच्छा ओर्डर यहां से पा सकता हूं।

जैसे वह साहब की केबिन में गया तो एक बिल्कुल स्वच्छ और सुंदर बातों से अपने एक कर्मचारी से बात कर रहे थे।

रिसेप्शनिस्ट ने मुझे बैठने को कहा और वह चली गई।

वह कर्मचारी भी जो बातें पूरी हुई और वह चला गया, और जैसे वह मेरी ओर मुड़े - मैं सहमा गया वह चेहरा देखकर। अरे! यह साइकिल सवार!

मुझे देखकर मुस्कुराते बोले - हेल्लो मिस्टर! कहो क्या कर रहे हो?

मैंने अपना विजिटिंग कार्ड दिया और कहा - गुड़ मोर्नींग!

उन्होंने भी शेक हेन्ड करके कहा कहिए

मैंने मेरी प्रोफाइल दिखाई और मेरी एचिवमेन्ट की बातें कहीं

उन्होंने कहा - वेरी गुड! आपको हमारी कंपनी से काम मिलेगा 👍 आप हमारे स्पलाय चैन हेड को मिलिए, मैं उन्हें आपके काम का एग्रीमेंट बना कर आपको रेग्युलर बेझिझ पर दे सकते है।

मैं शेक हेन्ड करके - थेंक यु करके बाहर निकला

मैं स्पलाय चैन के साहब को मिलकर ओर्डर ले कर, खुश हो कर चल रहा था - पर मेरा मन वही साइकिल सवार पर था।

जैसे मैं अपनी गाड़ी के पास पहुंचा इतने में वह रिसेप्शनिस्ट ने मुझे आवाज़ लगाई - सर! आपको हमारे डायरेक्टर सर मिलने को कह रहे है।

मैं तुरंत उनकी केबिन में पहुंचा तो वह जोर जोर से हंस रहे थे। मैं अचंभित रह गया। उन्होंने मुझे कहा पंकज! मेरे दोस्त! तुने मुझे पहचाना नहीं?

मैं सोच में ही रह गया और वह मेरे खभे पर हाथ रखकर कहा - पंकज! यार तुम मुझे भूल गया! मैं परितोष! तेरा दोस्त! जो तेरी किताबों से पढ़ता था। मेरे दोस्त मैं तुम्हें कैसे भूल सकता हूं।

मुझे सब याद आ गया! मैं उनसे बहुत नफरत और घृणा भरा रहता था, पर वह सदा दया और आनंद भरा चेहरा से ही मुझसे लगाव रखता था। उन्होंने मुझे उनकी सारी इन्ड्स्ट्रि दिखाई और हंसते मुस्कुराते चेहरे से बिदाई देने मुझे मेरी कार तक छोड़ने आया।

छोड़ते छोड़ते मैंने उन्हें पूछा - परितोष! तु साइकिल पर सवार होकर तेरी ओफिस आता है?

उन्होंने हंसते कहां - हां! क्यूंकि मुझे अपना बचपन और मेरे साथ काम करते कर्मचारियों को कभी अभिमान से न देखुं इसके लिए 🙏

मेरी नज़र झुक गई 🙏

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" અનન્યાશય " અનન્યાશય પુષ્ટિમાર્ગ નું અતિ અલૌકિક અને સૈદ્ધાંતિક સત્ય છે.

જે ક્ષણે જીવ બ્રહ્મ સંબંધ કરાવે તે જ ક્ષણ થી જીવ તે પરબ્રહ્મ ને સ્વ સમર્પણ કરે છે અને આ સમર્પણ માં તે જીવ વચન આપે છે - હું સદા આપ માર્ગ નાં નીતિ નિયમો અપનાવી તેનું શુદ્ધ અને પવિત્રતાથી પાલન કરીશ - સદા સમાંતર રહી સહું ને આનંદિત રાખીશ.

ન કદી કોઈ નો અન્યાશ્રય ની અપેક્ષા રાખીશ, ભલે હું કોઈ પરિસ્થિતિ કે અજ્ઞાનતા થી ભટકેલો હોઈશ તો પણ કદી અન્યાશ્રય કરીશ નહીં - આ પ્રથમ ચરણ છે. 🙏

" અનન્યતા " કેવળ મારા એક જ પરબ્રહ્મ - મારા એક જ આચાર્ય - મારા એક જ ગુરુજી 🙏

" મેરે તો વલ્લભ શ્રી શ્રીનાથજી દૂસરા ન કોઇ "

દ્રષ્ટિ માં અનન્યતા - પુષ્ટિ માં અનન્યતા - વૃત્તિ માં અનન્યતા - સૃષ્ટિ માં અનન્યતા "

આ પ્રેમ અને પુરુષાર્થ નો અલૌકિક સિદ્ધાંત છે.

ગોપીઓ એ કેટલી અખંડ પુરુષાર્થતા માં ડૂબેલી હતી -" જીત દેખું તીત શ્યામ શ્યામ - એક જ શ્યામ "

આપણો વિશ્વાસ અને પ્રેમ નો અખંડ ભાવ એટલે અનન્યાશય 🙏

મન - શ્રી કૃષ્ણ

તન - શ્રી વલ્લભ

નૈન - શ્રી શ્રીનાથજી

શરણ - શ્રી યમુનાજી

ચરણ - શ્રી ગોવર્ધનનાથજી

વરણ - શ્રી ગોપીઓ

ધરણ - શ્રી પુષ્ટિમાર્ગ દાસત્વ

આ છે અનન્યાશય 🙏

" મુઝે એક રાશ આવે ઓ સાંવરિયા ગિરધારી "

મુઝે એક પ્યાસ લાગે ઓ વ્રજરાજ બિહારી "

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷 🙏 🌷

जन्म पाया

बस चलना

चलते ही रहना

चलना ही चलना

आखिर तक चलना

अकेले चलना

एकांत में चलना

चलना ही है

चलना क्यूं?

चलना अपने स्व के लिए

चलना अपने मन के लिए

क्यूंकि मन तब ही स्थिर होगा जब हम चलेंगे 👍

चलना अपने तन के लिए

क्यूंकि तन ही एक ऐसा साधन है जो चला तो तन तंदुरुस्त तो हर कुछ दुरस्त 👍

चलना अपने धन के लिए

धन चले तो व्यवहार चले और हर व्यवहार से संसार सुखी 👍

चलना अपने जीवन के लिए

जीवन चला तो आनंद जगा 👍

सूरज चले धरती चले

चले गगन सितारें

वायु चले सागर चले

चले सृष्टि किनारे

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक मेच देख रहा था, जो अक्षरस् वह सिद्धांतों से युक्त और विश्वास से योग्यता भरा ही रहता गेम है, जिसमें हर ओर्गेनाईझर और खिलाड़ी केवल स्पोर्ट्स मेन शीप से ही खेलते हैं।

एक खिलाड़ी हार की ओर जा रहा था और दूसरा अपने विश्वास को बुलंद करके खेल रहा था और जीत की ओर बढ़ रहा था।

हारता खिलाड़ी ने हिम्मत जुट कर वह सामना करता करता गेम उनके प्रभुत्व में कर लिया।

दोनों खिलाड़ी अपनी अपनी कला को प्रदर्शित करते करते सारे प्रेक्षागृह को आनंद विभोर करते रहे और उत्तेजित में अपने अपने खिलाड़ी को जीत मिले ऐसी स्थिति बना रहे थे, इतने में वह हारता खिलाड़ी जीत गया।

सबने उन्हें बधाई दी और सारा प्रेक्षागृह खुश होते-होते और हारा हुआ खिलाड़ी को हिम्मत देते देते बाहर निकले।

इतने में जो हारा खिलाड़ी ने हिम्मत जुटा कर कहा - हे रमत प्रेमी ओं आपने हमें सहराया, अदभुत सपोर्ट किया हम आपके आभारी है - पर मुझे एक बात कहनी है आपसे - " यह जो खिलाड़ी जीता है वह इतना काबिल है और इतना विश्वास भरा है जो हम सबको रमत अर्थात गेम क्या है वह सीखाता रहता है और सीखाता रहेगा 👍

यही सत्य है जो उनकी नीति, उनकी द्रष्टि, उनकी कुनेह हम सबको सैद्धांतिक संस्कार और सत्य भरा है। मैं उन्हें बार-बार नमन करता हूं और आप सभी को विनंती करता हूं 🙏

हमेशा सकारात्मक और सत्य को ही स्वीकारना है। 👍

साथ साथ रहना - साथ साथ खेलना - साथ साथ जीना तो साथ साथ हारे तो नैतिकता से स्वीकार करके सत्य का ही आशरा लेना। यही ही हमारी पहचान है 👍

आप सब इतने जागृत हो कि हम भी कभी दूराचार, भ्रष्टाचार और अन्याय कर ही नहीं सकते - यही ही आपका आशीर्वाद है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" निर्णय "

हम हमारा जीवन का निर्णय खुद करे 👍

हम हमारा समाज का निर्णय खुद करे 👍

हम हमारा धर्म का निर्णय खुद करे 👍

हम हमारा जीवन निर्वाह निर्णय खुद करे 👍

हम हमारी जीवन शैली निर्णय खुद करे 👍

हम हमारा साथ का निर्णय खुद करे 👍

हम हमारी शिक्षा का निर्णय खुद करे 👍

हम हमारे नियमन का निर्णय खुद करे 👍

हम हमारा कुछ भी करने का निर्णय खुद करे 👍

हम हमारा हर समय का निर्णय खुद करे 👍

हम हमारा हर निर्णय खुद करे 👍

और जब मन चाहा न हो तो ठीकरा दूसरे के सर फोड़े

क्या हम इतने जागृत और बुद्धिमान हैं?

हम ही तय करे और हम ही मुकर जाएं! 🙏

सच! अदभुत और अति योग्यता भरे हैं हम 🙏

खुद न समझे तो ओरों को कितना समझाएं 🙏

बस! चौराहे चौंटे हर मनुष्य की नीति घड़े

और खुद को बार-बार पछाड़ें 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हम से ही है सबकुछ - हम से ही है देश 🙏

अपनी देश भूमि पर जीना ऐसे 🙏

हमें पता है कि कब कैसे बेरोजगार हो 🙏 तो जीना कैसे?

इसलिए अपने आपको इतना काबिल बनाओं की हम कभी बेरोजगार ही न हो 🙏

हम अपने बिजनेस में इतने जागृत और कुशल पारंगत हो कि हम जो करे या जो बनाएं वह उमदा और बाहर के टेक्निकल शिक्षितों हमें स्वीकारें 🙏

हमें पता है कि कब कैसे हमारा दस्तावेज झुठा साबित करें 🙏 तो जीना कैसे?

जो भी लिखो वह दो बार पढ़कर सही समझों 🙏 जो भी लिखवाओ तो चार बार समझ कर ही फाइनल करो 🙏

देश की व्यवस्था अर्धसत्य और असंमजस भरी हो 🙏 तो जीना कैसे?

तो हर व्यवस्था और व्यवहार में ऐसे निपुणता हासिल करो कि हम कोई झंझट में आए ही नहीं 🙏 सब व्यवस्था अपनी कुशलता पर निर्भर करो 🙏

अपने जीवन साथी 🙏 अपने संतान - अपने कुटुंब को सदा सत्य जीवन सिद्धांत से सुशिक्षित और सुरक्षित करो कि कोई हैरान ही न हो 🙏

कभी अपने आपको और अपने कुटुंब को भिखारी, दया आश्रित, नादार, मजबूर न होने दो 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तुमने जन्म लिया यह भारत भूमि पर 🙏

लोकशाही बंधारण का यह देश हर कोई को संरक्षण 🙏

बस! एक ही निष्ठा मेरे शरण में है - बस मैं खुश रखने कि कोशिश करुंगी 🙏

भूमि को बांटा, भूमि को उजाड़ा तो भी मैं उन्हें पालुंगी 🙏

मुझे बेंचें, मुझे अति भार करे मैं सहुंगी 🙏

विश्वासघात करे, विध्वंस करे तो भी ना मैं तरछोडुं 🙏

धरती फटी सीता समाईं, अहिल्या धरी पर न डगाई 🙏

रोंद रोंदने अनेकों राक्षस आएं, पर मैंने एक राम जगाया 🙏

संस्कार, संस्कृति, साक्षात्कार कराएं तो भी कलयुग लांधा 🙏

जात जात ने पात पात ने इतना छेद किया, तो भी मैं क्षमाई 🙏

इंतज़ार में हूं कहीं समय से एक सपूत जन्में 🙏

क्षीण क्षीण दर्द भरे हैं हर एक, कतरा कतरा कपाई 🙏

हे राम! एक सपूत, एक धर्म द्रष्टा वीर आ जाएं दिल्ली द्‌वार 🙏

तपस्या 🙏 तपस्या 🙏 तपस्या 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" सत्संग "

सत्संग वही कर सकता है जो सत से परिचित हो 🙏

सत्संग वही कर सकता है जो सेवक हो 🙏

सत्संग वही कर सकता है जो शुद्ध हो 🙏

सत्संग वही कर सकता है जो सुश्रुत हो 🙏

सत्संग वही कर सकता है जो समरस हो 🙏

सत्संग वही कर सकता है जो निरपेक्ष हो 🙏

सत्संग वही कर सकता है जो सुधर्मी हो 🙏

सत्संग वही कर सकता है जो सुरक्षित हो 🙏

सत्संग वही कर सकता है जो संपूर्ण हो 🙏

सत्संग वही कर सकता है जो समद्रष्टि हो 🙏

सत्संग वही कर सकता है जो सुशिक्षित हो 🙏

सत्संग वही कर सकता है जो सुशील हो 🙏

सत्संग वही कर सकता है जो सुनिश्चित हो 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक देशवासी बताओं 🌷🙏🌷

कहते है हर कोई हो! 🌷🙏🌷

बतंगड़ करते हम बातें बनाते रहते है

इसलिए हम हिंदू है 🙏

फिजूल समय खर्च करके हम खुद को बर्बाद करते है

इसलिए हम हिंदू हैं 🙏

हम स्नातक हुए जो शिक्षा में, वह शिक्षा को छोड़कर पैसे के लिए दूसरा काम करे

इसलिए हम हिंदू है 🙏

हम संबंध बनाएं साथ छोड़ने या तोड़ने

इसलिए हम हिंदू है 🙏

हम बोले विश्वास से पर करे विश्वासघात से

इसलिए हम हिंदू है 🙏

धर्म को एक मज़ाक समझे

इसलिए हम हिंदू है 🙏

वर्ण को अज्ञान समझे

इसलिए हम हिंदू है 🙏

कोई आगे बढ़े उन्हें निचे गिराएं

इसलिए हम हिंदू है 🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

एक ही वाक्य बोले

भगवान है तो क्या डरना 🙏

ऐसी अहवेलना करे

इसलिए हम हिंदू है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नहीं करो ऐसा कभी कोई विचार से

नहीं करो ऐसा कभी कोई काम से

नहीं करो ऐसा कभी कोई स्वार्थ से

नहीं करो ऐसा कभी कोई वृत्ति से

नहीं करो ऐसा कभी कोई द्रष्टि से

हिंदू तो परमेश्वर के प्रेमी हैं

सत्य से रहे - शिस्त से रहे - विश्वास से रहे

तो हर कोई गर्व से जुड़े - हम हिंदू है 🙏

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" दूसरा "

हर नैनों के कोने में कोई दूसरा

हर मन के पट पर कोई दूसरा

हर ख्याल के आहट पर कोई दूसरा

हर ख्वाब के सिमट में कोई दूसरा

हर चेहरे के पीछे कोई दूसरा

हर हंसीं के गुल में कोई दूसरा

हर नज़र के तीर में कोई दूसरा

हर अधर की चूंभंन पर कोई दूसरा

हर गले की माला में कोई दूसरा

हर उंगली की कांट में कोई दूसरा

हर हथेली के खूजली में कोई दूसरा

हर विचार की भूमिका में कोई दूसरा

हर स्वर की गूंज में कोई दूसरा

हर अक्षर की समझ में कोई दूसरा

हर धड़कन की धून में कोई दूसरा

हर तन के रंग में कोई दूसरा

हर पायल की खनक में कोई दूसरा

हर दिल की प्रीत में कोई दूसरा

हम कैसे? क्यूं ऐसे?

हर कोई क्यूं ऐसा? ऐसा क्या है रिश्ता?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आज नाथद्वारा गयो
कल जाऊं गोकुल वृंदावन
परसों जाऊं गिरिराज गोवर्धन
नरसो जाऊं मथुरा
ऐसो कियो व्रज चौरासी कोस
कहे माधव मुकुंद!
फिरते रहो घुमते रहो
अपने आपको घुमाते रहो
न मिलुंगा कोई भव में
जो मुझे ढूंढते भटक्यो 🙏
मैं तो हूं तेरी नैन अटरियां
मुझे नैन में बसाईयों
मैं तो हूं तेरे मन महलियां
मुझे मन में बिठाइयों
मैं तो हूं तेरे दिल धडकियां
मुझे दिल में जगाईयों
यही है मेरी प्रीत
यही है मेरी रीत
यही है मेरी मित
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
श्याम! गोविंद! गोपाल! मैं
कृष्ण! कन्हैया! सांवरिया! मैं
तु ही सखी मन मोहन भाई 🌷
तुझसे ही मेरी प्रेम ज्योति ❤️
ठहर स्व यमुना तट!
मैं सदा खड़ा वही बंसी वट
काहे तु भटक भटक अटक लटक 🙏
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक नज़र उनकी और मैं लुट गई
इतनी भीड़ में मैं धीरे धीरे क़तार में खड़ी
एक एक कदम बढ़ाती हूई
नाम जप स्मरण करती हूई
नैनों में मिलने की तरह
अधर को मिलने की प्यास
मैं चलती रही चलती रही
एक धक्का इधर और
एक धक्का उधर
लुटकती लथडती तड़पती
मैं उनके सामने
जैसे नज़र ऊंची भरी
उनकी नज़र टकराई
बस! नहीं पता
मैं कौन और कहां
उनकी एक नज़र मुझे क्या कर गई
न मैं मैं रही
अब
मैं कहीं की नहीं
मैं जीत नज़र उठाऊं
केवल एक ही मुखड़ा
कोई कहें
अरे! इधर तो देख
अरे! उधर तो देख
न देख पाऊं और किसीको
हे नाथ! मैं स्थिर हो गई उनके सामने 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ढूंढने निकला था " भगवान " को
मंदिर पहुंचा 🙏 हर एक को " जय श्री कृष्ण " करके गर्भ गृह में पहुंचा तो एक विग्रह श्रृंगार किये खड़ा था और हर कोई उन्हें नमन करके अपनी श्रद्धा और विश्वास को कायम करके गर्भ गृह से बाहर निकल रहे थे। 🙏
मैं भी पहुंचा और यही ही क्रिया करते आगे बढ़ रहा था इतने में कुछ अजीब सा हुआ कि मेरे नैना अपलक हो कर एक ही द्रश्य पर अटक गये। मैं स्थिर हो गया और जो द्रश्य था कि वहां जो मुख्याजी थे वह सबसे कोई विनंती कर रहे थे, वहां के जो भीतरिया थे वह कोई अपेक्षा कर रहे थे और सामने एक लोहे की पेटी रखी थी उस पर लिखा था 'भेंट '। मैं स्थिर खड़ा रह कर मेरे नैना को वह विग्रह की ओर किया तो वह मुस्कुरा रहे थे, और संकेत कर रहे थे - यहां हर कोई कुछ न कुछ मांगने के लिए आते है 🙏 तुम भी वही ही हो। 👍
मैं झट से बाहर निकल गया और सोचने लगा - हर कोई के मन में अपेक्षा है कि यहां ही मिलेगा👍 अर्थात जो आया उन्होंने मांगा 👍
सालों साल बित गएं 🙏
एक दिन ऐसे ही मैं मंदिर पहुंचा और पता चला कि यहां मनोरथ है - उत्सव है - कुछ भेंट लिखवाओ। मैं सोच में पड़ गया कि यह अजब गजब की दुनियादारी है जो जिते जिते निभानी है 🙏 नहीं नहीं! इस रुढिचुस्तता में बदलाव लाना चाहिए 🙏
मैं वह विग्रह के सामने स्थिर हो कर बैठ गया, समय की मर्यादा में संकेत हुआ - जो तेरे में हिम्मत है तो हर कोई आने वाले को कह दे - यहां कोई कुछ भी न दे - न भेंट - न सेवा - न सेवकी! अगर ऐसा हुआ तो मैं अवश्य सबको सुखी कर सकता हूं 👍
मैं अचंभित हो गया और सबको अपनी मर्यादा से कहने लगा 🙏
तो क्या हुआ पता है - मुझे वह मंदिर से सभी ने निकाल दिया और मुझे मूर्ख, अज्ञानी, नास्तिक समझ कर धकेल दिया। 😪
मैं सन्न रह गया 🙏 और दूर खड़ा रहा। इतने में आवाज़ आई - मेरे परम भक्त! यह सब अंधे है, द्रष्टि हिन है। मुझे भटक भटक कर ढूंढते है पर मैं तो तेरे सत्य पुरुषार्थ में हूं और जो सत्य का आचरण जिन्होंने किया मैं उनमें हूं 🙏
मेरे प्रिय जन!
मैं तेरे योग्य विचार में हूं 🙏
मैं तेरे सत्य पुरुषार्थ में हूं 🙏
मैं तेरे सैद्धांतिक संस्कार में हूं 🙏
मैं तेरे निर्मोही व्यवहार में हूं 🙏
मैं तेरे साथ साथ चलता रहता हूं 🙏
मेरे कदम अपने आप गर्भ गृह पर चल पड़े, जैसे विग्रह पर नज़र रख्खी एक अटहास्य सुना और आवाज़ गूंजी - यही श्रद्धा और विश्वास से योग्यता पा कर भक्ति करना 👍
मैं नतमस्तक होकर दंडवत प्रणाम करके आनंद उर्मि भरा मस्त हो गया 🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक बार जगत के पिता दरबार भर कर जगत के हर जीवों की रहन चलन - जीवन धोरण - व्यवहार व्यवसाय - राग अनुराग - धर्म कर्म का विहांगन करते थे।

मंत्रीजी ने कहा - हे भगवंत! जगत का एक मानव जीव योनि ऐसी है जो हर एक के जीव को

१. अपनी मिल्कत समझते है

२. अपना खोराक समझते है

३. अपना गुलाम समझते है

जगत पिता अचंभित रह गए। मेरे दरबार में सब जीव एक समांतर जीवन शैली और एक समान उपाधि से सम्मानित है तो जगत के पुष्ट भूमि पर ऐसा क्यूं!

सेनापति ने बताया कि हे भगवंत! धरती के जीवों में मानव जीव योनि स्व को जगत का कर्ता हर्ता मानते है। वह किसी से डरते नहीं है। वह अपने आपको सर्व श्रेष्ठ बुद्धि जीव समझते है और इतने आविष्कारों से झझुमते रहते है और गर्व से कहते रहते है - हमने किया इसलिए हम सर्वोत्तम है।

जगत पिता ने कहा - तो अपने जगत लोक में इतना उपद्रव क्यूं है? कोई जीव वापस धरती पर जाने को तैयार नहीं है, ऐसा क्यूं?

धर्माचार्य ने कहा - भगवंत! धरती पर धर्म का अनुपालन नहीं है। आपने जीतने अवतार धरे वह अवतार को वह सत्य में स्वीकारते नहीं है और उनकी योग्यता पहचानते नहीं है। सब अपने आपको ही जगत का मुख्या - जगत का रक्षक - जगत का मालिक समझता है।

ओहहहह! जगत पिता तुरंत आश्चर्यचकित हो कर अत्यंत विस्मय हुए। सोचने लगे ऐसा क्या किया जाय - जिससे यह जगत के जीव आनंदित रहे! ख़ुश रहे! सुखी रहे!

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

आप अपने सूचन अवश्य बताएं 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" वैष्णव " गहराई से टटोलो की यह संस्कार से हम जन्म से जुड़े है तो हमारा चित्त, प्राण, अंतःकरण, काल, विशुद्धि हुआ होगा कि हम " जन्म से वैष्णव " 🙏
यह वैष्णव का अर्थ तो श्री नरसिंह मेहता ने अलौकिक और योग्य बताया क्यूंकि वह संस्कार से वैष्णव थे।
अति आत्मचिंतन से सोचे कि उनके बाद कोई वैष्णव क्यूं न हो पाये?
१. आचार्य न उद्भवोत
२. शिक्षा न शिक्षित
३. स्व ज्ञान न जागृति
४. सत्य न परिमित
हमारे माता-पिता, हमारे पूर्वजों, हमारे गुरुवर, हमारे साथ ज़ीने वाले ऐसी शैली से प्रभावित होकर जी रहे है कि उन्हें हम सत्य समझते, स्वीकारते और अपनाते हम भी यही राह पर चल पड़े।
जिससे जो
कुटुंब द्रष्टि
पूर्वज द्रष्टि
गुरु द्रष्टि
और
साथी द्रष्टि से
हम अपना बंधारण बांधते जिते रहते है। 🙏
फ़िर तो हम भी कहते रहते है
१. इश्वर जो करें और कराएं
२. नसीब हमारा
३. जो भाग्य में है यह है
४. फल की इच्छा क्यूं करना
आदि आदि कहते रहते है। 🙏
नहीं नहीं 🙏
" वैष्णव " तो वह है जो " परब्रहम " के साथ संबंध जोड़ कर उन्हें अपने घर का प्रमुख प्रतिनिधि बनाकर उन्हें कभी छोड़े नहीं - तिरस्कृत न करें - सगवडी न करें - मनमानी न करें - मजबूर न करें - विकृत न करें - पथभ्रष्ट न करें - कलंकित न करें - व्यापार न करें 🙏
यही सिद्धांत है - " वैष्णव " 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हे मनमोहना थामलों
हे कृष्ण कन्हैया जानलों
तुम्हारी हूं तुम्हारी थी तुम्हारी रहूंगी सदा

बांसुरी की धून पर
धड़कनों की थनक पर
विरह प्रेम की तड़प पर
भटक भटक कर ढूंढूं कहां?
जीवन बन गया है एक विरानीयां
हे मनमोहना थामलों
हे कृष्ण कन्हैया जानलों
तुम्हारी हूं तुम्हारी थी तुम्हारी रहूंगी सदा

यमुना का नीर थपाटें
गोवर्धन की शीला आथडें
रज रज व्रज उड़े जहां
निहालु प्रिये श्याम कहां कहां?
प्रेम बिखर गया है तु जहां जहां
हे मनमोहना थामलों
हे कृष्ण कन्हैया जानलों
तुम्हारी हूं तुम्हारी थी तुम्हारी रहूंगी सदा
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह रचना माननीय महान गायक - संगीतकार " श्री हेमंत कुमार " के गाएं गीत आधारित है - न तुम हमें जानो - न हम तुम्हें जाने - मगर लगता है कुछ ऐसा - मेरा हम दम मिल गया 🌷को अक्षरांजली से समर्पित 🌷🙏🌷

" सन्मुख कीर्तन "

सन्मुख कीर्तन कैसे और कहां कहां?

१. श्री प्रभु सन्मुख - दर्शन समय

२. श्री प्रभु गर्भगृह - मंगल बेला - शयन काल

३. श्री प्रभु चिंतन - कोई भी समय

४. आचार्य सन्मुख

५. गुरु सन्मुख

६. मनोरथ सन्मुख

८. सेवा सन्मुख

९. माता-पिता सन्मुख

सन्मुख कीर्तन क्या है?

सन्मुख कीर्तन ज्ञान भाव प्रेम लीला है

जो केवल समर्पण होने के लिए ही है 🙏

इनमें केवल आह्वान - विनंती - विरह वेदना और कठोरता है।

सन्मुख कीर्तन वही रच सकते और गा सकते है जो परम प्रिय को समर्पित है।

इनमें न व्यवहार है

इनमें न व्यापार है

केवल तत् सुख - परम सुख है 🙏

अष्टसखा - राधा सखीयां - गोप गोपी वृंद

यह सर्वे समर्पित थे 🌷🙏🌷

गृह सेवा में जो सेवक सेवीका जो सन्मुख कीर्तन से आह्वान - विनंती और कठोरता धरती है उनका केवल समर्पण ज्ञान भाव होता है। 🙏

यही ही योग्यता और सत्यता है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" મહારાજ " કોર્ટે સ્ટે હઠાવ્યો 🙏

કાયદાકીય રીતે અને રુહે જે નિર્ણય આવ્યો 🙏

ભલે કોઈપણ સ્વીકારે - અથવા મજબૂર છે. 🙏

આપણે સ્વ એટલે જેઓએ " પુષ્ટિમાર્ગ બ્રહ્મસંબંધ કરાવ્યો છે તે પોતે આજની ક્ષણે જે રીતે જીવન જીવે છે અને જે આજના બાળકો ઉપર જે વિશ્વાસ મૂકે છે તે સ્વ ને યોગ્ય લાગે છે?

વિચારીયે

1. તેઓ કદી " જય શ્રી કૃષ્ણ " સ્વીકારે છે - ના

કેમ - કારણકે તેઓ સ્વ ને શ્રી કૃષ્ણ કહેવડાવે છે. 🙏

2. તેઓ કોઈ પણ મનોરથ, ઉત્સવ, પાટોત્સવ કે પ્રાગટ્ય ઉત્સવ કરે છે ત્યારે સ્વ જ સર્વસ્વ શ્રી કૃષ્ણ છે, ભલે દર્શન તમે જે પ્રસ્થાપિત વિગ્રહ છે તેના કરો પણ શ્રી કૃષ્ણ તો હું જ છું - એવું નક્કી કરે છે અને સમાજ ને સ્વીકાર કરાવવા ફરજ પાડે છે.

3. ખરી રીતે તો વૈષ્ણવ જો સ્વ ને સ્વીકારતા હો તો આવા આડમ્બર નો વિરોધ કરીને સત્ય નું પ્રકાશન સ્થાપવું જોઈએ.

4. શ્રી વલ્લભાચાર્યજી એ તો વૈદિક સનાતન પદ્ધતિ થી જ આ ધર્મ નું સંસ્થાપન કર્યું છે, સત્ય સિદ્ધાંતો આધારિત જ પ્રાગટ્ય કર્યું છે. 🙏

5. આજનાં આંધળાપણું ને સ્વીકાર કરી ને સ્વ નિમ્નતાનાં જન્મ ચક્કરમાં કેમ ફસાવવું?

વિચારી લો 🙏

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷 🙏 🌷

સત્ય છે તેને સ્વીકારીએ તો જ સર્વથા પરિવર્તન આવે. ભલે ને ભૂતકાળ ગમે તે હોય પણ જો સત્ય નાં સિદ્ધાંતો થી તેને સ્વીકારીશું તો ગમે તેટલો અંધકાર હશે તે અવશ્ય દૂર થાય જ.

ધર્મની પરંપરા, અંધશ્રદ્ધા અને તેનાં જે પરિણામો ભોગવી ભોગવી ને જો તેનું નિરાકરણ લાવવા નો પ્રયત્ન નહીં કરીએ તો આવનારી પેઢીઓ, વંશજો સર્વથા દૂર થઈ ને એવા અંધકાર નાં વમળ માં ઘુમરાઈ જશે કે આપણે કોણ અને આપણે કેવા તે જ ખબર નહીં હોય.

સંસ્કાર સંસ્કૃતિ ની વાતો કરીએ, ટોળે ચોઉટે વિમર્શ કરી એક બીજાને સલાહ આપીએ પણ સુધારો નાં થાય તો આપણે કોણ અને આપણો સમાજ કોણ?

ગુરુઓ પોતાની વ્યક્તિગત મિલકતો માટે કોર્ટે જાય - આ મિલકતો સમાજની તો પણ લડે. તે ધર્મ કે સમાજ ને કેવીરીતે સુધારે? આજે કેટલાં પ્રમાણમાં કુટુંબો તૂટ્યા!

ધર્મ રક્ષા - ધર્મ શિક્ષા - ધર્મ વિશ્વાસ માટે છે નહીં કે એક બીજાને લૂંટવા.

ઉંમર વધતાં વધતાં સત્ય ની સમજ અવશ્ય આવે જ ચાહે તે ધર્મ ગુરુ હોય, નેતા હોય, સમાજ આગેવાન હોય કે પ્રતિષ્ઠિત વ્યક્તિ હોય.

દૂષણ દૂર કરે તે જ વૈષ્ણવ 🙏

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" गृह सेवा " श्री वल्लभ! 🌷🙏🌷

अदभुत! अलौकिक! शरणागति 🙏

एक व्यक्ति अपनी भावना और समझ से एक श्रीनाथजी का चित्रजी कोई ऐसे ही कोने में पड़ा - हाथ जोड़कर - बिनती कर उठा लेता है। और अपने घर पधराता है। न उन्हें ज्ञान है, न उन्हें पहचान है। एक कोख में रख कर उनका दर्शन और पूजा कर, घर में न कोई और था इसलिए वह ताला लगाकर वह अपने काम में जुड़ जाता है। यही उनका नित्य क्रम हो गया।

ऐसे कहीं समय बीत गया। एक दिन उनका एक मित्र ने कहा

दोस्त! कभी अपने घर बुलाओ, तुम्हारा घर देखें।

व्यक्ति ने कहा

दोस्त! हां! हां! कभी भी आओ, मैं अकेला न कोई जंजाल है और न कोई मिल्कत! कभी भी आओ 🙏

दोस्त! चल आज ही चलते है, और दोनों घर आए। जैसे दरवाजा खुला तो दोस्त खुश खुश हो गया। तुरंत बोल उठा - दोस्त! यहां तेरे साथ कौन रह रहा है?

व्यक्ति अचंभित हो कर कहा - मित्र! मैं अकेला ही रहता हूं। न कोई इस संसार में मेरा - न कोई इस जीवन में मेरा। बस मैं अकेला 🙏

नहीं नहीं मित्र! कोई यहां अवश्य रहता है - यहां की महक - यहां का तेज कहता है - तेरे साथ कोई है।

व्यक्ति विस्मय हो गया और शांत और सौम्य से उन्होंने मित्र को अपना कमरा बताया और कहा - तुझे कोई दिखाया जो यहां मेरे साथ रहता है?

वह दोस्त की नज़र कोने में बिराजे श्रीनाथजी के चित्र पर पड़ी और वह नतमस्तक हो गया 🙏

दोस्त! यह जो बिराजे है वही तेरा साथी है 🙏

व्यक्ति ने कहा - दोस्त! यह रास्ते के कोने पर थे मैंने उन्हें यहां बिठा दिया 🙏

क्रमश:

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

दोस्त ने कहा तुने रास्ते से उठाया!

पहले तो मैं तुझे प्रणाम करता हूं 🙏

हमारी विरासत - हमारी संस्कृति - हमारे संस्कार हमें ही संभालने और संवारने है 🙏 जो तुने निभाया 🙏 और निभाता है।

तुम्हें पता है - यह चित्रजी के रुप में पुष्टि साक्षात्कार है। श्री वल्लभ! जब कभी कोई स्थानक कथा सत्संग और कभी कोई स्नानार्थे नदी और तालाब में पहुंचते थे तो उनके पीछे पीछे ऐसे कितने स्वरूप खींचें खींचें उनके पीछे दौड़ते थे 🙏

पुष्टिमार्ग की यह अलौकिकता श्री वल्लभ सैद्धांतिक आधारित आज तुम्हारे यहां सिद्ध हुईं है 🙏

मेरे मित्र! तुम वैष्णव हो 🙏

वैष्णव अपने मन से - अपने तन से - अपने व्यवहार से - अपने कर्म से ही हो सकते है 🙏

तुम्हें श्रीश्रीनाथजी के चित्रजी में कितना विश्वास है यही मूल पुष्टि संस्कार है - साक्षात तुम्हारे घर बिराजने पधारे - कितनी अनोखी कृपा 🙏

हमारे वैदिक धर्म की यही पहचान है, इसलिए तो श्री वल्लभ ने कभी कोई बाह्य माया - मिल्कत, पैसा, सोना, मान सम्मान, ऊंच नीच जैसा कुछ भी अपने पास न रख्खा। जीव को ज्ञान, जीव को भाव और जीव को पुष्टि संस्कारी करना ही अपना कर्तव्य प्रस्थापित किया है।🙏

यही ही सत्य है - सिद्ध है 🙏

क्रमश:

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

માતા પિતા ને " જય શ્રી કૃષ્ણ " કહેવાય 🙏 જીવ જીવન અને પ્રથમ આચાર્ય - ગુરુ માતા પિતા છે. જે વ્યવહારુ નથી કે અપેક્ષિત નથી. સનાતન ધર્મ કે વૈદિક ધર્મ માતા પિતા ને પ્રાથમિક આચાર્ય સૈદ્ધાંતિક રીતે સ્વીકારે છે. તો સંપ્રદાય પ્રતિષ્ઠિત વંશ પરંપરાગત હોય - જે ધર્મ સૈદ્ધાંતિક નિપુણ ન હોય તો પણ એમને વિવેક થી સ્વ યોગ્યતા પાઠવીએ " જય શ્રી કૃષ્ણ " કહીને. અનોખી અને સત્ય આધારિત સન્માનિત પ્રતિક્રિયા છે. 🙏

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷 સત્ય - સૈદ્ધાંતિક - વિશ્વસનીય 🙏

ગુરુ શ્રી વલ્લભ 🙏

આચાર્ય શ્રી વલ્લભ 🙏

શ્રી દામોદરદાસ હરસાનીજી એ પ્રમાણિત કર્યું પણ ખૂબ ચિંતન થી વિચારો કે

શ્રી વલ્લભાચાર્ય કે પ્રાકટ્ય શ્રી શ્રીનાથજી બંન્ને પરમ તત્વો એ ભક્ત માટે એક એવો ભાવ કે શબ્દ નથી બોલ્યા 🙏

એટલે જ શ્રી વલ્લભ - ગુરુ છે એટલે ભક્ત માટે શ્રી શ્રીનાથજી નું પ્રાકટ્ય થયું.

કેટલી અનોખી લીલા છે 🙏

ગુરુ કૃપા થી શ્રી ભગવદ્ કૃપા 🙏

શ્રી વલ્લભ અને આ ગુરુ પદ સમક્ષ શ્રી ઠાકોરજી ભક્ત થી પરાધીન થયા.

કેટલાય દૃષ્ટાંતો છે કે શ્રી પ્રભુ ભક્ત થી પરાધીન થયા. ભક્ત નું સામર્થ્ય વધાર્યુ.

આ જ સિદ્ધાંત અને સત્ય કોઈ પણ પુષ્ટિ વ્યક્તિ કે કોઈ જીવ સ્વીકારે - અપનાવે તો અવશ્ય તે વૈષ્ણવ છે અને તે પરબ્રહ્મ પુષ્ટિ વંશ અને કુળ છે. 🌷🙏🌷

6/26/24, 8:39 PM - Pankaj Shah: https://youtu.be/S5rn85RMTOk?si=pZAJDhLHQqIjYZz1

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

पुष्टिमार्ग - जहां " निधि स्वरुप " बिराजते है वह स्थली को मंदिर के बदले 'हवेली 'क्यूं कहते है?

जैसे

श्री श्रीनाथजी हवेली

श्री द्वारकाधीश हवेली

श्री नवनीतप्रियाजी हवेली

श्री कल्याणरायजी हवेली

श्री गोवर्धननाथजी हवेली

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

रविवार है श्री राधा रमणजी
सोमवार है श्री शामळीयाजी
मंगलवार है श्री मदनमोहनजी
बुधवार है श्री बांके बिहारीजी
गुरुवार है श्री गोविंदरायजी
शुक्रवार है श्री श्यामसुंदरजी
शनिवार है श्री श्यामा श्यामजी
जय जय श्री व्रज रस जगाई वैष्णव की जय 🙏
रविवार है श्री राजाधिराज द्वारकाधीश जी
सोमवार है श्री साक्षी गोपाल जी
मंगलवार है श्री मदनमोहनजी
बुधवार है श्री बंसीधरजी
गुरुवार है श्री गोवर्धनजी
शुक्रवार है श्री सुदर्शन जी
शनिवार है श्री सांवरियाजी
जय जय श्री पुष्टि पथ वैष्णव की जय 🙏
रविवार है श्री वल्लभ रायजी
सोमवार है श्री विठ्ठल नाथजी
मंगलवार है श्री श्रीनाथजी
बुधवार है श्री यमुनाजी
गुरुवार है श्री गिरिराजजी
शुक्रवार है श्री अष्टसखाजी
शनिवार है श्री सुबोधिनीजी
जय जय श्री पुष्टि वैष्णव की जय
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

पुष्टिमार्ग के पाया की इंट हमें समझनी आवश्यक है तो ही पुष्टिमार्ग के सिद्धांत में आनंद और जीवन विश्वास भरा होता है। 🙏

हम अपने आप को वैष्णव समझे तो यह अवश्य समझना आवश्यक है कि " हवेली " क्यूं? और मंदिर क्यूं नहीं?

हम जब भी दर्शन करने जाते है तो कहते है - मंदिर जाते है - हवेली नहीं कहते क्यूं?

श्री वल्लभाचार्य जी के पथ को गहराई से समझें तो हम अवश्य मूल वैष्णव रुप को पाएंगे 🙏

एक वैष्णव ने 'नंदालय' कहा - एक व्यक्ति ने कहा - हवेली और मंदिर - क्या फर्क पड़ता है?

एक व्यक्ति ने कहा - दर्शन करना मुख्य है, चाहे कहीं बिराजे!

बुरा मत लगाना 🙏

इसलिए हम क्षणिक पाते है और अधिक खो देते है 🙏

यह किताबी रीत नहीं पर साक्षात अनुभूति का स्पर्श है 🙏

हवेली से एक गर्भित वैभवता और विविधता आती है 🙏जो दर्शन, सेवा, मनोरथ और उत्सव जैसा वातावरण होता है - जो कोई पुकार रहा है ऐसा भास होता है और हम खिंचें चले जाते है - आनंद उल्हास भरे 👍

🌷 अनुभव 🌷 करलो 🙏

क्रमशः 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मैं कहूं तो कोई विश्वास नहीं करें

कोई कहें तो मैं विश्वास नहीं करुं

मैं लिखूं तो कोई विश्वास नहीं करें

कोई लिखें तो मैं विश्वास नहीं करुं

मैं सोचूं तो मैं विश्वास नहीं करुं

मैं जानूं तो मैं विश्वास नहीं करुं

मैं पढूं तो मैं विश्वास नहीं करुं

मैं देखूं तो मैं विश्वास नहीं करुं

मैं कुछ करुं तो विश्वास नहीं करुं

मैं कुछ नहीं करुं तो विश्वास नहीं करुं

बार बार कहना पड़े

सौगंध से कहूं - सौगंध से लिखूं - सौगंध से जानूं - सौगंध से देखूं -

सौगंध - सौगंध तो मैं कैसा?

खुद हंसें खुद रोएं

खुद हंसें कोई रोएं

खुद रोएं कोई हंसें

हर कोई हंसें हर कोई रोएं

खुद पर हंसें खुद पर रोएं

कैसा जीवन का जीना!

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" योगिनी एकादशी "

मैं योगिनी तु मेरा सांवरिया

मैं गोपी तु मेरा बावरीया

नीत मुख दरश स्थली स्थली भटकूं

अपलक अपलक तुझे ही निहारुं

विस्मरण तेरे ही गुण गाऊं

बंसी धून पर ताल मिलाऊं

मन से मन की लगन लगाऊं

तन से तन की ज्योत जगाऊं

जीवन रुप की आहुति चढ़ाऊं

तेरे प्रेम में योगिनी हो पाऊं

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

हे सांवरिया! मुझे योगिनी कर दें 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

तेरी तिरछी नज़र मुझे लुट गई

मुझको क्या हो गया है वह तु ही तु जाने

एक अगन सी जग गई मैं लुट गई 🌷

मुझको क्या हो गया है वह तु ही तु जाने

हर नज़ारा देखूं तो तु ही तु नज़र आएं

हर सहारा ढूंढूं तो तेरा हाथ ही हाथ थामलें

पलकें बंध करुं तो तु सामने पाएं

चैन आता नहीं मैं खुद लुट गई

मुझको क्या हो गया है वह तु ही तु जाने

एक कदम चलूं तो पैजनिया थनके

हस्त बढ़ाऊं तो कंगना खनखने

उड़े आंचल तेरे मिठे मिठे ख्यालों में

बिजुरिया चमकें दमक अंग भरें अंगड़ाई

मुझको क्या हो गया है वह तु ही तु जाने

गुनगुनाएं मन श्याम श्याम रटें

थरथरायें अधर राधे राधे गूंजें

धड़क धड़क सांसें गोविंद गोविंद भरें

खुद के रंग में नहीं खुद के संग में नहीं

मुझको क्या हो गया है वह तु ही तु जाने

एक अगन सी जग गई मैं लुट गई 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

मेरा जीवन मेरे विचार मेरे कर्म मेरे व्यवहार और मेरे संबंध से उचित होता है 🌷

मेरा जीवन मेरे समय के साथ चलना मेरे कुटुंब के साथ रहना मेरे समाज के साथ जुड़ना और मेरे जगत के साथ जीने से उत्तम होता है 🙏

मेरा जीवन मेरे संस्कार मेरी संस्कृति मेरे विश्वास और मेरे विनय से योग्य होता है 👍

हमसे है जमाना ज़माने से हम नहीं

हमसे है कुटुंब समाज से कुटुंब नहीं

हमसे है जीवन युग से जीवन नहीं

हमारा सांस हमारा विश्वास हमारा विकास हमसे है 🙏

हमें यही होना है हमें यही होना है 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

न तुम हमें जानो

न हम तुम्हें जाने

पर और अगर मगर

जो हम नजदीक नजदीक आ रहे है

तो अवश्य हममें कोई ऐसा आत्म दिव्य प्रेम तत्व जो अपनी ऑरा से एक दूसरे को खिंच रहे है 🙏

यह

वात्सल्य उर्जा से - (माता-पिता पुत्र पुत्री)

मित्र विश्वास से - मित्र मित्र (जो भी लिंग हो)

लग्न जीवन पवित्रता से (पति-पत्नी) (प्रेम लग्न)

कर्म सिद्धांत से (साथ साथ व्यवहार व्यवसाय)

भक्त समर्पण से (सत्य धर्म आचरण)

प्रकृति खिलने से (मूल तत्वों की मर्यादा)

समय धारा से (घड़ी घड़ी योग्यता घड़ना)

गहराई से टटोलें तो

श्री कृष्ण अवतार हमें सर्वस्व से सर्वथा संस्कार शिक्षित करता है 🌷🙏🌷

अदभुत - अलौकिक - विस्मरणीय - प्रज्ञान

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक व्यक्ति मेरे पास बार बार आया और उन्होंने अपना दर्द मुझे कहीं बार बताया कि मुझे ऐसा है और ऐसा होता है जो कभी चैन नहीं पड़ता बस दर्द बढ़ता ही जाता तो मैं सहन करता ही रहता पर दवाई नहीं ही लेता 🙏

मैंने कहा - भाई! इतना दर्द हो रहा है तो दवाई अवश्य लेनी चाहिए!

वह बोला मेरी पास एक ही दवाई है और वह है केवल श्री प्रभु स्मरण रटण!

मैंने तुरंत कहा - अरे भाई! तुम्हारा यह कणसता और दर्द झेलता चहरा बहुत कुछ कह रहा है की हद बाहर का दर्द तुम ऐलते हो!

वह त्वरित बोला - कसोटी है, वह कसोटी कर रहा है।

मैंने कहा - नहीं नहीं! इतना दर्द बिन दवाईयां नहीं मिटेगा।

वह दर्द सहता चला गया। मैं सोचता रहा - यह कैसी क्रुर मान्यता? यह दर्द उन्हें बिना डॉक्टर और बिना दवाईयां नहीं दूर होगा या मिटेगा 🙏

थोड़े दिन पसार हुए - मैंने देखा वह टहलता - हंसता - खेलता मेरी पास आ रहा था! वह आया और बोला - साहब! नमस्कार 🙏 कैसे हो आप?

मैं तो सन्न रह गया उन्हें देखता ही रहा! न चहरा पर दर्द का एहसास - न दर्द का दुःखित भाव - बस मुस्कुराता एक फूल भरा खिलता चहरा! मैंने उन्हें वंदन किया 🙏

उन्होंने भी सामने से आनंद भरा - नमस्कार किया 🙏

मेरे मुंह से अनायास निकल गया - भाई! चमत्कार! 🌷🙏🌷🙏

वह कहने लगा - नहीं साहब! यह सब तो श्री प्रभु कृपा से हो रहा है - बाक़ी मेरे हस्तक क्या?

भाई! अनोखा विश्वास है अपने आप पर! कमाल है! 🌷

श्री प्रभु! औषधि ऐसी जीवन में!

जो विश्वास से पा लिया वह जीत गया

न उन्हें कोई दर्द दे सके

न उन्हें कोई मिटा सके

" राम नाम की ऐसी रीत

जो भवसागर दु:ख मिटाई " 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"रथयात्रा " एक अनोखा दिन 🙏

हर वर्ष यही दिन श्रीप्रभु हमारे घर पधारे 🙏

एक भक्त सदा मंगल मूहर्त में श्रीप्रभु के हवेली पहुंचता और श्रीप्रभु के समक्ष खड़े हो कर कहता हे प्रभु! आपके सामने हूं और आप मुझे तपास लो कि मैंने आपको दिया हुआ वचन निभाता हूं 🙏 अगर मेरी कोई भी संस्कार नियमन भूल-चूक हो तो मुझे जागृत करके क्षमा करना और कभी ऐसी ग़लती न हो ऐसी परिस्थिति और समय का निर्माण करना 🙏

श्रीप्रभु उनकी प्रार्थना और याचना सुनकर हंस पड़ते और आज्ञा करते - ख्याल रखना 👍

ऐसा सिलसिला हर रोज चलता रहता और वह भक्त कोई न कोई ग़लती करता रहता और श्रीप्रभु माफ़ करते रहते 🙏

यह हररोज का सिलसिला से वर्ष बितने आया। श्रीप्रभु सोचने लगे - यह भक्त सदा कोई न कोई ग़लती करता ही रहता है तो आज मैं ही उनके घर पहुंचु और समझूं की यह कोई न कोई ग़लती कैसे और क्यूं करता है? 🙏

श्रीप्रभु ने तय किया अषाढ़ शुक्ल पक्ष द्वितीया को मैं अपनी हवेली से बाहर निकल कर भक्त के घर के लिए प्रयाण करुंगा 👍

मंगल मूहर्त होते ही श्रीप्रभु अपने रथ में बैठकर भक्त के घर निकले तो मुख्याजी और श्रीप्रभु की सेवा में रहने वाले हर कोई उनके साथ निकल पड़े। राजा - प्रजा ने देखा

अरे श्रीप्रभु! आज बाहर! हर कोई नाचने कुदने लगे और मंजीरा ढोलक बजाते श्रीप्रभु धून गाते धूम मचाने लगे।

पर

हर कोई के मन में एक विचार अवश्य स्फूर्ता की श्रीप्रभु कौनसे भक्त के घर जा रहे है?

श्रीप्रभु! हंसते खेलते पूरी मंडली के साथ ठुमके लगाने लगे 👍

ओहहह! सारा जीव महेरामण आनंद आनंद में झुमने लगे।

स्थली स्थली श्री प्रभु का स्वागत और एक ही गूंज - जय जगन्नाथ! 🌷🙏🌷

धीरे धीरे रथ यात्रा बढ़ने लगी आचार्य, राजा-महाराजाओं पधारे और श्रीप्रभु की कृपादृष्टि प्राप्त करने लगे। 🙏

इतने में एक चौराहे पर श्रीप्रभु रुक गए, हर कोई रुक गए। सब की नजर श्रीप्रभु पर टिकी है और श्रीप्रभु का इशारा का इंतजार करने लगे।

श्रीप्रभु चारों ओर अपनी नज़र फैलाएं किसीको ढूंढते रहते है वैसे हर कोई भी ऐसी ही नज़रों से देख रहे थे। इतने में एक कोने में एक तुटे फटें कपड़े में एक लाचार - भूख-प्यास के मारे अपनी नज़र को कोई सहारा दे ऐसी याचना से निहार रहा व्यक्ति - न उन्हें इतने मानव महेरामण में दिलचस्पी थी, उन्हें केवल श्रीप्रभु के दर्शन हो जाएं - श्रीप्रभु की एक झांकी हो जाएं और वह अपने रास्ते चल दे 🙏

श्रीप्रभु ने उन्हें देख लिया और उनकी व्याकुलता को भांप लिया और वह दौड़े 🌷🙏🌷

श्रीप्रभु को दौड़ते हुए देखें हर कोई उसी दिशा में दौड़ने लगे। वह व्यक्ति भी गभरा कर वह भी जहां कोई खाली जगह मिले वह रास्ते पर दौड़ने लगा, वह व्यक्ति के पीछे श्रीप्रभु और उनके पीछे पूरा संघ।

वह व्यक्ति गभरा हुआ इधर-उधर उधर-इधर दौड़ता भागता शहर की बाहर अपनी कुटिया में घुस गया। श्रीप्रभु हांफते हांफते थकें थकें ढूंढने लगे अरे वह व्यक्ति कहां छुप गया?
श्रीप्रभु अपनी चकोर नज़रों को फिरा कर देखा तो वह व्यक्ति अपनी झोपड़ी में छुप गया है। श्रीप्रभु ने सबको संकेत किया - सब यहां ही ठहरों, मैं अकेला वह कुटिया में देखता हूं।
श्रीप्रभु दबे पांव वह कुटिया की ओर बढ़ते चले। कुटिया के द्वार पर खड़े होकर बोलें - प्रिय! ओ प्रिय! यह आवाज़ सुनकर वह अपने आपको हिन और लाचार हो कर डर कर थरथराने लगा।
इतने में श्रीप्रभु ने उन्हें पकड़ लिया। वह ध्रुजता आजिज़ी करता रोते रोते कहने लगा - हे प्रभु! मुझे माफ़ कर दो 🙏 मैं हिन और निम्न व्यक्ति मुझे माफ़ कर दो 🙏
श्रीप्रभु ने उनका हाथ पकड़ कर गले लगाया और कहा - हे प्रिय! गभराओ मत! मैं तुम्हारा प्रियतम प्रेमी तुम्हारे घर पधारा हूं 🙏
इतने में सारा जीव महेरामण वह कुटिया के द्वार पहुंच कर नाचने गाने लगे - जय जगन्नाथ! जय जगन्नाथ!

जय जगन्नाथ! जय जगन्नाथ! 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय जगन्नाथ " 🌷🙏🌷

एक व्यक्ति हर रोज कोई न कोई से मिलता और हर एक को सुनता, समझता और योग्यता पर हर तरह से वह जिसे मिलता उसका अभ्यास करता 🙏

ऐसे अनगिनत व्यक्तिओं से मिलता, सुनता, समझता और योग्यता पर हर तरह से अभ्यास करता 🙏

ऐसे कहीं वर्ष और दशक बित गए।

यह बिते समय से इतना तो तय हो गया कि वह कितना अभ्यासु और हर द्रष्टि कोण से वह अपने आपको योग्यता पा सकता है 🙏

हम भी ऐसा समझ सकते है 👍

आज इतिहास पढ़ लो हम कितने ही चरित्रों से इतना अवश्य समझ सकते है 🙏

हर कोई संमत है इस प्रकार से 👍

मेरे विचार से किसीको भी संशय या संकोच नही है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

क्रमशः

एक रास्ता अनेकों रास्ते

एक रास्ते का विचार अनेकों रास्ते का विचार

रास्ता ही रास्ता

जितने है उनसे रास्ते जितने विचारों से अनेकों रास्ते

हर कोई चलते रहे हर कोई रास्ते रचते रहे

रास्ते रास्ते अनेकों मोड़ रास्ते रास्ते अनेकों चौराहे

रास्ता रास्ता रास्ता ही रास्ता

चारों ओर रास्ता हर ओर रास्ता

औरौं का रास्ता खुद का रास्ता

कौन कहां चले रास्ता कौन कैसे चले रास्ता

चलते रहना चलते ही रहना

हर किसीका रास्ता श्रेष्ठ हर कोई का रास्ता ज्येष्ठ

रास्ते रास्ते भूल भूलैया रास्ते रास्ते का कोई खेवैया

बस रास्ते रचते चलों रटते चलों चलते चलों

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

અષ્ટસખાનાં ચરિત્રો અનેકો અનેક સમય - સત્સંગ - પ્રવચન કે કથા માં સાંભળ્યા - સમજાવ્યાં પણ શિક્ષિત થઈ અમલમાં મૂક્યા?

નહીં

કેમ?

પ્રાથમિકતા થી કોણ અમલમાં મૂકે - જે સત્સંગ માં - પ્રવચન માં - કથા માં કહેતા હોય તો તેઓની અસર સાંભળવા પર થાય - સ્વ જાગૃત થયા વગર બીજાને જાગૃત કેવીરીતે થાય?

આજનાં સત્સંગ કરવા વાળા - પ્રવચન કરવા વાળા - કથા કરવા વાળા જ અધૂરા હોય તો સમજવા વાળાની તો દશા જ દિશા શૂન્ય થઇ જાય 🙏

એટલે જ આજે સત્ય - વિશ્વાસ અને સેવા વ્યાપાર બની ગયા છે.🙏

જાતે જ ચિંતન - મનન - અધ્યયન કરીએ તો અવશ્ય સમજાય કે આપણે ક્યાં? 🙏

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

वल्लभ प्रभु श्री श्रीनाथजी कहते है बार बार

आजा एक बार नाथद्वारा मिलाएं नैना चार चार

वल्लभ प्रभु!

हंसते नाचते खेलेंगे हम छुपा छुपी रचाएंगे हम

कभी दर्शन को दिखेंगे हम कभी यादों में पाओगे हम

ढूंढ के थक जाओगे तुम सामने हमें पाएंगे तुम

वल्लभ प्रभु श्री श्रीनाथजी 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

नैनों में तस्वीर तेरी आन बसी

न पलक झपके न नैना मूंदे

नैनों में तस्वीर

अभी अभी तो आ बसी

अभी अभी तो छा बसी

मन झुमे धड़कन थनके

प्रीत लहर बहती जाएं रे .... नैनों में तस्वीर

मोर मुकुट मयूर कलगी

हडपची हिरलो झबकी

कर्ण पटल कुंडल ठुमके

प्रेम मिलन दिल झुरता जाएं रे... नैनों में तस्वीर

आज का पावस ऋतु का मौसम में

श्रीनाथजी की ओर प्रेम बरसता है 🌷

यह रचना -

बरखा रानी जरा जमके बरसों

मेरा दिलबर जा न पाएं झुम कर बरसों 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

जय राधे! जय राधे! जय श्री कृष्ण बोलो जय राधे!🌷

हे राधे! हे राधे! जय श्री कृष्ण बोलो जय राधे!🙏

हे माधे! हे माधे! जय श्री कृष्ण बोलो जय राधे!🌷

हे गोपे! हे गोपे! जय श्री कृष्ण बोलो जय राधे!🙏

हे प्रिये! हे प्रिये! जय श्री कृष्ण बोलो जय राधे!🌷

जय कृष्णे! जय कृष्णे! जय श्री कृष्ण बोलो जय राधे!🙏

जय नंदे! जय नंदे! जय श्री कृष्ण बोलो जय राधे!🌷

जय बांके जय बांके! जय श्री कृष्ण बोलो जय राधे!🙏

जय व्रजे! जय व्रजे! जय श्री कृष्ण बोलो जय राधे!🌷

जय यमुने! जय यमुने! जय श्री कृष्ण बोलो जय राधे!🙏

जय मोहने! जय मोहने! जय श्री कृष्ण बोलो जय राधे!🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण " कहते है तो उन्हें समझा है कि

" कृष्ण " क्या है?

बस! कह दिया अर्थात बोल दिया!

नहीं नहीं!

" कृष्ण " कहने से और उच्चारने से हमारी संस्कृति आधारित और विज्ञान सिद्धांत आधारित आमूल परिवर्तन आता है 🙏

जो बिना समझे और बस ऐसे ही कह दिया - बोल दिया तो कुछ नहीं होता है 🙏

*सूरदास जी अपने आंतरिक चर्मचक्षु से " कृष्ण " का दर्शन करते थे 🙏

*कुम्भनदास जी अपनी आर्थिक परिस्थिति आधारित " कृष्ण " से खेलते थें 🙏

*मीराबाई जी अकेली स्त्री होते हुए भी " कृष्ण " के लिए दर दर भटकी 🙏

कितने अनोखे चरित्र केवल " कृष्ण " नाम से 🙏 " कृष्ण " नाम कुछ तो अवश्य है 🙏

- हमारा रोग नहीं मिटता

- हमारी आर्थिक स्थिति नहीं बदलती

- हमारे अंदर सत्य नहीं प्रकट होता

कलयुग को मत दांटें - खुद कलयुग तो जीवन कलयुग ही होगा 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

એક વ્યક્તિ ને શ્રી વલ્લભાચાર્યજી પર અતૂટ વિશ્વાસ 🙏 તે જે કાંઈ કરે તો પ્રથમ શ્રી વલ્લભાચાર્યજી ને સમર્પિત કરે અને પછી જ કરે 🙏

સદા મનથી નૈનોં થી રટણ, સ્મરણ અને પઠણ.

વિચાર કરે તો શ્રી વલ્લભ!

દર્શન કરે તો શ્રી વલ્લભ!

સ્વર ઉદગારે તો શ્રી વલ્લભ!

આમ સમય વહેતો ગયો અને એક દિવસ શ્રી વલ્લભાચાર્યજી તેનાં આંગણે પધાર્યા 🙏

હે વૈષ્ણવા! હે વૈષ્ણવા!

તે વ્યક્તિ નાં કર્ણ પટલ પર વૈષ્ણવા! વૈષ્ણવા! શબ્દ ગૂંજ્યો

તેને વિચાર્યું - વલ્લભ!

તેને સાંભળ્યું - વૈષ્ણવા!

તેને અસર થઈ કે ચોક્કસ શ્રી વલ્લભાચાર્યજી મારે આંગણે પધાર્યા છે!

તે તુરંત ઊભો થયો અને દોડ્યો દ્વાર ખોલવા, જેવાં દ્વાર ખોલ્યાં તો તેનાં નૈનોં ની દ્રષ્ટિ શ્રી વલ્લભાચાર્યજી પર પડી તો તેનાં મુખ માંથી ઉદગાર સરી પડ્યો - શ્રી વલ્લભ!

તુરંત તન મન અને વરણથી દંડવત પ્રણામ કર્યા 🙏

શરણે પડી ચરણ પખાળી તેને શ્રી વલ્લભાચાર્યજી ને પ્રેમથી આવકાર્યા 🙏

શ્રી વલ્લભાચાર્યજી ને આસન પર બિરાજાવી તે તેમની સેવા માં સર્વસ્વ સમર્પણ કરવા લાગ્યો 🙏

શ્રી વલ્લભાચાર્યજીએ કહ્યું - વૈષ્ણવા! તને ખબર કેવી રીતે પડી કે હું વલ્લભ જ છું?

વ્યક્તિએ કહ્યું - શ્રી આચાર્ય! આપ જ્યારે મારે આંગણે પધારી રહ્યાં હતાં ત્યારે મને પુષ્ટિ ઉર્જા ની મહેક આવી રહી હતી.

જેવાં આપ દ્વાર પર પધાર્યા ત્યારે મને શ્રી ગોવર્ધનની રજ મને સ્પર્શી ગઈ.

જ્યારે આપે વૈષ્ણવ એવી ગૂંજ લગાવી ત્યારે શ્રી યમુનાજીની શિતળતા મને ભીંજવી ગઈ.

મારાં નયન, મારાં મન, મારાં તન અને મારા મનન ને અચૂક વિશ્વાસ થઈ ગયો - શ્રી વલ્લભાચાર્યજી પધાર્યા 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
પુષ્ટિ સેવાની અનન્યતા 🙏
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
ગુરુપૂર્ણિમા નિમિત્તે શ્રી વલ્લભાચાર્યજી આપણે દ્વાર પધારે એવા સેવક તરીકે નો સંકલ્પ 🙏
" Vibrant Pushti "
" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

" સંસાર " નો એક અનોખો સિદ્ધાંત

" કુટુંબ જીવન "નો એક અનોખો સિદ્ધાંત

" હિંદુ સનાતન ધર્મ સંસ્કૃતિ " નો એક અનોખો સિદ્ધાંત

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

સીતા રામ 🙏

રુકમણી કૃષ્ણ 🙏

ઉમા શંકર 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

પ્રીત રીતથી

રાધા કૃષ્ણ 🙏

ધર્મ પત્ની સંસ્કાર થી

અહલ્યા રામ 🙏

ભક્તિ થી

શબરી રામ 🙏

મીરાં ગિરિધર 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

સત્ય આધારિત 🙏

સ્ત્રી ને મુક્તિ ત્યારે જ મળે

૧. જ્યારે તે પતિવ્રતા ધર્મ પાળે

૨. જ્યારે તે પ્રિયતમા હોય

૩. જ્યારે તે પવિત્ર વિશુદ્ધ ભક્ત હોય

આ જ સિદ્ધાંત પુરુષ માટે પણ અવશ્ય છે 🙏

" Vibrant Pushti "

"જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

ઓછું મીઠું - વધુ નિરોગી

ઓછી ખાંડ - વધુ સ્ફૂર્તિ

ઓછાં પડીકાં - વધુ તંદુરસ્તી

ઓછાં બહારની ખાણીપીણી - વધુ સુખી જીવન

ઘર ઘર મહેમાન - વધુ યોગ્ય સંબંધ

આંગણે ઉત્સવ - વધુ ઉલ્લાસ

ભારતીય જીવન - શ્રેષ્ઠ જીવન

સનાતન ધર્મ સંસ્કાર - ઉત્તમ માનવ અધિકાર

જાતે જ ચિંતન કરો

જાતે જ સંસ્કાર સમજો

જાતે જ જીવન શૈલી ઘડો

જાતે જ મનુષ્ય ની યોગ્યતા ધરો

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

શ્રી પ્રભુ આપણાં રોમે રોમમાં 🙏

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

ओहहह! कहीं गया - कहीं देखा
हर जगह बस एक ही सूत्र - हर जगह एक ही कोलाहल - हर जगह एक ही भीड़ " गुरु पूर्णिमा " 🌷
मैं भी ढूंढने लगा - मेरा गुरु - हे गुरु! हे मेरे मार्गदर्शक! हे मेरे दिशा-निर्देशक, हे मेरे दिशा-सूचक 🙏
जहां देखा, जहां ढूंढा - भटक भटक कर एक पैड़ के निचे जा बैठा - सोचने लगा
कहां है गुरु? कौन है गुरु?
बहुत सोचा, बहुत टटोला।
पर नहीं पाया कोई गुरु
आखिर पहुंचा घर द्वार
जैसे दरवाजा खटखटाया
तो खोला माता-पिता ने द्वार 🙏
बेटा! कहां भटक रहा था
हम कबसे तेरी राह में बैठे हैं
तेरा इंतज़ार में
यह सेवा में हम श्री प्रभु को प्रार्थना करते रहे
हे प्रभु! मेरे संतानों को सही संस्कार
मेरे संतानों को सही दिशा
मेरे संतानों को सही शिक्षा
मेरे संतानों को सही धर्म
मेरे संतानों को सही प्रेम का मार्ग सदा बताना 🙏
मैं सीधा ही मेरे माता-पिता की चरणों में मेरा सर झुका दिया 🙏
और गले लगाकर उनकी उर्जा पाया 🙏
मन पुकारने लगा - यही है सही गुरु 🙏
नैनों झुकने लगी - यही है सही गुरु 🙏
धड़कनों कहने लगी - यही है सही गुरु 🙏
आत्मा तेजोमय हो कर संकेत कर रही - यही ही है सही गुरु 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक व्यक्ति अपने फूल के गूंथ ने की कला में निपुण हो रहा था। वह तरह तरह की अनेकों प्रकार की मालाएं गूंथता था और अपनी दुकान ऐसी सजाता था कि जो कोई की नज़र उन पर लगें तो वह तुरंत उन्हें खरीद लेता था। ऐसे कहीं दिनों से वह व्यक्ति अपना व्यापार कर रहा था। एक दिन एक भक्त अपने श्री प्रभु के दर्शन के लिए यह रास्ते से गुजर रहा था और उनकी नज़र वह दुकान की एक माला पर आई और वह आनंद विभोर होकर अपने श्री प्रभु के लिए तुरंत माला खरीद ली। वह भक्त इतना उत्साह और उमंग में वह माला श्री प्रभु के चरणों में रक्खी ही थी और मुख्याजी की नज़र वह माला पर आई। दौड़ते हुए वह माला उठाकर श्री प्रभु के गले में पहना दी। ओहहह! सारे दर्शनार्थी पुकार उठें - जय हो! 🌷

हर दर्शनार्थी अपलक नैनों से श्री प्रभु के दर्शन में तल्लीन हो गएं। वह भक्त भी आनंदित हो कर नृत्य करने लगा। इतने अदभुत श्री प्रभु की झांकी! 🌷

ओहहह! अदभुत! अलौकिक और अवर्णनीय 🌷🙏🌷

वह भक्त के रोम रोम में आज श्री प्रभु बस गए थे वह सारे रस्ते पर श्री प्रभु धून गाता नाचता जा रहा था। सब की नज़र उन पर टिकी हुई और वह भी खुश खुशाल।

इतने में वह फूल माला की दुकान आईं और वह भक्त दौड़ कर वह फूल वाले को गले लग गया। कहने लगा - भैया! आप की माला आज श्री प्रभु को भा गई 🌷

इतना ही सुनते वह फूल वाला भी आनंदित हो कर कुदने लगा। दोनों नाचते नाचते गाने लगे - " नंद घेर आनंद भयो - जै कन्हैया लालकी "

थोड़ी देर बाद - वह भक्त अपने घर गया और वह फूल वाला ने अपनी दुकान बंद कर दी और वह अपने घर जा कर - रोने लगा। वह अपने आप को अति निम्न समझनें लगा कि मैं कितना अधम हूं। मेरी माला श्री प्रभु ने अंगिकार किया और मैं उनके दर्शन न पा सका! 🙏

आज से मैं दुकान बंध! बस केवल श्री प्रभु की सेवा में 🙏 फूलों के अनेकों प्रकार के शृंगार रस से आनंद विभोर कर दूंगा 🙏

यही है पुष्टि भक्ति 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" बरसात "

बारिश का संकेत है

शुद्ध - विशुद्ध हो जाओ 🙏

बारिश का संदेश है

मैं भी आपकी तरह ही हूं, बार बार मुझे आना पड़ता है - जैसे आप बार बार जन्म लेते हो 🙏

मेरा आना आपको शुद्ध विशुद्ध और पालन पोषण करना

आपका आना ब्रह्मांड, प्रकृति, जगत, संसार और पंच महाभूतों को समांतर रखना 🙏

अगर आप कोई भी तत्व को असमांतर करें तो हमें समांतर करने आना होता है 🙏

हम मूल तत्वों केवल आपको योग्य रखनें और करने के लिए पुरुषार्थ करते है 🙏

जल जीवन

जल जन्म

जल जगत

जल ब्रह्मांड

जल धर्म

जल कर्म

जल परम

🌷🙏🌷

मूल तत्वों सदा आपके सेवक है 🙏

आपके कर्मों के अनुसंधान हमें आपको जगाना है और योग्य करना है 🙏

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

आपने अवश्य सुना है - पढ़ा है - मैं इन्द्र देव का सेवक हूं - नहीं मैं इन्द्र सेवक उसी समय मीट गया था जब प्रभु श्री कृष्ण ने श्री गोवर्धन धारण किया था 🙏

बस यही क्षण और घड़ी से मैं आप सभी प्रकृति मय, संसार मय, जगत मय जीवों और जीवों से भक्त है उनका सेवक हूं 🙏🌷🙏🌷

हमारा विनाश कब व कैसे शुरू हुआ था?

1. हमारा विनाश उस समय से शुरू हुआ था, जब हरित क्रांति के नाम पर देश में रासायनिक खेती की शुरूआत हुई और हमारा पौष्टिक वर्धक, शुद्ध भोजन विष युक्त कर दिया गया।

2. हमारा विनाश उस दिन शुरू हुआ था, जिस दिन देश में जर्सी गाय लायी गई और भारतीय स्वदेशी गाय का अमृत रूपी दूध छोड़कर जर्सी गाय का विषैला दूध पीना शुरु किया था।

3. हमारा विनाश उस दिन शुरू हुआ था, जिस दिन भारतीयों ने दूध, दही, मक्खन, घी आदि छोड़कर शराब पीना शुरू किया था।

4. हमारा विनाश उस दिन शुरू हुआ था, जिस दिन देशवासियों ने गन्ने का रस छोड़कर पेप्सी, कोका कोला पीना शुरु किया था, जिसमें 12 तरह के कैमिकल होते हैं और जो कैंसर, टीबी, हृदय घात का कारण बनते हैं।

5. हमारा विनाश उस दिन शुरू हुआ था, जिस दिन देशवासियों ने शुद्ध देशी तेल खाना छोड़ दिया था और रिफाइंड आयल खाना शुरू किया था, जो रिफाइंड ऑयल हृदयघात आदि का कारण बन रहा है।

6. हमारा विनाश उस दिन शुरू हुआ था, जिस दिन देश के युवाओं ने नशा शुरू किया था। बीडी, सिगरेट, गुटखा, गांजा, अफीम, आदि शुरू किया था, जिससे कैंसर बढ रहा है।

7. हमारा विनाश उस दिन शुरू हुआ था, जिस दिन देश में हजारों नकली दवाओं का व्यापार शुरु हुआ और नकली दवाओं से लोग मर रहे हैं।

8. हमारा विनाश उस दिन शुरू हुआ था, जिस दिन देशवासियों ने अपने स्वदेशी भोजन छोड़कर पीजा, बर्गर, जंक फूड खाना शुरू किया था, जो अनेक बीमारियों का कारण बन रहा है।

9. हमारा विनाश उस दिन शुरू हुआ था, जिस दिन लोगों ने अनुशासित और स्वस्थ दिनचर्या को छोड़कर मनमानी दिनचर्या शुरू की थी।

10. हमारा विनाश उस दिन शुरू हुआ था जिस दिन लोगों ने घरों में एलुमिनियम के बर्तन व घर में फ्रिज लाया था।

11. हमारा विनाश उस दिन शुरू हुआ था जिस दिन भारतीय जीवन शैली को छोड़कर विदेशी जीवन शैली शुरू की थी।

12. हमारा विनाश उस दिन शुरू हुआ था, जिस दिन लोगों ने स्वस्थ रहने का विज्ञान छोड दिया था और अपने शरीर के स्वास्थ्य सिद्धांतों के विपरीत कार्य करना शुरू किया था ।

13. हमारा विनाश उस दिन शुरू हुआ था, जिस दिन देश का अधिकतर युवा / युवतियां व्यभिचारी बनकर व्यभिचार करना, गर्भ निरोधक गोलियां खाना, लाखों युवतियां हर साल गर्भाशय कैंसर से मरती हैं।

14. हमारा विनाश उस दिन शुरू हुआ था, जिस दिन लोगों ने अपने बच्चों को टीके लगवाना शुरू किया था, यह विचार कभी भी नहीं किया था कि टीकों का बच्चों के शरीर पर भविष्य में क्या प्रभाव पडेगा?

15. इस शरीर की कुछ सीमा है, कुछ मर्यादा है, कुछ स्वस्थ सिद्धांत हैं, लेकिन मनमाने आचरण के कारण शरीर की बर्बादी की है।

नोट :- हमारे विनाश के अनेक कारण हैं। आज लोगों को सिर्फ रोना ही दिखाई दे रहा है, उन्हें यह भी देखना चाहिए कि लोग कैंसर, टीबी, हृदय घात, शुगर, किडनी फेल, BP High, BP Low, अस्थमा आदि गंभीर बीमारियों से मर रहे हैं।

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

भीगा मौसम भीगे तन मन

काले घने बादलों से याद आएं घनश्याम 🌷🙏🌷

बूंद बूंद से तरसे नयन

विरह ख्याले प्रेम प्रिये श्याम

नैना गाएं श्याम श्याम

अधर पुकारें श्याम श्याम

धड़कन थिरके श्याम श्याम

मीठी भीगी सांसें आग लगाएं

प्रीत मिलन की ज्वाला जगाएं

दूर कहीं है प्रियतम

गूंज उठ रही स्वर मंजूषा

रटण करें दिल श्याम श्याम

नाद सुन्यो बंसी मोहक प्रेम याद

निकट आएं दीपक श्रीधर श्याम

रंग रंग एक घनश्याम

श्यामा श्याम प्रेम रंग घनश्याम

आतम आतम हुए प्रीत श्याम

भीगा मौसम भीगे तन मन

काले घने बादलों से याद आएं घनश्याम 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

શ્રી પુષ્ટિમાર્ગ નું ધામ મને વહાલું લાગે છે

ચંપારણ્ય ધામ શ્રી પુષ્ટિમાર્ગ નું ગૌત્ર

નિત્ય સેવા પરિક્રમા થાય

મનનું અજ્ઞાન દૂર થાય

શ્રી પુષ્ટિમાર્ગ નું ધામ મને વહાલું લાગે છે 🙏

શ્રી અષ્ટ સખા નું ધામ મને વહાલું લાગે છે

ગૌવર્ધન ધામ શ્રી અષ્ટ સખા નું સ્ત્રોત્ર

નિત્ય શયન આરતી થાય

પુષ્ટિ સિદ્ધાંત ઉજાગર ધાય

શ્રી અષ્ટ સખા નું ધામ મને વહાલું લાગે છે 🙏

શ્રી શ્રીનાથજી નું ધામ મને વહાલું લાગે છે

નાથદ્વારા ધામ શ્રી શ્રીનાથજી મૂળ ભામ

મંગળ દર્શન આરતી થાય

સન્મુખ દંડવત ચરણ કરાય

શ્રી શ્રીનાથજી નું ધામ મને વહાલું લાગે છે 🙏

" Vibrant Pushti "

" જય શ્રી કૃષ્ણ " 🌷🙏🌷

अति गहराई से टटोला की " सूरदास " अदभुत अलौकिक और अविस्मरणीय जीवन सत्य चरित्र है -
जो बिना नैनों से पूरा ब्रह्मांड देखते थे। 🙏
गंभीरता से भी चिंतन करे तो वह क्या कहते है -
" जाकी कृपा पंगु गिरि लंधे
अंधे को सब कुछ दरसाई
बहरो सुने मूक पुनि बोले
रंक चले सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुणामय
बार बार बंदौ तिहिं पाई "
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
हम क्या है? हम कैसे है?
हम क्यूं है? हम क्या कर रहे है?
हमारा सत्य हमारे साथ है 🙏
हमारा सत्य हमारे पास है 🙏
हमारा सत्य हमारे अंदर है 🙏
हमारा सत्य हमारे सन्मुख है 🙏
हम ढूंढते, भटकते, अटकते, हटकते, सटकते, लटकते, बहकते, दहकते कहां कहां जा रहे है! 🙏
" मैं देखुं जिस ओर सखी री
सामने मेरे सांवरिया " 🌷🙏🌷
हर भक्त ऐसा कहें - हर ज्ञानी ऐसा कहें
और
न जानूं मैं निकट भीतर की
ढूंढूं गली गली
मेरे सांवरिया मेरे आत्म में बसो
ढूंढूं सारी नगरी
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक शिक्षित युवती
संकल्प लिए जी रही थी
एक दिन मैं ऐसा संस्कार सिंचन करुंगी
जिससे न कोई अज्ञान महसूस करे
तब एक ऐसा समय चला
उन्हें शिक्षा मंत्री बनाया
सारे देश को शिक्षा प्रदान की
न कोई अज्ञानी
न कोई भ्रष्टाचारी
तब देश वासियों की आवाज उठी
*यही मेरा श्याम है
यही हमारा घनश्याम है* 🌷🙏🌷

एक वफादार व्यक्ति
जो दर दर विश्वास की नोकरी मांगें
घर घर भ्रष्टाचार
घर घर विश्वासघात
न कहीं उन्हें काम मिलें
न कहीं उन्हें कोई साथ मिलें
तब एक निडर कार्यकर्ता ने
उन्हें एक कार्य बताया
जिससे वह धनवान हुआ
अनेकों को रोजी-रोटी दी
तब हर कोई कहने लगा
*यही मेरा श्याम है
यही हमारा घनश्याम है* 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

श्याम बीना नहीं सांस हमारी
श्याम बीना नहीं प्यास हमारी
श्याम बीना नहीं आश हमारी
क्यूंकि
श्याम बीना नहीं प्रीत धारा
श्याम बीना नहीं जीवन धारा
श्याम बीना नहीं आनंद धारा
इसलिए तो
मेरे प्रिय वर श्याम है
मेरे प्रियतम श्याम
यही ही मेरा श्याम है
यही ही मेरा घनश्याम 🌷🙏🌷

भक्त श्री हरि सुने
भक्त की हर रज में श्याम
भक्त की हर ज़र्रा में श्याम
श्याम बीन नहीं कोई पल कटे
श्याम बीन नहीं कोई ख्याल छूटे
यही मेरा श्याम है
यही ही मेरा घनश्याम 🌷🙏🌷

अंग रंग श्याम है
मन उमंग तरंग श्याम
श्याम श्याम श्याम स्मरण श्याम
चित्त चोरे श्याम
पकड़ करें श्री घनश्याम
इसलिए
यही मेरा श्याम है
यही ही मेरा घनश्याम 🌷🙏🌷
हां! हां! हां!
यही मेरा श्याम है
यही ही मेरा घनश्याम 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

न माया मरी न मन

मर गया सारा शरीर

न आशा मरी न तृष्णा

कैसी है हम हमारी तस्वीर

जग को हराने हम चलें

मीट गया सारा ख़मीर

एक एक हम तुटते गएं

चल बसे कहीं वजीर

यही तो हमारी आन बान शान

जो कोई वीर जाएं तो तक़दीर

हां! कोई नेता जाएं तो भडवीर

बहुत खेला खेलें

अब तो झुकाएं सत्य दरिद 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यही मेरा श्याम है
यही मेरा श्याम है
यही मेरा श्याम! 🌷

मेरे मन की वह रखवाली करे
मेरे तन की वह हिफाजत करे
मेरा मन!
मेरा तन!
मेरे नैनों में सदा वह बसा करे
मेरे जीवन में सदा वह हंसा करे
हां बस! यही मेरा श्याम है
यही मेरा श्याम! 🌷
यही मेरा श्याम है!
यही मेरा श्याम है!
यही मेरा श्याम! 🌷

मेरे हर विचार को पवित्र करे
मेरे हर क्रिया को विशुद्ध करें
मेरे विचार!
मेरी क्रिया!
मेरे पुरुषार्थ पुष्टि भक्ति करे
मेरी सांस सेवा प्रीत महकाएं
हां बस! यही मेरा श्याम है
यही मेरा श्याम! 🌷
यही मेरा श्याम है!
यही मेरा श्याम है!
यही मेरा श्याम! 🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हमारे विश्वास और योग्यता का फल जो कर्म कहीं भी - कैसे भी और कैसा भी किया हो - होगा उनके स्वरूप ही हमें हमारी प्रकृति, प्रवृत्ति, संस्कृति और निवृत्ति मिलती है 🙏

हमें जो जो साधनों मिले हैं

जैसे - मन, नैन, तन, धन, जीवन और धरती - आकाश - वायु - जल और सूर्य जो केवल हमें विश्वास और योग्यता पूर्वक जीवन उपयोग करने के लिए है।

यदि हम कोई भी स्वार्थ सहित - मन वांछित - असत्य आधारित - सिद्धांत विहिन कोई भी कर्म करेंगे तो कैसा कैसा युग आएगा जिसका निर्माण हमने ही किया है। 🙏

दीपक बन कर हमें अपने आपको ऐसा धरना है कि समय हर तत्वों से पूछे - यह कैसे बंदे हैं जो मुझसे अधिक विश्वास और योग्यता पूर्वक निर्वाहित करते हैं 👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" नर्मदे हर "

" नर्मदे हर "

आकाश से बरसती बूंदें

नैन को छूएं तो नर्मदा के दर्शन पाया 🙏

मन को छूआ तो नर्मदा का ध्यान पाया 🙏

तन को छूएं तो नर्मदा का स्नान पाया 🙏

धन्य हुआ जीवन से

भव्य हुआ शरण से

रम्य हुआ वरण से

गम्य हुआ आचरण से

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

झूले डालीओं से मन

झूले बादलों से मन

झूले लहरों से मन

झूले बरसात से मन

झूले फूलों से मन

झूले हिलोरें से मन

झूले तरंगों से मन

झूले बहारों से मन

झूले नजारों से मन

झूले रंगों से मन

झूले उमंगों से मन

झूले आनंद से मन

यही ही " हिंडोला उत्सव "

जो प्रकृति के हर रंग बिखराएं

जो सृष्टि के हर तरंग लहराएं

जो पुष्टि के हर आंतरिक उमंग पधराएं

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक जिज्ञासु ने संकल्प लिया कि मैं थोड़े दिनों बाद श्री गिरिराज गोवर्धन परिक्रमा करुंगा 🙏
बस उसी घड़ी से वह अपने नयनों से - मन से - आंतरिक चक्षुओं से और भक्ति के स्पंदन से वह श्री गिरिराज गोवर्धन का दर्शन करने लगा 🙏
नज़र फिराएं - गिरिराज गोवर्धन दर्शन
स्वर कहें - गिरिराज गोवर्धन सत्संग
सूर सुनें - गिरिराज गोवर्धन कीर्तन
डग भरें - गिरिराज गोवर्धन चरणों रज
श्वास भरें - गिरिराज गोवर्धन सिंचना
अन्न आरोगें - गिरिराज गोवर्धन प्रसाद
विचारों जगाएं - गिरिराज गोवर्धन पूजन
कर्म करें - गिरिराज गोवर्धन समर्पण
अजब गजब की प्रक्रिया 🙏
दीन उगे - गिरिराज गोवर्धन
रात ढले - गिरिराज गोवर्धन
जागे - गिरिराज गोवर्धन
सोएं - गिरिराज गोवर्धन
हर क्रिया में गिरिराज गोवर्धन 🌷
ऐसे दीन गुज़रते गएं, एक दिन आया श्री गिरिराज गोवर्धन पहुंचने के लिए अपनी सर्वथा व्यवस्था - गिरिराज गोवर्धन परिक्रमा 🙏
कदम से कदम भरता वह गोवर्धन की ओर चल पड़ा 👍
दिन गुजरते अठवाडिक गुजरते
पखवाडिक गुजरते माह गुजरते वह जिज्ञासु गिरिराज गोवर्धन पहुंचा 🙏
जैसे वह मुखारविंद के समक्ष उपस्थित हुआ - गोवर्धन गिरिराज खड़े हुए। कदम भरते भरते वह जिज्ञासु को गले लगा दिया 🌷
आसपास सब अचंभित हो गएं और अपने आप सब नमन करने लगें 🙏
इतने में आवाज़ आई - हे पुष्टि भक्त! तुमने आज एक सिद्धांत प्रमाणित किया 🙏
कोई भी संकल्प आरंभ से अंत तक श्री गोवर्धन नाथ के सानिध्य, स्मरण और दर्शन, सेवा, मानसी में ही रहा।
पुष्टि मार्ग का सिद्धांत है - जबसे संकल्प लिया तबसे केवल गिरिराज गोवर्धन में लीन, तल्लीन और वर्धीन।
गिरिराज गोवर्धन परिक्रमा में ही स्व सम्मेलित। 🙏
यही ही प्रार्थना है मेरी की 🙏 हर जिज्ञासु को श्री गिरिराज गोवर्धन दर्शन 🙏
मूल संस्कृति का यह एक अनोखा सत्य है 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

हम जूठे और रोगी क्यूं हुए 🙏
१. हमने अपने आपकी पवित्रता गंवा दी
2. हमने अपने आपकी शुद्धता ठुकरा दी
3. हमने अपने आपका संस्कार सिंचन छोड़ दिया
4. हमने अपने आपको एक बाजारुं बना दिया
5. हमने अपने आपको निराशात्मक कर दिया
6. हमने अपने आपको अविवाहित कर दिया
7. हमने अपने आपको धर्मविहीन कर दिया
8. हमने अपने आपको कर्म अनिर्णीत कर दिया
9. हम अपने वंश को नपूशंक कर दिया
10. बस हम जी रहे है - जन्म पाया है तो मरते तक
11. कुछ करने की आश नहीं - कुछ होने की प्यास नहीं
नज़र नज़र पर यह - नहीं नहीं
हे मेरे मित्र!
चाहे कैसा समय हो
चाहे कैसी परिस्थिति हो
चाहे कैसा समाधान हो
मनुष्य है तो अवश्य हिंमत है - खुमारी है - विश्वास है 👍
* घड़ी घड़ी हम बदल सकते है मुश्किलें का बवंडर
* कदम कदम पर प्रकाशित कर सकते है धर्म का दीपक
* अंग अंग के मिटा सकते है रोग और जूठनों से खुद का पकाया खानें से
* कंधे से कंधा मिलाकर जलाएंगे धर्म की मशाल जिसकी ज्योत से खांक हो जाएंगी परिस्थितियां - अधर्मता - असत्यता - अज्ञानता 👍
जाग गया हूं - मैं 👍
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

ओओओओ ओओओओ

हे मनमोहना!

तेरे लिए मेरा दिल दीवाना

कैसे जीऊं मैं तुझ बिन अकेला

तु तेरे लोक में मैं मेरे लोक में

एक बार आजा कर दे पूरा एकरार

मैं तेरे साथ तु मेरे साथ

कौन छुड़ाएगा हमारा हाथ

हे मदनगोपाला!

मैं तेरी आशिक तु मेरा आशिक

मैं न जाउंगी तुझसे दूर

तु नहीं जाएंगा मुझसे दूर

एक एक एक हम हम-तुम

यही हमारी प्रेम तक़दीर

एक दूजे में हमारी तस्वीर

हे गोविंदगोवाला!

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण "

पढ़ाई

आज का समय में

१. खेलते पढ़ाना

२. मोबाइल से पढ़ाना

३. टीवी चेनलो से पढ़ाना

४. माता-पिता की टक टक से पढ़ाना

५. ट्यूशन से पढ़ाना

६. फिल्मों से पढ़ाना

तो भी न पढ़ें तो - नसीब उनका 🙏

नहीं नहीं 🙏

माता का अर्थ है शिक्षक

पिता का अर्थ है रक्षक

माता का अर्थ है संस्कार

पिता का अर्थ है सुविचार

माता का अर्थ है तंदुरुस्ती

पिता का अर्थ है संस्कृति

माता का अर्थ है श्वास

पिता का अर्थ है विश्वास

माता का अर्थ है वात्सल्य

पिता का अर्थ है तपस्या

माता का अर्थ है अड़ंग

पिता का अर्थ है निड़र

माता का अर्थ है भक्ति

पिता का अर्थ है शक्ति

हे हमारे वंशज 🙏

यह सत्य सदा याद रखना 👍

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक स्मरणीक सदा श्री प्रभु के स्मरण करता रहता था,
कोई कार्य करें तो श्री प्रभु स्मरण में
कोई विचार करें तो श्री प्रभु स्मरण में
कोई सूचन करें तो श्री प्रभु स्मरण में
कोई शब्द उच्चारें श्री प्रभु स्मरण में
कोई नज़र से देखें श्री प्रभु स्मरण में
कोई कर्ण से सुनें तो श्री प्रभु स्मरण में
कोई डग भरें तो श्री प्रभु स्मरण में
अर्थात - सत्य पवित्र और विशुद्ध सैद्धांतिक रूप से
एक दिन वह श्री श्रीनाथजी हवेली दर्शन करने नाथद्वारा पहुंचे। श्री प्रभु दर्शन की तैयारी थी, द्वारपाल द्वार खुलने की तैयारी में थे। वह स्मरणीक एक कोने में खड़े खड़े श्री प्रभु के स्मरण में लीन थे। इतने में एक गौआं दौड़ते हुए कहीं को भटकाते वह कोने में आ कर गभराई हूई वह स्मरणीक के पास खड़ी हो गई। भागदौड़ में गौआने कहींओ को लपेटा, कहींओ को सर पर लगा, कहीओ को हाथ पर लगा,
कहींओ को पैरों में लगा, सब चिल्ला रहे थे। भागो भागो - बचाओ बचाओ!
वह गौआ वह स्मरणीक के पास जाकर शांति से खड़ी रह गई, स्मरणीक ने उन्हें वंदन किया और उन पर हाथों से पुचकारने लगे। जिसको लगा था उन्हें आसपास के दर्शनार्थी संभाल कर उपचार कर रहे थे।
इतने में टहल पड़ी - संध्या के दर्शन खुल गएं है - सब दर्शनार्थी दौड़े पर वह स्मरणीक वहां ही खड़ा श्री प्रभु स्मरण में लीन हो रहा था।
इतने में वह दर्शनार्थी संभल संभल कर वह भी कोने में खड़े हो गए। जैसे उन्होंने वहां की रज को स्पर्श किया तुरंत उनका दर्द गायब। 🌷🙏🌷
वह दर्शनार्थी अचंभित हो गएं
अरे ऐसा कैसे?
इतने में कहीं दर्शनार्थी दौड़ दौड़ कर श्री प्रभु दर्शन में जा रहे थे और जो दर्शनार्थी आ रहे थे उन्होंने यह सुना तो वहीं सब खड़े रह गए, और वह चौटखाएं दर्शनार्थी के आनंद में सम्मिलित हो गएं। सब आनंद से श्री प्रभु दर्शन में लीन थे, वह स्मरणीक भी श्री प्रभु दर्शन में डूबे हुए अपने स्थान पर पहुंचा।
यहां जो दर्शनार्थी को चौट लगी थी वह फिर से वही कोने में खड़े रहे - क्यूंकि उन्हें कुछ अलग सी ही अनुभूति हो रही थी - वह गौआ भी वही खड़ी थी, उन्हें भी कुछ आनंद सी अनुभूति हो रही थी। थोड़ी ही क्षणों में पूरे नाथद्वारा में चर्चा उठी - यह कोने में खड़े रहने से दर्द मिट जाता है और आनंद की अनुभूति होती है। एक के बाद एक पूरे नाथद्वारा के दर्शनार्थी वह कोने में खड़े रह कर आनंद की अनुभूति पाई।
थोड़ी देर में एक नई चर्चा उठी - श्री प्रभु का चमत्कार - यह कोने में श्री प्रभु का साक्षात्कार हुआ है - गैया भी आनंद से खड़ी है और हर कोई आनंद की अनुभूति करता है।

पूरा गांव उमड़ पड़ा और सब श्री प्रभु के साक्षात्कार का अनुभव करने लगे।
इतने में श्री प्रभु हवेली के श्री मुख्याजी पधारे और उन्होंने कहा - अभी जब मैं श्री प्रभु को पौढ़ा रहा था तब श्री प्रभु के चरणों में बहुत सी रज चिपकी थी वह मैंने अपने हाथों से साफ किया तो मैं अचंभित रह गया, यह कैसे?
श्री मुख्याजी के वाक्य सुन कर सब सोचने लगे - यह कोने में कौन थे!
जो गैया भी उनके पास आकर स्थिर हो गई और जो भी दर्शनार्थी को चौट लगी थी वह भी बिना उपचार स्वस्थ हो गए! 🙏
सब के स्वर पर यही ही गूंज 🌷
श्री मुख्याजी ने कहा यहां कौन कौन खड़े थे उन्हें पूछे की आप पहचानते हो की यहां कौन थे जो आपको स्वस्थ कर दिया।
सब वही दर्शनार्थी को पूछने लगे - तो उत्तर पाया।
एक कोई व्यक्ति यहां खड़े थे , उनकी नज़र द्वार पर अपलक टीकी थी और मुखसे केवल एक ही स्मरण उठ रहा था - " श्री कृष्ण: शरणं मम " - " श्री कृष्ण: शरणं मम "! हम भी यह गूंज में हमारा स्वर " श्री कृष्ण: शरणं मम " एकाकार करते रहते थे। जैसे द्रढता से - विश्वास से स्मरण उच्चारते थे हमारी चोटें स्वस्थ हो रही थी और एक आनंद सी सुर्खी हमारी आसपास दौड़ रही थी। बार बार हमारी नज़र वह व्यक्ति की ओर खींच रही थी। हम बिलकुल स्वस्थ हो गए तब ही वह व्यक्ति चल कर द्वार से गर्भगृह में प्रवेश कर गया।
सब लोग बार बार गर्भगृह की ओर देखने लगे और वह स्मरणीक को मनोमन प्रणाम करने लगे। श्री प्रभु को प्रार्थना करने लगे - हे प्रभु! आप कितने दयालु हो की आप हमारे लिए इतना कष्ट उठा रहे हो 🙏
श्री मुख्याजी ने कहा - जो आत्मीय सदा विचार सहित - कार्य सहित - नयन, तन, मन, धन और जीवन अविस्मरणीय श्री प्रभु संस्मरण में रहे तो वह " वैष्णव " सदा जगत कल्याण हित है। ऐसा वैष्णव हमारे द्वार पधारा 🙏 उन्हें नमन करके हम कृतार्थ हुए। श्री प्रभु की असीम कृपा हमारा पर बनी रहे और हम भी वह " वैष्णव "' की तरह आत्मीय हो कर हमारा जीवन पुष्टि भक्ति में कृपार्थी में परिवर्तन हो ऐसी श्री प्रभु को विनंती 🙏
इतने में गूंज उठी - " श्री नाथजी बावा की जय " " श्री वल्लभाधिश की जय " " श्री श्याम सुंदर सी श्री यमुने महाराणी की जय " " गिरिराज धरण की जय " 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

संसार का कोई भी व्यवसाय श्री प्रभु का साक्षात्कार करवाता है 🌷🙏🌷

जैसे - चिकित्सक (डॉक्टर)

कोई भी रोग का निवारण निस्वार्थ से करुणा भरा करे तो अवश्य वह हर दरदी के आंखों में श्री प्रभु का दर्शन कर सकता है 🙏

जैसे - राजकीय नेता (जन कल्याण सेवक)

सामाजिक कोई भी कार्य निस्वार्थ सेवा भाव से करे तो समाज का योग्य उत्थान हो, समाज व्यवस्था उत्तम होने से हर सेवा में उन्हें श्री प्रभु का दर्शन कर सकता है 🌷🙏🌷

जैसे - न्यायाधीश

हर व्यक्ति को नियमन से शिक्षित करके कोई भी गेरसमज असंमजस अन्याय को शिस्त बद्ध न्यायिक और निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक बनाए तो नज़र नज़र पर श्री प्रभु दर्शन कर सकता है 🌷🙏🌷

जैसे - शिक्षक

विद्या विनय से सुशोभित होती है 🙏

हर व्यक्ति को योग्य शिक्षा प्रदान करे तो सटीक और सही ही सिद्धांत से वह प्रमाणित हो और वही सिद्धांत से कुशलता प्राप्त हो तो संसार का हर पदार्थ सुरक्षित और विश्वसनीय हो तो हर तरफ संशोधन और समांतरता हो। हर व्यक्ति हर विचार व्यवहार में श्री प्रभु का साक्षात्कार करता हो 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

गहराई से टटोलो की

१. हम अपने माता-पिता को जब भी मिलते है तो हम भावनात्मक हो जाते है - क्यूं?

२. हम हमारे इष्ट श्री प्रभुकी सेवा, यज्ञ, उत्सव, मनोरथ करते है तो हम भावनात्मक हो जाते है - क्यूं?

३. हम हमारे कुटुंबी जनोंको कहीं दूरी समय से निहालते है और मिलते है - तो हम भावनात्मक हो जाते है - क्यूं?

४. हम कभी कोई उपलब्धि हासिल करते है उस समय हम भावनात्मक हो जाते है - क्यूं?

५. हम कभी अपने प्रिय स्थली पर बिराजते श्री प्रभु का दर्शन और सत्संग करते है तो हम भावनात्मक हो जाते है - क्यूं?

हां! हमने बार-बार अनुभव पाया और बार-बार एकात्म हुए है कहीं ओ के साथ जो भावनात्मक होते है तो खुद भी भावना शील हो जाते है - ऐसा क्यूं?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

यह ऐसी कैसी असर और स्थिति हो जाती है कि हमारे नैनों में आंसू निकलते रहते है - बस निकलते रहते है - चाहे रोके खुद या रोके ज़माना - वह भावनात्मक से निकलते ही रहते है 🙏

" स्वतंत्रता " स्व तंत्र को सुनीति, सुनिश्चित, सुरक्षित, सुशिक्षित, सुशीलित उसे स्वतंत्र कहते है 👍

१. हर एक में विश्वास संपादित हो

२. हर एक कार्य में निष्ठा हो

३. हर एक नियम सुरक्षित हो

४. हर एक वचन सैद्धांतिक हो

५. हर एक व्यवहार विवेक से हो

६. हर एक जीवन संस्कारमय हो

७. हर एक व्यवस्था विकासशील हो

८. हर एक विचार वैज्ञानिक हो

९. हर एक देशवासी देशभक्त हो

१०. हर समय उमंग भरा हो

११. हर प्रकृति शुद्ध हो

१२. हर सृष्टि संयमित हो

१३. हर द्रष्टि सम्मानित हो

१४. हर कर्म प्रमाणिक हो

१५. हर जीव विद्यावान हो

१६. हर शासन प्रेमपूर्ण हो

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

विश्वास है हमें की हम सच्चे देशवासी हम हमारे देश को संपूर्ण बनाएं 👍

🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" मीरा गोविंद गोपाल गाने लगी " 🙏
अरे! यह क्या?
मीरा! गोविंद गोपाल गाने लगी 🙏
हां!
कभी हमने गोविंद गोपाल गाया है?
हां! हां! हर रोज़ सेवा - सत्संग - भजन में
सच! हां बिलकुल सच
तो तो फिर आप ने सांसारिक दृष्टि छोड़ दी?
आप अपने कुटुंब को भूल गए?
- आप अपना व्यवहार भूल गए?
- आप अपना जीवन भूल गए?
- आप अपने आपको भूल गए?
अरे ऐसा कैसे कह सकते हो?
आपने तो कहा
मैं भी गोविंद गोपाल गाता हूं।
अरे भाई! मीरा गोविंद गोपाल गाने लगी 🙏
मैं तो केवल यह कड़ी जो भजन की है वह गा रहा हूं।
" मीरा गोविंद गोपाल गाने लगी " बस मैं भी यह कह रहा हूं, मैं नहीं गोविंद गोपाल गाने लगा।
ओहहहह! यह तो सारा जगत गाता है 🙏
हमें तो कुटुंब में जीना है
हमें तो व्यवहार में रहना है
हमें तो जगत के साथ जीना है
हमें तो हम और हमारा जीवन - इसमें रहना है 🙏
" मीरा गोविंद गोपाल गाने लगी " 🙏
मेरी थैली मैं भरुं - तेरी थैली तु भर
कोई भी खाली न हो
इसलिए हर कोई अपनी अपनी रीति से भरें 🙏
आप सभी को हमारा प्रणाम 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" मीरा गोविंद गोपाल गाने लगी "
हमारा आज के जीवन का अनोखा पात्र
जिसने स्व को इतना अलौकिक बनाया
की वह विराट हो गई
खुद चल मेरे साथ या खुद में मुझे समा ले
सामग्री सामने धरी जो ज़हर था
जो खुद ने प्रसाद पीया तो अमृत हो गया
सच! यही हे भक्ति का रंग
जो खुद को श्री कृष्ण कर दिया 🙏
एक मूरत! जो आज भी हम दर्शन करते है
जो एक काष्ठ काया शिल्प
जो एक आत्मा को परमात्मा में विलीन कर दे
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
कमाल की नजर विचार क्रिया है मीरा की
गोविंद गोपाल गिरिधर गाते गाते
वह मूरत में समा गई 🌷🙏🌷
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
एक चरित्र जिन्होंने हमें जीवन की सच्चाई
एक चरित्र जिन्होंने हमें जीवन की योग्यता
ऐसी समझाई की पैसा - मिलकत - हीरा झवेरात - वंश वेला कुछ नहीं है हमारा
हमारा तो केवल है तो सत्कर्म - सत्संग - समर्पण
जैसे श्री कृष्ण ने किया - जैसे श्री राम ने किया
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
वो गली गली - सत्य भक्ति की ज्योति जलाने लगी
ऐसी लागी लगन मीरा हो गई मगन
गोविंद गोपाल गाने लगी 🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कैसी नज़र मेरी मैं किसी का कुछ ले लूं
कैसे विचार मेरे की मैं किसी का ले लूं
कैसे बोल मेरे की मैं किसी का ले लूं
कैसे व्यवहार मेरे की मैं किसी का ले लूं
कैसे कार्य मेरे की मैं किसी का ले लूं
कैसी नीति मेरी की मैं किसी का ले लूं
कैसी रीति मेरी की मैं किसी का ले लूं
कैसा जीवन मेरा की मैंने किसी का ले कर जीया
कैसा धर्म मेरा की मैंने किसी का ले कर जीया
सेवा के नाम पर लूं
अर्थोपार्जन के नाम से लूं
हक्क के नाम पर लूं
वारिसदार के नाम पर लूं
व्यवसाय के नाम पर लूं
नहीं नहीं 🙏 मैं क्यूं लूं!
मैं मेरी महेनत से लूं
मैं मेरी कुशलता से लूं
मैं मेरा संशोधन से लूं
मैं मेरी कार्यदक्षता से लूं
मैं मेरी कार्यक्षमता से लूं
हां! तब ही तो मैं मनुष्य हूं
हां! तब ही तो मैं धर्मी हूं
हां! तब ही तो मैं कर्मी हूं
हां! तब ही तो मैं स्वावलंबी हूं
हां! तब ही तो मैं सत्य हूं
हां! तब ही तो मैं अंश हूं
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

"मीरा गोविंद गोपाल गाने लगी "
एक मूरत क्या देखी
-मीरा गोविंद गोपाल गाने लगी 🌷
-मीरा नाचने लगी 🌷
-मीरा गाने लगी 🌷
-पल पल हरि गुन गाने लगी 🌷
एक साधु घर आया - एक रात्रि सत्संग किया वह मूरत के सामने
मीरा को खिंच लिया 🙏
हम सेवा पधराएं - एक साधु की ओर से
हम कहते है - आज्ञा लेकर हमने पधराई सेवा
हम कहते है - हमारी सेवा का यह प्रकार है - जो साधुने कहा
सालों से साल बदल गए - हम हर शमा के प्रकार की सेवा करने लगे
हम हर प्रकार के भोग धरने लगे
हम हर प्रकार के शृंगार सजा ने लगे
हम हर प्रकार के वात्सल्य भाव जगाने लगे
हम हर प्रकार का प्रेम करने लगे
तो क्या क्या हुआ! शायद
१. अमीर हुए
२. मनोकामना सफल हुई
३. मन वांछित फल पाया
४. कहीं परिस्थितियों से पार पड़े
५. जो चाहा वह मिला
इसलिए हम द्रढ होने लगे - विश्वास करने लगे - श्रद्धा बढ़ने लगी 🙏
हां! यही ही हमने माना - यही ही चमत्कार समझा - यही ही कृपा पाई 🙏
यही ही गुरु का आशीर्वाद माना 🙏
यही ही धर्म कर्म और परम 🙏
पूरा जीवन मान्यता में 🌷
जगत जीवन यही चक्र में 🌷
वंश परंपरा यही धरण में 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
बस! लिपटते - निपटते और पलटते जीए और जीने दे 🙏
सत्य सनातन सिद्धांत भाव प्रेम लीला न जाना - न माना - न समझा - न स्वीकारा 🙏
बस गर्व गुजारते गुजरते रहे 🙏
पाठ पठते गए - सेवा करते रहे - मनोरथ मनाते रहे 🌷🙏🌷
"मुखसे गोविंद कहे - मन से अंधेरे में डूबते गए 🙏
हम जगत में जीते गए 🌷🙏🌷
यही ही हमारी जीवन धारा - जिसका पैसा ही सहारा 🙏
स्व चिंतन की नम्र विनंती 🙏
" Vibrant Pushti "
"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷
क्रमशः

" रक्षा बंधन "
बहन भैया की रक्षा हेतु रक्षा बांधे
पत्नी अपने पति की रक्षा हेतु रक्षा बांधे
" रक्षा - बंधन " रक्षा हेतु रक्षा बंधन 🙏
हमारी संस्कृति का बिलकुल सटीक सीमा चिन्ह 👍
बिलकुल समझ कर कहता हूं 👍
अगर हर भाई - बहन को बहन माने
अगर हर पति - स्व पत्नी को पत्नी माने
अगर किसीकी बहन न हो - भैया न हो
तो भी बहन की द्रष्टि भैया का खुमार रखें
तो भी भैया की द्रष्टि और बहन का वात्सल्य रखें
तो यह सूत - यह सूत्र सटीक है 🙏
हर कोई की बहन की रक्षा अपने आप हो जाएगी 👍
हर कोई की पत्नी की रक्षा अपने आप हो जाएगी 👍
हर पुत्र का रक्षण अपने आप हो जाएगा 👍
हर पति का रक्षण अपने आप हो जाएगा 👍
यही तो संस्कार संस्कृति और धर्म है।
हर संसार युद्ध में हर भाई - हर पति को हर बहन और हर पत्नी रक्षा बांध कर रक्षण के लिए प्रार्थना करती ही है 🙏
वैसे हर भैया - हर पति यही रक्षा को साक्षी में रखकर वह भी वचनबद्ध रहता है की मैं भी अपनी बहन - पत्नी की रक्षा करुंगा 🙏
यही ही हमारी पहचान है 🙏
यही ही हमारा सत्य है 🙏
यह धारा सदा सत्यार्थी हो जाय यही हमारी कर्मनिष्ठा है 🙏
कौन कहे नरक! - कौन कहे कलयुग! - कौन कहे गरीब! - कौन कहे नसीब!
स्वर्ग यही - धर्म यही - आनंद यही - प्रेम यही
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" राधे राधे "

कोई जिज्ञासु ने प्रश्न किया

व्रज में जहां जाते है

हर कोई के मुख से " राधे राधे " की क्यूं गूंज करते है?

पूरी व्रज लीला " श्री कृष्ण " की है तो " कृष्ण कृष्ण " क्यूं नहीं कहते?

जो भी आचार्य का पार्दुभाव हुआ, वह " कृष्ण कृष्ण " ही करते थे 🙏

गोपीयां " कृष्ण कृष्ण " करती थी 🙏

अष्टसखा " कृष्ण कृष्ण " करते थे 🙏

तो यह " राधे राधे " कैसे कहने लगे?

यह बात सारे ब्रह्मांड में फैल गई - हर देव देवी गण - हर ब्रह्मर्षि महर्षि, संत भक्त सब " कृष्ण कृष्ण " ही करते थे, वह भी अचंभित हो गए - हां! हर कोई " राधे राधे " की ही गूंज करते है। 🙏

किसीने लिखा है - वृंदावन की रज बोले - " श्री कृष्ण: शरणं मम " 🙏

हां! तो " राधे राधे " की ही गूंज क्यूं?

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

संसार की परिक्षा

इश्वर की प्रतीक्षा

अपनी स्व की समीक्षा

यह तीन गुण जिसके पास है

वह जगत में आनंद ही आनंद पाता है 🙏

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कहीं समय से अध्ययन कर रहा था कि

हमारा देश 🙏 हमारी संस्कृति 🙏 हमारी विरासत 🙏 हमारा धर्म 🙏 हमारी जीवनशैली 🙏 हमारे संस्कार जो आध्यात्मिक प्रखंड आचार्य गणों ने जो मूलत: संस्थापित किया था वह अनुभूति क्यूं नहीं हो रही है?

क्यूंकि वह हमारे गौत्र है 🌷🙏🌷

गौत्र का वंश अंश अवश्य अपने मूलत्व डी एन ए में उपलब्ध होना ही चाहिए 🙏

अगर वह ही नि:र्मूल हो गया है तो हम क्या है? 🙏 चिंतन की आवश्यकता अधिक और गहरी है 🌷

तो अवश्य

सैद्धांतिक धरातल पर भारत स्वतंत्र देश नहीं है 🌷🙏🌷

परतंत्रा के दिनों में हमारे प्रशस्त सनातन सर्व मानबिन्दुओं का पद जितना क्षय हो रहा था उससे अधिक क्षय स्वतंत्र भारत में प्रशस्त मानबिन्दुओं का हो रहा है। 🌷🙏🌷

इसलिए राजनेताओं को राजनैतिक दलों को और उनके चुनने का जिनको दायित्व है उनको विचार करना चाहिए कि भारत सचमुच में क्या सैद्धांतिक धरातल पर स्वतंत्र देश है? 🙏

शिक्षा पद्धति हमारी अपनी नहीं है 🙏

रक्षा की प्रणाली हमारी अपनी नहीं है 🙏

कृषि, गौरक्ष, वाणिज्य के प्रकल्प हमारे अपने नहीं है 🙏

सेवा उधोग के प्रकल्प हमारे अपने नहीं है 🙏

यहां तक के संविधान की आधारशिला हमारी अपनी नहीं है 🙏

अब धीरे धीरे भोजन, वस्त्र, आवास, विवाह इत्यादि के प्रकल्प भी हमारे विकास के नाम पर विलुप्त किये जा रहे है 🌷🙏🌷

अति विनम्रता से कह रहा हूं 🌷🙏🌷

हमारे संस्कार, हमारी शिक्षा, हमारी रक्षा, हमारी धरोहर, हमारी धर्मिष्ठा हमें ही स्व से ही जागृत करनी ही है। यही तो सच्चे देशवासी की पहचान है। 🌷🙏🌷

आज इजरायल अमेरिका उपर बताएं सैद्धांतिक धरातल पर ही अपनी शिक्षा, रक्षा, जीवनशैली और संविधान नीति बद्ध सामाजिक न्यायिक निर्णयोंसे करता है इसलिए उनका सार्वभौमत्व स्थिर है 🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

चलते चलते मैं अपनी ओफिस के रास्ते पर जा रहा था वहां रास्ते के एक कोने में एक हरा भरा बरगद का पौधा नज़र आया। मैंने आसपास ऐसे ही नज़र दौड़ाई की किसीने यह पौधा लगाया है या अपने आप उगा है? पर ऐसा ही लगा कि अपने आप उगा है। मैं अपने काम पर लग गया पर हर रोज का एक रिश्ता बन गया कि बरगद का पौधा पर नज़र पहुंचाने की। 🌷

कहीं दिन कटे यह सिलसिला जारी रहा पर जैसे जैसे दिन गुजरते जाते थे वह पौधा बड़ा होता जा रहा था, मैं भी अपनी उम्र काट रहा था। 🙏

एक सुबह जैसे मैं ओफिस पहुंच रहा था तो देखा बरगद का पौधा बड़ा पेड़ में रुपान्तर हो गया और कितने पंखी की कोलाहल से गूंज रहा था। मेरी नज़र इतनी ऊंची और चौड़ी करनी पड़ी तब उनकी विशालता मेरी नज़र में समाई और एक विचार की जागृतता के साथ मैं अपनी ओफिस में पहुंचा। वह विचार था - मैं अकेला कितने ही समय से अपना कार्य करता हूं और अपना सुख भरा जीवन बिता रहा हूं, पर न कोई मेरे साथ है - न कोई मेरी पनाह में - निगरानी में मेरे काम से जुड़ा है, बस अकेला अकेला अकेला और यह बरगद अकेला ही उगा था अपनी कार्य शक्ति से स्व संचार करता बड़ा होता गया और आज उनके आंगन में कितने पंखी, कितने विश्रामु, कितने श्रमिक और रेंकडी वालें बैठे है।

मैं अकेला - कहीं सालों से अकेला 🙏

ऐसा क्यूं?

वहां आवाज़ आई - क्यूंकि तु हर घड़ी केवल स्व ख्यालों और ख्वाहिशें में जीता है, तु अपनी खुशी की खातिर किसी का कुछ भी कर सकता है।

पर यह पेड़ सूर्य को साथ देता है, धरती को साथ देता है, जल को साथ देता है, वायु को साथ देता है और आकाश को साथ देता है - अपने आपको यह सृष्टि को समर्पित करता है 🙏 और तु केवल सबका लेता ही रहता है - लेता ही रहता है - वह अपने आपको बांटता है और तु अपने आप के लिए हर तरह से सबको स्वार्थ से संबंध रखता है 🌷

तो तु अकेला ही रहेगा 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷 सोचें - अवश्य सोचें 🌷🙏🌷

समृद्ध होने कुछ सोचें 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

एक बार एक मित्र ने पूछा

मित्र! हम अग्नि देव को पूजते है इनका मुख्य उद्देश्य क्या?

अग्नि देव का पूजन इसलिए है कि

१. हम बाहर का अन्न नहीं आरोगें

२. हम अन्याश्रय नहीं करें

३. हम अपवित्र न हो

४. हम तन मन धन और जीवन से शुद्ध हो

५. हमारा लहूं सात्विक हो

६. हम पुष्टिमार्ग के अंश हम हमारा दासत्व की रक्षा करें

७. हम अपरस अर्थात अनन्य जीव की शिक्षा और कक्षा पा ने और समर्पित जीव होने का वचन निभाना है

८. हम जगत के प्रेम, विश्वास, संस्कार और सत्य का प्रतीक होने के लिए ब्रहम संबंध से एकात्म पाएं अर्थात - 'वैष्णव '

यही ही मेरा जीवन - यही ही मेरे नैन 🙏

समय काल घड़ी की हर गति में हमें हमारे अंदर ऐसा 'अग्नि 'प्रज्वलित करना होता है जो हमारे हर दोषों को भस्म कर दे - हमारे अंदर विशुद्ध सैद्धांतिक पवित्र उर्जा भर दे - जिससे जब भी हम यह संसार का त्याग करे तो उर्जावान जीव हो 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

"जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

बांके बिहारी की अखियां बड़ी बड़ी

बसे उनमें सारी प्रीत डगरिया

एक डगरी श्री राधा प्यारी

जो सदा रहे उनकी प्यासी

बांके बिहारी की अखियां बड़ी बड़ी

बसे उनमें सारी प्रीत नजरिया

एक नजर श्री प्रेम सखियां

जो सदा रहे उनकी दासी

बांके बिहारी की अखियां बड़ी बड़ी

बसे उनमें सारी अटखेलियां

एक अटखेली विरह लीला

जो सदा रहे उनकी आवासी

बांके बिहारी की अखियां बड़ी बड़ी

बसे उनमें सारे सखाएं

एक सखा श्याम सलोना

जो सदा रहे उनका शरणों उपासी

बांके बिहारी की अखियां बड़ी बात

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कान्हा कान्हा!
हे कान्हा तुने मुझे भेज दिया संसार
न मैं जानूं न मैं समझूं तेरी लीला अपरंपार
कान्हा कान्हा!
तुने मुझे भेज दिया संसार 🙏

एक एक डगर भटकूं
एक एक मंदिर झूकूं
कहीं नहीं मिला तेरा संस्कार
तुने मुझे भेज दिया संसार 🙏
कान्हा कान्हा!
तुने मुझे भेज दिया संसार

कलयुग सतयुग कैसे जानूं
मतवालों में झझुमती जाऊं
भटक गया अटपटा धर्म द्वार
तुने मुझे भेज दिया संसार 🙏
कान्हा कान्हा !
तुने मुझे भेज दिया संसार

अब तो आजा लिए अवतार
सुन ले भक्तों की पुकार
मिटा दे हर एक अंधकार
तु मिल जा एक बार 🙏
कान्हा कान्हा!
तुने निभाया प्रेम रंग अपार
कान्हा कान्हा!
मैं आ पहुंचा तेरे द्वार 🙏
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण "

" हमारा धर्म हमारा कर्म "

कहते है हम आज आनंद उमंग से

" नंद घर आनंद भयो जय कन्हैया लाल की "

हमारा धर्म है कि हमें निभाते निभाते कर्म से नंद बने तो आनंद उमंग से कन्हैया अपने तन मन धन और जीवन में बसे 🌷

हमारे ही पुत्र - हमारी ही पुत्री कन्हैया स्वरुप हो

हमारा ही आंगन यशोदा का घर बने

हमारा ही गांव नंदगांव बने

हमारा ही विस्तार व्रज बने

हमारा ही धारा यमुना बने

हमारा ही रक्षक गोवर्धन बने

" नंद घर आनंद भयो जय कन्हैया लाल की

सुख वैभव अंग अंग भयो जन्म जीवन उमंग रह्यो "

" कृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव " की सबको बधाई 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

कान्हा!

मैं तेरे द्वारे आ न सकूं तु मेरे द्वारे आ न सके

कैसी है हमारी प्रीत!

आंखोंसे ओझल तु मेरी रीति से है मजबूर

बंध गई संसार से मैं कैसे करुं तुझसे प्रीत

संसार के नियमों ऐसे मुझसे रहे तु दूर

मेरे द्वारे तु आ न सके मैं तेरे द्वारे आ न सकूं

जनम जनम की जन्माष्टमी से तु बार बार प्रीत जगाएं

याद करुं मैं घड़ी घड़ी तेरा उत्सव मनाऊं

फ़ूल महकी मालाएं शृंगार भरे वस्त्र पहनाऊं

तु आया वचन निभाया मन ऐसे मनाऊं

मेरे द्वारे आ न सके तु मैं तेरे द्वारे आ न सकूं

कान्हा रे! कान्हा रे! कान्हा रे! कान्हा रे!

आजा! 🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "

" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷 नंद के आनंद की जय 👍

🌷🙏🌷 माता यशोदा के आनंद की जय 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷 गोकुल वासियों के आनंद की जय 🌷🙏🌷

🌷🙏🌷 गोप - गोपीयों के आनंद की जय 🌷🙏🌷

हमारे घर नंद महोत्सव की जय 🌷🙏🌷

" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

" बारिश " जल बिंदुओं की बरसात
जल है तो जीवन है
अधिक जल असफलता है
हम कुदरती प्रकोप माने
हम कलयुग का दोष माने
हम भगवान का कहर माने
हम कोई देवता का शाप माने
हम हमारा कर्म फल माने
हम संजोग माने
हमारी मान्यता में जो आएं वह माने
पर
सच कहे - 🙏
हम हमारी मानसिकता समझे
हम हमारी अभणता समझे
हम हमारी बिन आवडत समझे
हम हमारी अणघडता समझे
हम हमारी अज्ञानता समझे
हम हमारी अधिक होशियारी समझे
हम हमारी निष्फलता समझे
हम हमारी कायरता समझे
हम हमारी कार्यदक्षता समझे
हम हमारी अविद्‌वता समझे
हम हमारी लाचारी समझे
हम हमारी अयोग्यता समझे
हम हमारी गरीबाई समझे

सच! हम कैसे? हमने जो नेता बनाएं वह कैसे?
हम ही खुद निम्न तो हमारे कार्यकर्ता निम्न
हम ही खुद मौन तो हमारे नेता भी मौन
स्व खुद को लुटाएं स्व बुद्‌धिमत्ता से मूर्ख
स्व खुद नागरिक से धूर्त तो देशवासी से क्यूं नहीं धूर्त?
गर्व करो बुलंद निस्पृहता से
बार बार कहो हमसे ही मुन्किन है 🌷🙏🌷
जो स्वदेश के खाड़े सुधार न सके वह दूसरे का खाड़ा कैसे सुधारें?
🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷🙏🌷
हम यही हिन्दुस्तानी 👍
" Vibrant Pushti "
" जय श्री कृष्ण " 🌷🙏🌷

सकारात्मक पुष्टि स्पंदन - पुष्टि सृष्टि

सेवा सत्संग स्पर्श धारा

प्रकाशक: Vibrant Pushti - Vadodara

Vibrant Pushti

53, सुभाष पार्क सोसायटी

संगम चार रास्ता

हरणी रोड - वडोदरा - 390006

गुजरात - India

Email: vibrantpushti@gmail.com

Mobile: +91 9327297507